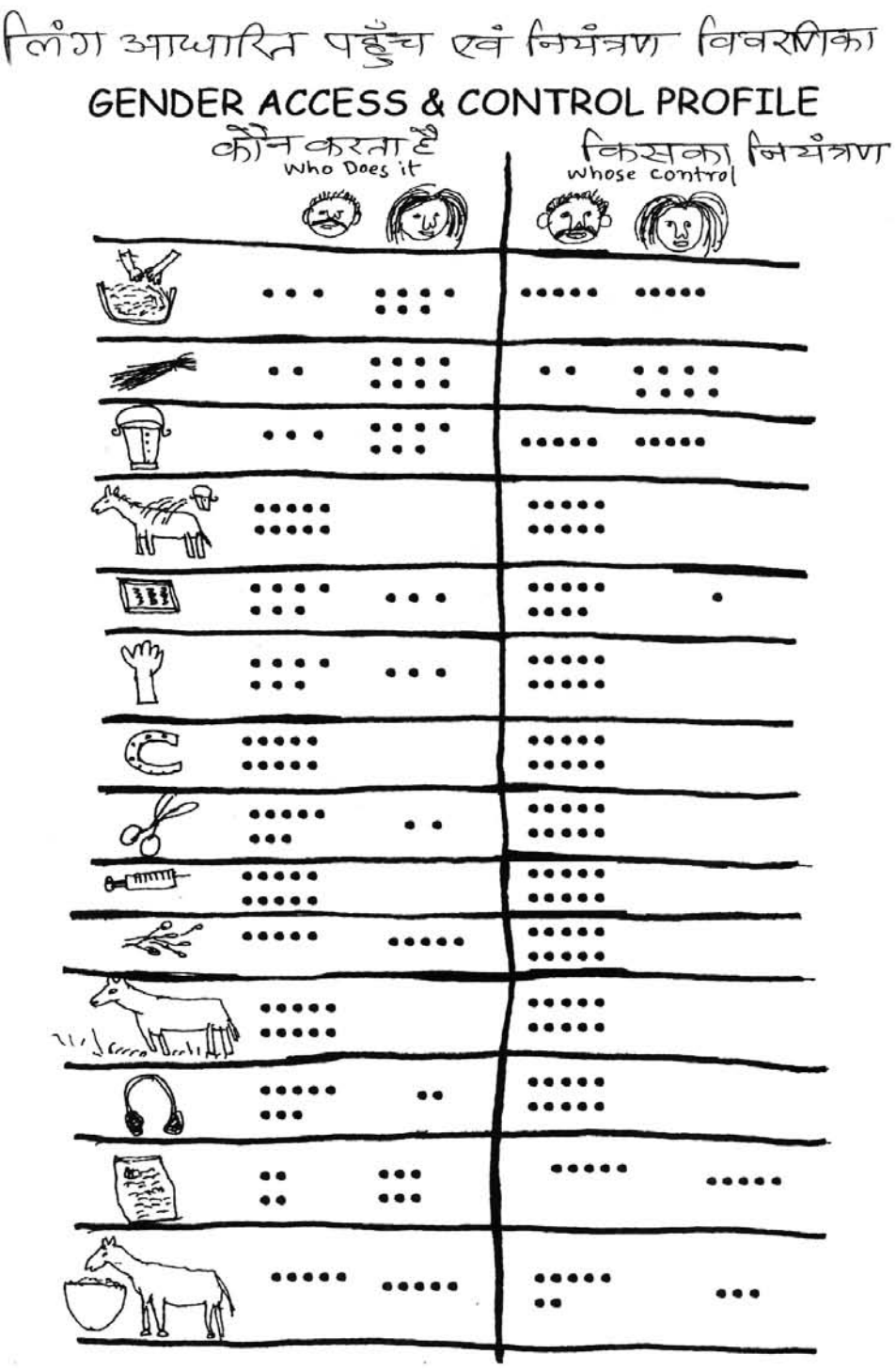

चित्र –टी10, सहारनपुर उ0प्र0 के एक गांव में लिंग आधारित पहुँच एवं नियंत्रण, विवरणिका, भारत (2007)

यह उदाहरण (चित्र संख्या –10) लिंगवार पहुंच व नियंत्रण विवरणिका के साथ–साथ इसमें पशु सम्बन्धी सेवाओं और साधनों तथा प्रबंधकीय गतिविधियों जैसे –मिश्रित दाना, पशु की सफाई भी शामिल है। यह विवरणिका पशु को रखने वाले व्यक्तियों के समूह द्वारा विकसित की गयी परिस्थिति विश्लेषण का हिस्सा है। (अध्याय–4, अवस्था–2) यह चार्ट से स्पष्ट है कि महिलाओं की ज्यादातर सेवा एवं संसाधनों (14 में से 10 तक) तक पहुंच है। परन्तु नियंत्रण बहुत कम है। पुरूषों द्वारा कई प्रबन्धकीय गतिविधियों जैसे–पशु को नहलाना, नालबन्दी, करवाना, उपचार करवाना तथा पशु को चराना किया जाता है। इस समूह द्वारा इन गतिविधियों के पीछे कारणों, पहुँच और नियंत्रण की इस स्थिति से पशु के कल्याण कर पड़ने वाले प्रभाव पर चर्चा की गयी।

टी–11 रुझान विश्लेषण

क्या है–

रुझान विश्लेषण टूल समुदाय को लम्बे समय से आये परिवर्तनों की प्रवृत्ति के विश्लेषण में सहायक है। यह विश्लेषण मूल काल से वर्तमान काल तक हुए परिवर्तनों एवं उसके पीछे के कारणों तथा वर्तमान स्थिति को और स्पष्ट रूप से समझने में समुदाय और हमें समझाने में मदद करता है।

उद्देश्य –

रुझान विश्लेषण का प्रयोग लोगों की तथा उनके कार्य करने वाले पशुओं की जिन्दगी के विभिन्न स्तरों के विश्लेषण में प्रयोग कर सकते हैं। (चित्र टी–11अ) के उदाहरण में पशुओं की संख्या, चारा खिलाने के तरीके, बीमारियों का चक्र, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, चारागाह की उपलब्धता में एक समयान्तराल में परिवर्तन दर्शाता है। यह टूल एक निश्चित समय मे पशुओं की संख्या में आए परिवर्तनों एवं बीमारियों की गम्भीरता के परिवर्तनों को भी प्रदर्शित कर सकता है। यह अभ्यास प्रारम्भ के समय कार्य करने वाले पशुओं के कल्याण को प्रभावित करने वाले कारणों एवं उनके निस्तारण की खोज हेतु अच्छा है। यह अन्तर ही पूर्व एवं पश्चात विश्लेषण (प्री–पोस्ट) है। समुदाय के साथ यह अभ्यास बार बार पशुओं के देख रेख को एवं एक्शन प्लान को लागू करने के बाद पशु कल्याण में आये सुधार को विश्लेषित करने हेतु किया गया है। ग्रामीण समुदायों ने कई मुददों जैसे पशुओं का दाना चारा, स्वास्थ्य सेवा विधि, साज की मरम्मत, एक दिन में पानी पिलाने की संख्या तथा अन्य कई विश्लेषण हेतु इस टूल का प्रयोग किया है। पूर्व एवं पश्चात् विश्लेषण का प्रयोग अक्सर सामूहिक प्रयास के चरण के दौरान एवं आंकलन हेतु किया गया हैं (अध्याय–4 अवस्था–6)

इसे कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	समूह से कार्य करने वाले पशुओं की देख–रेख से सम्बन्धी वर्तमान परिस्थिति के बारे में पूछें तथा पता करें कि किस प्रकार समय के साथ बदलाव हुए। तब समुदाय से बदली हुई बातों को सूचीबद्ध करवायें और जिन बातों को वो महत्वपूर्ण समझते हैं को चुनें।
द्वितीय चरण	लोगों के साथ विश्लेषण हेतु मापक समय निश्चित करें। यह आपके पशु कल्याण कार्यक्रम को उनके साथ क्रियान्यन से पूर्व एवं क्रियान्वयन के पश्चात हो सकता है। अथवा ये उनकी अन्य महत्वूपर्ण गतिविधि घटना या वर्ष पर आधारित हो सकता है। हमारे कुछ समुदायों ने पीढ़ी आधारित जैसे–पितामह के समय, पिता के समय और हमारे समय के पशु प्रबन्धन गतिविधियों का विश्लेषण किया है। (देखें चित्र टी–11बी)
तृतीय चरण	प्रतिभागियों को भूमि पर एक आयत बनाने को कहें तथा उस पर मापक समय को क्षैतिजिक रेखा पर दिखायें। विश्लेषण हेतु चुनी बातों को उर्ध्वाधर रेखा पर चित्र, अथवा, प्रतीकों के रूप में प्रदर्शित करें पूर्व–पश्चात् विश्लेषण करने के पश्चात् उर्ध्वाधर रेखा पर निश्चित किये गये समय मापक के अनुसार विश्लेषण करने में आसानी होती है।
चतुर्थ चरण	जब आयत पूरा हो जाये और प्रतिभागी सन्तुष्ट हों तब निष्कर्षों एवं परिवर्तन प्रवृति पर सबसे चर्चा करें। उनसे पूछे की जो परिवर्तन हुए वे लाभदायक हैं अथवा हानिकारक। तत्पश्चात् लाभदायक परिवर्तनों को बनाये रखने एवं हानिकारक परिवर्तनों को कम करने की संभावना को प्रदर्शित करायें।

सुगमकर्ता हेतु सुझाव

- सदैव लोगों को परिवर्तन की प्रवृत्ति को गहराई से विश्लेषण करने हेतु प्रेरित करें। सभी को अपने अनुभव याद करने एवं प्रस्तुत करने हेतु पर्याप्त समय दें। इस परिवर्तन के बारे में स्पष्ट कर दें और समय के साथ हुए परिवर्तनों के बारे में लोगों की राय को समझें। लोगों से उनकी इच्छानुसार परिवर्तन किस प्रकार लाये जा सकते हैं, पर बात करें।

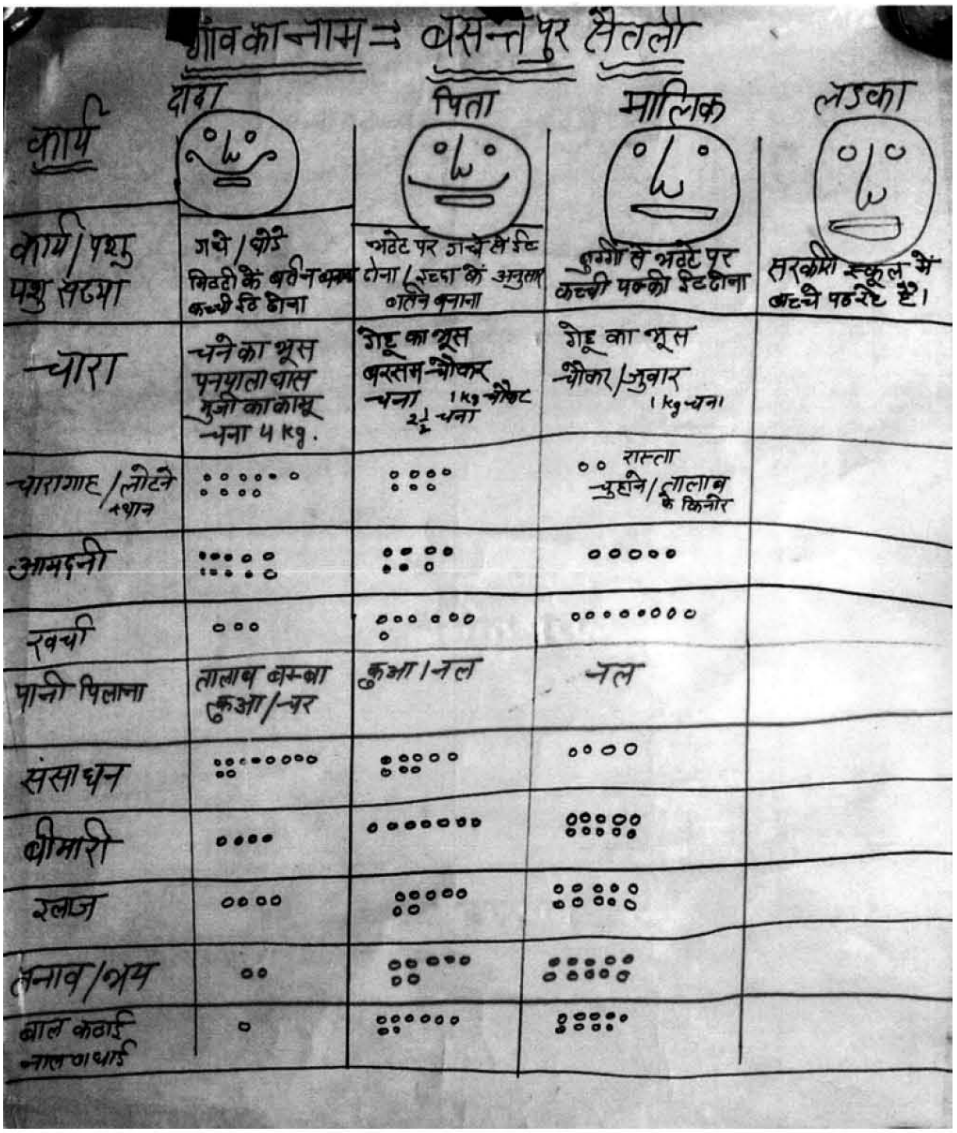

चित्र टी 11अ मिट्टी के बर्तन बनाने वाले समूह के चार पीढियों में रुझान विश्लेषण

यह आयत (चित्र टी–11अ) भारत के उ0प्र0 राज्य के बसन्तपुर सैन्थली गांव के बर्तन बनाने वाले समूह में किये गये रुझान विश्लेषण का परिणाम है। इसका प्रयोग परिस्थिति विश्लेषण के भाग के रूप में (अध्याय–4, अवस्था–2) प्रयुक्त हुआ है। यह विश्लेषण भार, पशुओं के दाना चारे की मात्रा एवं प्रकार, चारागाह की उपलब्धता और और व्यय, पशु बीमारियों का प्रकोप एवं उपचार के मौकों में हुए परिवर्तन प्रदर्शित करता है। बर्तन बनाने का मुख्य व्यवसाय कई वर्षो में परिवर्तित हो गया/भट्टों पर कार्य करने वाले पशु और अधिक निर्भर हो गया। प्रारम्भिक दिनों में वो उपचार हेतु पारम्पिरक तरीकों पर (खल मुसली प्रतीक) निर्भर थे परन्तु धीरे–धीरे वे पशु चिकित्सा की आधुनिक पद्धति प्रयोग करने लगे हैं। (सूई प्रतीक)

चित्र – टी 11ब, पहले और बाद का विश्लेषण, पशु पालकों के एक समूह द्वारा

टी–12 निर्भरता विश्लेषण

क्या है–

निर्भरता विश्लेषण समुदाय को उसके स्थाई जीवन यापन हेतु विशेष संसाधनों एवं सेवा प्रदाताओं पर निर्भरता का विश्लेषण करने में सहायक है। यह पूर्ववर्ती प्रारूप (जयकरन 2007) पशु कल्याण से लिया गया है।

उददेश्य–

पशु कल्याण के संदर्भ में यह टूल पशु मालिकों के लिए उनके कार्य करने वाले पशु के कल्याण हेतु आवश्यक मूलभूत सेवायें एवं संसाधन पर उनके नियंत्रण का विश्लेषण करने में सहायक है। जैसे –विशेष बीमारी से निपटना अथवा पानी, अच्छा दाना–चारा देना। यह लोगों को समझाने में सहायक है कि कौन सी क्रियाविधि उनके अपने नियंत्रण (आन्तरिक नियंत्रण) में है और कौन सी वाहरी सेवा प्रदाताओं के (बाह्य नियंत्रित) है और कौन सी इन दोनों (उनके और सेवा प्रदाताओं) के नियंत्रण से बाहर है।

निर्भरता विश्लेषण (चित्र टी–12) के प्रथम चरण में कार्य करने वाले पशु हेतु आवश्यक संसाधन एवं सेवाओं को चिन्हित करते हैं। पशु प्रबन्धन एवं कार्य अभ्यास जो पशु कल्याण से संबधित समस्याओं को प्राथमिकता में प्रथम आने से रोकते हैं के संबध में यह टूल पशु मालिकों के धारनाओं एवं विश्वास को समझने का अवसर प्रदान करता है। दूसरों पर निर्भरता का विश्लेषण पशु मालिकों को संसाधनों एवं सेवाओं तक अपनी पहुँच बनाने हेतु रणनीति बनाने के लिए प्रेरित करता है ताकि पशुओं का कल्याण सुनिश्चित हो सके।

इसे कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	प्रतिभागियों से कार्य एवं आराम के दौरान आने वाली समस्याओं के बारे में पूछें। विकल्प के तौर पर आप उनके पशुओं की आवश्यकताओं के बारे में प्रश्न पूछ सकते हैं। भूमि पर एक बड़ा सा वृत्त बनायें जिसके केन्द्र में पशु का चित्र हो ओर सभी मुद्दों को बाहय परिधि पर चित्र या चिन्ह के माध्यम से प्रदर्शित करें। तत्पश्चात् बाह्य वृत्त के अन्दर की तरफ दो और वृत्त बनायें तथा वृत्तों को दर्शित समस्याओं या आवश्यकताओं में बांट दें प्रत्येक समस्या हेतु एक भाग।
द्वितीय चरण	समूह को पशु कल्याण से संबंधित समस्याओं या आवश्यकताओं पर चर्चा करने के लिए कहें। इस चर्चा में उन्हें समस्याओं एव आवश्यकताओं की निर्भरता को देखने के लिए कहें और चर्चा करें कि उनमें से कौन सा उनके स्वयं के नियंत्रण एवं पहुंच में है तथा कौन सा सेवा प्रदाताओं के नियंत्रण में। साथ ही यह भी देखें कि उनमें से कौन–कौन ऐसी समस्याऐं हैं जो पशुमालिक एवं सेवादाता दोनों के पहुँच से बाहर है। अब उन्हें कंकड़ या बीज रखकर प्रत्येक समस्या के बारे में यह दर्शाने को कहें कि 10 में से कितना उनके पहुँच से बाहर कितना सेवा प्रदाता के लिए तथा कितना दोनों के पहुँच से बाहर के लिए देंगे। इस तरह का स्कोरिंग समस्याओं तक पशु मालिक एवं सेवादाताओं के पहुँच को स्पष्ट करता है।
तृतीय चरण	कौन सी सेवा सेवाप्रदाताओं से मिलती है पर चर्चा करते हुए देखें कि उन्हें कब पशुओं की आवश्यकता हेतु बाहरी लोगों पर निर्भर होना पड़ता है? उदाहरणार्थ नालबन्दी हेतु (नालबन्द पर) दाना विक्रेता या स्थानीय पशु चिकित्सक पर अब बचे हुए बीज अथवा कंकडों को सेवा प्रदाता के पहुँच के अनुसार समूह को उन सेवाओं या वस्तुओं के ऊपर रखने को कहें और इसे बड़े वृत के अन्दर छोटे वृत पर दिखायें।
चतुर्थ चरण	इस तरह 10 बीज या कंकड़ मे से स्वयं के पहुँच पर रखने के बाद बचे बीजों में से सेवाप्रदाता के पहुँच पर रखने के लिए कहें। अन्त में बचे हुए बीज को उस वृत्त में रखने को कहें जो यह दर्शाता है कि यह न तो पशु मालिक के पहुँच में है और न ही सेवादाता के पहुँच में है। (देखें चित्र टी 12)
पंचम चरण	जब अंकन पूर्ण हो जाये तो समूह के साथ चर्चा शुरू करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करें कि वे ऐसा रास्ता निकालें जिससे पशुओं की आवश्यकता या कल्याण की जरूरत पूरा करने पर उनका प्रभाव या नियंत्रण और अधिक हो। पूछें किस प्रकार उनके स्वयं वाले वृत्त के अंकों को बढाया जा सकता है।

सुगमकर्ता हेतु सुझाव

- इस अभ्यास में पर्याप्त समय लग सकता है। अतः समूह से पहले बात कर उनकी सहमति प्राप्त कर लें।
- इस अभ्यास को वृत्तों के स्वरूप के अलावा आयत अंकन से दिखाया जा सकता है। जिससे कुछ उर्ध्व एवं क्षेत्राजिक रेखाओं की आवश्यकता या समस्या के स्तर को दर्शाकर प्रयोग कर सकते हैं।

निर्भरता विश्लेषण

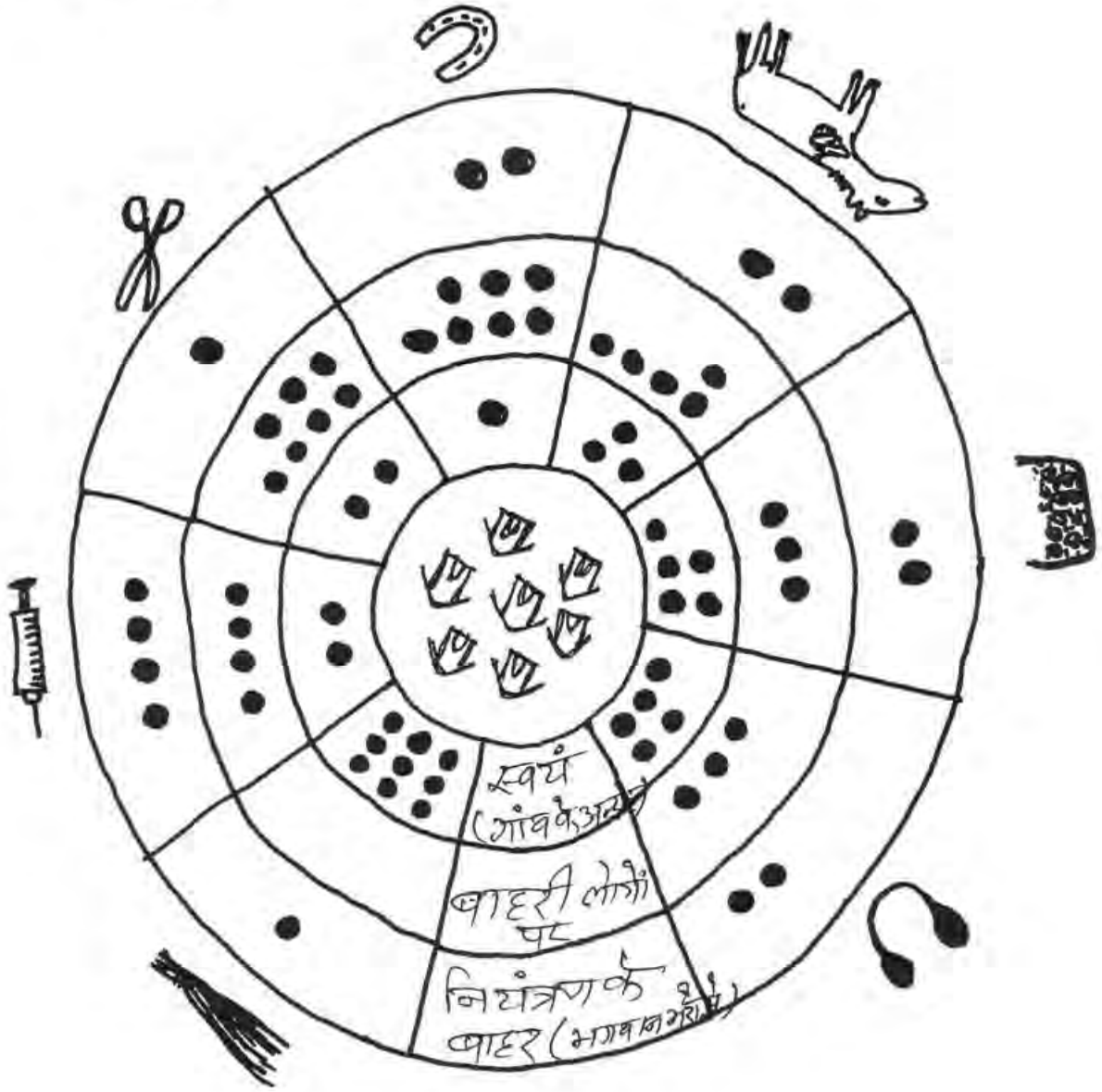

चित्र सं0 टी–12 उ0प्र0 के बिजौली ग्राम के सामुदायिक समूह के मध्य किये निर्भरता विश्लेषण का परिणाम

चित्र सं0 टी–12 उ0प्र0 के बिजौली ग्राम के सामुदायिक समूह के मध्य किये गए निर्भरता विश्लेषण का परिणाम है जो कि परिस्थिति विश्लेषण का एक भाग है। (अध्याय–4 अवस्था–2) समूह ने पशुओं की सात आवश्यकताओं को प्रतीकों का प्रयोग कर जमीन पर सूचीबद्ध किया अस्तबल की सफाई, पशुओं का उपचार, बाल कटवाना, नालबन्द की सेवा, बीमारियों की पूर्व पहचान, चारा–दाना और साज की मरम्मत। समूह ने महसूस किया कि अस्तबल की सफाई पूर्ण रूप से उनके नियंत्रण में हैं। उन्होंने माना कि उपचार के लिए वे दूसरों पर निर्भर हैं जबकि कभी–कभी महसूस करते हैं कि ये उनके नियंत्रण में है। इस बात के लिए उनमें काफी चर्चा हुई। कई बीमारियों और चोटों को रोका जा सकता हैं। समूह ने पाया कि वे साज बनाने वाले और दाना विक्रेता की तुलना मे नालबन्द और बाल काटने वाले पर ज्यादा निर्भर हैं वे दाना विक्रेता पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते हैं। क्योंकि ये दाना उनके पशु की प्रतिदिन की आवश्यकता है। उन्होंने निश्चित किया कि सामूहिक प्रयास से थोक में दाना खरीद कर दाना विक्रेता पर निर्भरता कम करेंगे और सामूहिक रूप से दाने का स्टोर करेंगे।

टी–13 शाख (ऋण) विश्लेषण

क्या है–

शाख विश्लेषण (चित्र संख्या–13) वर्तमान आय के स्त्रोतों, व्यय एवं शाख के विभिन्न स्त्रोतों का सामूहिक विश्लेषण है। इसमें अंकन विधि का प्रयोग हुआ है।

उददेश्यः–

आय–व्यय एवं शाख के विभिन्न वर्तमान स्त्रोतों का विश्लेषण समूह के सदस्यों को उनके जीवन स्थिति की बाधायें एवं मजबूरियाँ समझने में सहायक है तथा यह किस प्रकार उनके काम करने वाले पशु को प्रभावित करती है समझने में सहायक है यह समूह को शाख के वैकल्पिक स्त्रोत नियमित सामूहिक बचत या स्वयं सहायक कार्यों में योगदान और पशु कल्याण को बढ़ावा देने वाली कार्य योजना की समझ बनाने में सहायक है।

इसे कैसे करें?	
प्रथम चरण	प्रतिभागियों से आय के स्त्रोतों के बारे में पूछें उन्हें सभी प्रकार के आय स्त्रोतों को बताने हेतु प्रोत्साहित करें। तत्पश्चात् उन्हें सभी आय के स्त्रोतों का 0–10 तक उसकी महत्वता के आधार पर अंकन करने को कहें (चित्र–13 को देखें) इससे उनमें आय की स्थिति के बारे में और अधिक बहस और समझ पैदा होगी।
द्वितीय चरण	इसी प्रकार समूह को घर के विभिनन मदों पर होने वाले खर्चों को प्रदर्शित करने को कहें। सभी चीजों के सूचीबद्ध होने के पश्चात् उन्हें घर के सर्वाधिक खर्च वाले गधों के साथ सभी मदों पर अंक देने को कहें।
तृतीय चरण	तत्पश्चात् बात करें कि जब खर्चों से आमदनी कम होती, आर्थिक तंगी है तब क्या करते हैं। उनसे शाख के विभिन्न स्त्रोतों को दर्शानों को कहें तत्पश्चात सभी स्त्रोतों को सबसे ज्यादा बार और सबसे अधिक मात्रा में कर्ज मिलने के आधार वाले स्त्रोतों को अंक देने को कहें।
चतुर्थ चरण	चित्रण पूरा होने के बाद आय–व्यय और शाख के सभी स्त्रोतों के लाभ और हानि पर गहराई से चर्चा करें। उनसे ब्याज दर, शाख की उपलब्धता, आसानी से मिलने वाला कर्ज जैसे मुददों पर बात करें। इस बहस के आधार पर समूह शाख के वैकल्पिक स्त्रोतों को ढूंढ सकता है। यह उनको अपने पशु के कल्याण को बढ़ाने के लिए स्वंय सहायता समूह के गठन हेतुत प्रेरित कर सकता है।

सुगमकर्ता हेतु सुझाव

कुछ समूहों के लिए यह संवेदनशील चर्चा हो सकती है। समूह के सदस्यों के मध्य आय–व्यय और शाख पर खुली बहस से पूर्व विश्वास आवश्यक है।

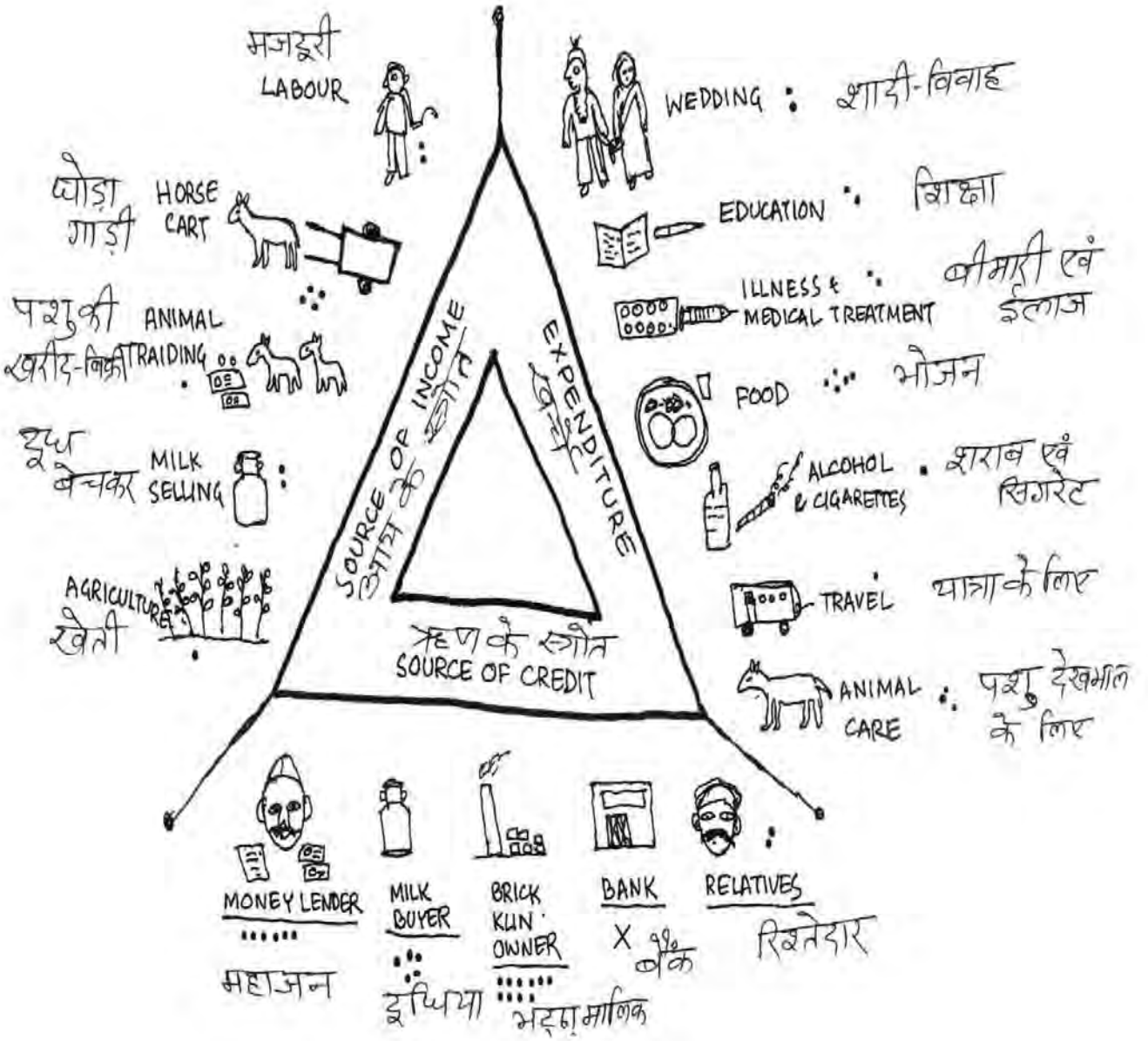

चित्र टी–13, मुजफ्फरनगर के सबतु गांव पशु पालकों द्वारा आय–व्यय एवं शाख विश्लेषण

चित्र टी–13 भारत के उ0प्र0 राज्य के मुज्जफ्फरनगर जिले के सुबतू गांव के पशु मालिकों के साथ शाख स्त्रोत विश्लेषण अभ्यास को प्रदर्शित करता है जो कि स्थिति विश्लेषण के हिस्से के दौरान किया गया (भाग–2, अध्याय–4)/चित्र से स्पष्ट है कि उनका मुख्य आय घोड़ा बुग्गी के कार्यों से होती है। इसके अतिरिक्त गाय–भैंस का दूध बेचकर या खेतों में काम कर। कुछ सदस्य पशुओं के व्यापार और खेती से आय अर्जित करते हैं।

उनके मुख्य खर्चे परिवार सदस्यों के भोजन एवं पशु के चारे दाने एवं देखभाल पर होता है। 90 प्रतिशत मालिक शाख के लिए अपने नियोक्ता भट्टा मालिक पर और स्थानीय महाजन पर निर्भर करते हैं। इस अभ्यास की चर्चा से समूह ने अपनी बचत शुरू कर दी जिससे कि उनकी शाख पर निर्भरता कम हो गई और अपने पशु का कल्याण बेहतर कर सके।

टी–14 समूह का अन्तिरिक लेन–देन विश्लेषण

यह क्या है?

यह टूल समूह के सदस्यों के मध्य हुए लेन–देन या कर्ज के कारणों को दृश्य रूप में प्रदर्शित करता है। समूह का धन या समूहिक योगदान का प्रयोग विभिन्न सेवा प्रदाताओं को भुगतान के लिए बुग्गी के रख–रखाव मरम्मत हेतु, काम करने वाले पशुओं को खरीदने के लिए तथा घर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है।

उद्देश्यः– समूह का आन्तरिक लेन–देन विश्लेषण (चित्र टी–14) आपको और समूह को सदस्यों के मध्य धन के लेन–देन या कर्ज के कारणों को समझने में मद्द करता है। यह प्रतिभागियों को तय करने में मदद कर सकता है कि सामूहिक रूप से किये गये व्यय से बचत हो सकती है जिससे कि उनके कर्ज की आवश्यकता में कमी होगी। उदाहरणार्थ –यदि ज्यादातर सदस्य पशु के दाना के लिए कर्ज लेते हैं तो सामूहिक धन से थोक मे दाना खरीदा जा सकता है। समूह गांव के सभी पशुओं के टीकाकरण की व्यवस्था एक ही समय पर कर फीस कम करवा सकता है। इसी प्रकार के अभ्यास के द्वारा समूह अपने कर्जों के भुगतान की स्थिति पता कर उसके भुगतान हेतु सामूहिक दबाव समूह के धन की वापसी हेतु जैसा कि सदस्यों के बीच तय हुआ हो बना सकता है।

इसे कैसे करें?	
प्रथम चरण	इस अभ्यास के लिए समूह एक वर्ष से सदस्यों के साथ मीटिंग कर रहा हो और सामूहिक धन हेतु नियमित योगदान हो और सामूहिक धन सदस्यों को कर्ज में देना शुरू कर दिया हो। (अन्तिरिक लेन–देन) अभ्यास का विवरण देकर सामान्य बातें समूह के और उसकी गतिविधियों के बारे में शुरू करें।
द्वितीय चरण	सदस्यों को उनके द्वारा एकत्रित सामूहिक धन के बारे में चर्चा हेतु उत्साहित करें तथा प्रत्येक सदस्य को अपनी बचत के बारे में बताने को कहें। उनसे भूमि या चार्ट पेपर पर एक बडा वृत्त बनाने को कहें तथा उसका केन्द्र भी बनवायें। फिर उन्हें प्रत्येक सदस्य का नाम अलग–अलग कार्ड पर लिखने को कहें। आसानी से सदस्या को पहचानने के लिए संकेत का प्रयोग भी कर सकते हैं। जिन सदस्यों ने समूह से ऋण लिया है के कार्ड को वृन्त के परिधि पर क्रमानुसार व्यवस्थित करें।
तृतीय चरण	अब बड़े वृत्त की अन्दर की तरफ तीन और गोले बनायें और उनको समूह की सामूहिक धन से कर्ज लेने वाले सदस्यों की संख्या के बराबर बांट दें। (चित्र टी 14) पुनः सभी भागों को लिखे हुए काडों या प्रतीकों से प्रदर्शित किया जा सकता है। अगर किसी सदस्य ने 2 बार कर्ज लिया हो तो यह उनके कालम या भाग में प्रदर्शित करें। अन्दर के दूसरे वृत्त में ऋण का उद्देश्य, तीसरे वृत्त में ऋण राशि तथा चौथे वृत्त में वर्तमान स्थिति को दिखाऐं।
चतुर्थ चरण	यदि प्रतिभागी चाहे तो उन्होंने अब कितना धन और ब्याज, सामूहिक धन का वापस किया है को प्रदर्शित करने हेतु एक वृत्त और जोड़ सकते हैं। अब उन्हें कर्ज की पहले वापस की जा चुकी किश्तों हैं को प्रदर्शित करने को कहें। अब बची हुई किश्तों की संख्या एवं महीने की संख्या के बारे में बात करें कि कब तक पूरा कर्ज चुक जायेगा।
पंचम चरण	अब प्रतिभागियों को उनकी आगे की आवश्यकताओं के बारे मे बात करने को प्रोत्साहित करें तथा किस जरूरत के लिए वे कर्ज लेंगे तथा अपनी जरूरतों पर व्यय को कम करने के लिए क्या कदम वे उठायेंगे। क्रमांक के अन्त में समूह से अपने निष्कर्षों एवं विशेषताओं का संक्षेपीकरण करायें कि पशु कल्याण के बढ़ावा हेतु कहां–कहां कर्जों का प्रयोग हुआ।

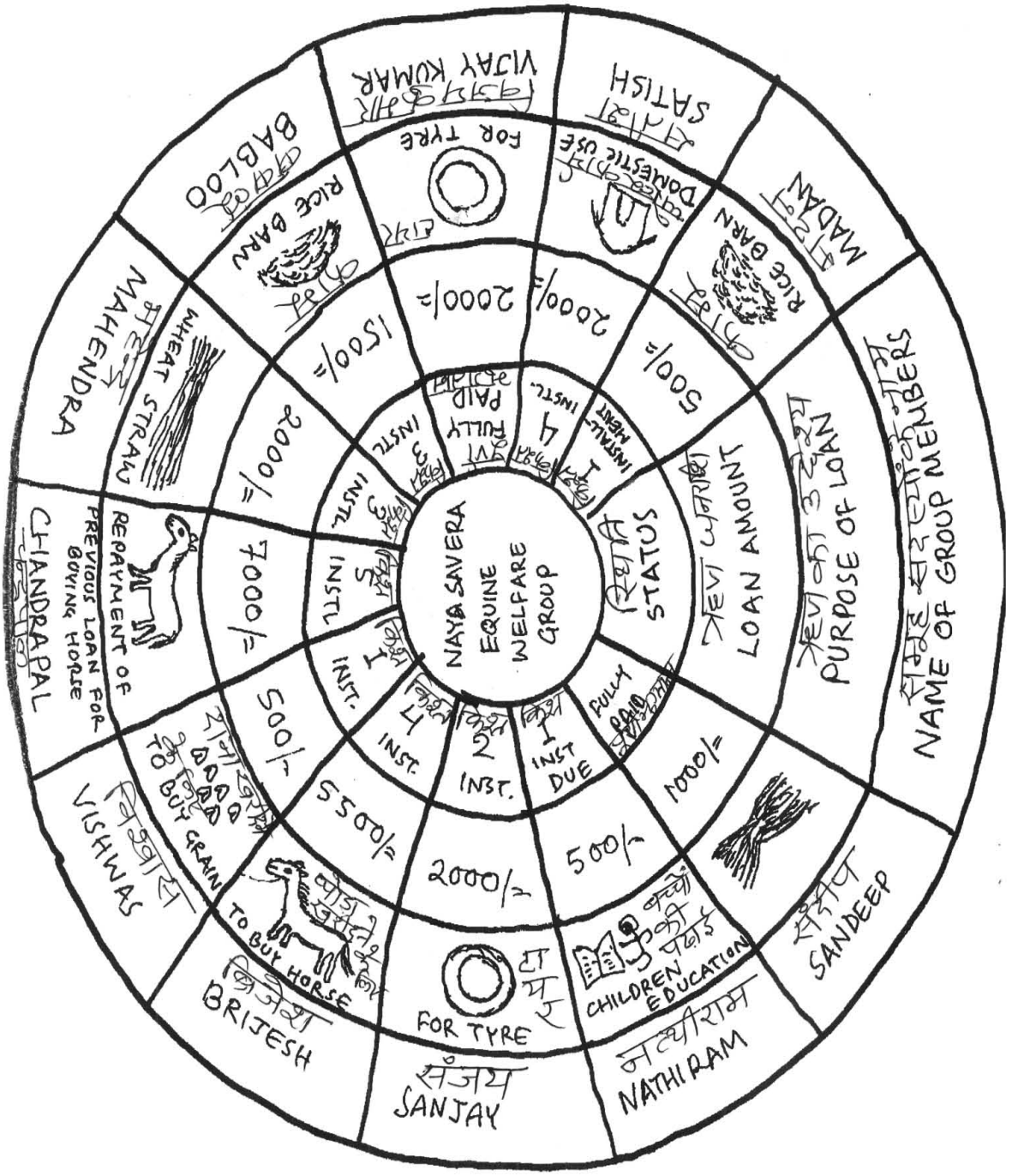

चित्र टी–14 समूह का आन्तरिक लेन–देन का विश्लेषण

परिस्थिति विश्लेषण के भाग के रूप में (अवस्था 2, अध्याय 4),नया सवेरा अश्व कल्याण समूह, ग्राम भाकला, जिला सहारनपुर उ0प्र0, भारत के सदस्यों ने सामूहिक बचत से लिए लिये कर्जो का विश्लेषण किया। किसी न किसी काम के लिए सभी सदस्यों द्वारा कर्ज लिया गया चित्र T14 का केन्द्रीय वृत्त कर्ज की अवस्था एवं भुगतान हेतु बची हुए किश्तों को दर्शाता है, दूसरा वृत्त प्रत्येक कर्ज की मात्रा को दिखाता है। और तीसरा कर्ज लेने के कारण को दिखाता है। ज्यादातर कर्ज घोड़े को खरीदने हेतु दाना लेने हेतु, अथवा बुग्गी की मरम्मत हेतु लिये गये हैं। इस अभ्यास से समूह के सदस्यों को समझ में आया कि अपने पशुओं के लिए सामूहिक कदम उठायें जैसे – थोक मे दाना छूट पर खरीदना।

समूह का आन्तरिक लेन – देन विश्लेषण – सुगमकर्ता हेतु सुझाव

- सबसे अच्छा है कि इस अभ्यास को करते समय समूह के रजिस्टर, अथवा आय–व्यय ब्यौरा का सहयोग न लें। अगर आवश्यकता हो तो अभ्यास के पश्चात् रजिस्टर को एक साथ देखें और उसके अनुसार यदि जरूरी हो तो किए हुए अभ्यास मे परिवर्तन करें।
- कभी–कभी कोई एक सदस्य या ग्रुप लीडर अभ्यास में अधिक हिस्सा ले लेता है और आपको दूसरे सभी सदस्यों के बारे में बताता है। कुशलता पूर्वक उसे हतोत्साहित करें जिससे कि लिए गये कर्ज के बारे में प्रत्येक सदस्य स्वंय बतायें।
- समूह को अभ्यास की एक प्रति रखनी चाहिए आप 6 से 12 माह बाद इसी अभ्यास की पुनरावृत्ति करें और समूह में आए बदलाव का विश्लेषण करें।
- इस अभ्यास में सामूहिक बचत के अन्य खास बातों में जैसे मीटिंग में उपस्थिति, नियमित मासिक बचत एवं नियमित कर्ज वापसी आदि को शामिल किया जा सकता है।

टी–15 लागत–लाभ विश्लेषण

पशु कल्याण अभ्यास, पशु सम्बन्धी सेवा प्रदाताओं एवं पशुओं को चारा देने के अभ्यास

यह क्या है

संसाधन या अपनाई जा रही प्रक्रियाओं से होने वाले पशु कल्याण आर्थिक मूल्य तथा उसके लाभ का तुलनात्मक अध्ययन करने का एक तरीका है।

उद्देश्य:–

यह अभ्यास पशु कल्याण की विभिन्न गतिविधियों से सम्भावित लाभ–हानि की सम्भावना एवं वहन करने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। यह पशु और पशु मालिक, प्रयोगकर्ता एवं चालक की लागत और लाभ को प्रदर्शित कर सकता है। यह अभ्यास समूह को अपने कार्य करने वाले पशु के कल्याण हेतु काम करने को प्रेरित करता है। हम इसका प्रयोग तरह–तरह के मौके पर कर सकते हैं। जैसे–पशु स्वास्थ्य हेतु बचाव के मापकों (टी.टी. (टीकाकरण) विभिन्न पशु स्वास्थ्य सेवाओं, सर्वाधिक लाभदायक पशु चारे दाने का मिश्रण लाभ और लागत को देखना, आदि।

हमारे अनुभव में पशु मालिकों के समूह प्रायः आर्थिक लागत–लाभ का विश्लेषण शुरू में सर्वाधिक सस्ता विकल्प को जानने हेतु करते हैं। सुगमकर्ता के रूप में आपकी भूमिका होती है कि पशु कल्याण की कीमत और लाभ भी इस बहस में शामिल करें ताकि व्यय की कमी से पशु कल्याण में कमी न हो जाये। समूह भी नजर रखे कि किये गये परिवर्तन पशु कल्याण को घटाया या बढ़ाया है। इसके लिए वे दूसरे अभ्यास में विकसित पशु कल्याण सम्बंन्धित सूचकों का प्रयोग करें। जैसे–पशु शरीर का मानचित्रण (टी–20), यदि मैं घोड़ा होता (टी–17) अथवा अपने पशु की कीमत कैसे बढायें (टी–18)

पशु कल्याण गतिविधियों का लागत–लाभ विश्लेषण

यह स्वरूप समूह को यह तय करने में मदद करता है कि किस साधन–सेवा, जैसे चारागाह, पानी का साधन, टीकाकरण, नालबन्दी या बाल कटाई का प्रयोग करना है। उदाहरण के लिए पशु स्वास्थ्य उपचार के लागत–लाभ विश्लेषण में पशु चिकित्सक का भुगतान एवं क्रय की गई दवाओं की कीमत का पशु के कल्याण लाभों तथा उपचार के बिना परिवार की आय के नुकसान से तुलना कर सकते हैं। इसका विवरण टिटनेस टीकाकरण की केस स्टडी में दिया गया है।

पशु सम्बन्धी सेवा प्रदाताओं का लागत–लाभ विश्लेषण

यह एक विशेष सेवा या साधन का दूसरे की तुलना में व्यय या लाभ के अधिकता को एक दूसरे की तुलना में दर्शाता हैं। इसको, एक सेवा को अन्य सेवाओं से तुलना कर पूरा कर सकते हैं। या उन्हीं सेवाओं को देने वाले लोगों के बीच तुलनाकर (चित्र देखें टी 15अ)

खिलाने–पिलाने की आदतों का विश्लेषण:–

लागत लाभ विश्लेषण का विशेष अधिग्रहण दिखाता है कि पशु को देने वाले आहार के तरीकों में परिवर्तन से पशु कल्याण में बेहतरी हो रही है और वहन योग्य है या नहीं। यह वर्तमान आहार के तरीकों, विभिन्न चारे और दानों की पोषक क्षमता, और काम करने वले पशु पर प्रभाव, वैकल्पिक चारे दानों की उपलब्धता, न्यूनतम मूल्य पर सर्वाधिक उपयुक्त संन्तुलित आहार का आंकलन करता है। पशु आहार अभ्यास विश्लेषण में एक से अधिक टूल होते हैं जिसका विस्तृत विवरण टी–27 में है।

इसे कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	जब समुदाय की अपनी आपूर्ति किये जा सकने वाले साधनों को देखतें हैं तो लागत–लाभ विश्लेषण अपेक्षाकृत आसान होता है। जब पशु सम्बन्धी सेवा प्रदाताओं का लाभ –लागत विश्लेषण करते हैं तो उसके अन्य पहलू जैसे इनकी स्थिति, गांव के घरों से दूरी, या उसकी सेवा की गुणवत्ता का विश्लेषण इसे थोड़ा कठिन बना देता है। यदि समूह विभिन्न सेवा प्रदाताओं के प्रयोग के लागत–लाभ विश्लेषण का इच्छुक है तो शुरूआत में पूछें कि उनके काम करने वाले पशु की देखभाल के लिए आवश्यक सेवाओ को कौन देता है। एक आयत बनायें और सबसे उपर सेवा प्रदाताओं को सूचीबद्ध करें। उदाहरण के लिए पशु चिकित्सक, सामुदायिक पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सूम छँटाई वाला, नालबन्द पशु दाना विक्रेता, साज–सामान या बुग्गी बनाने वाला, मेडिकल स्टोर या कृषि सेवा केन्द्र (देखें चित्र टी–59)
द्वितीय चरण	प्रत्येक सेवा पर बात करें और समूह से उन सभी कारणों को सूचीबद्ध करने को कहें जिन्हें वे लागत लाभ विश्लेषण से देखना चाहते हैं। ये कारक हो सकते हैं गांव से उनकी दूरी, कीमत या खर्च, भुगतान का माध्यम, सेवा की गुणवत्ता या अन्य सम्बधित मुद्दें जेसे –सेवा प्रदाता कितनी कुश्लता से पशु को नियंत्रित करता है। इन सभी कारकों को आयत के उपर से नीचे की तरफ सूचीबद्ध करें। दूसरे तरीके से कारकों को आयत के उपर तथा सेवा प्रदाताओ को उपर से नीचे की तरफ सूचीबद्ध किया जा सकता है।
तृतीय चरण	अब समूह को प्रत्येक सेवा प्रदाताओं के सामने के आयतों को भरने हेतु प्रेरित करें जैसा कि चित्र टी–15अ में दिखाया गया है।
चतुर्थ चरण	एक बार पूरा हो जाने पर समूह को प्रत्येक सेवा प्रदाता की लागत लाभ विश्लेषण को कहें। यदि कीमत ज्यादा है तो उसके संभावित विकल्प क्या हैं, क्या लाभ के साथ –साथ पशु कल्याण में सुधार हो सकता है? क्या पशु कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव डालें बिना भी कीमत घटाई जा सकती है? इन सवालों के आधार पर समूह अपना अगला कदम निर्धारित कर सकता है।

लागत लाभ विश्लेषण सुगमकर्ता के लिए सुझाव।

- यदि आप पशु उपचार सेवाओं पर बात कर रहे हैं तो समूह से पिछले एक दो वर्षो में आयी बीमारियों के बारे में पूछें। क्या उपचार, कितना नुकसान हुआ स्वस्थ होने में कितना समय लगा कितना व्यय हुआ और पशु के काम नहीं कर पाने के कारण।
- तकनीकी व्यक्ति जैसे पशु चिकित्सक, सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता की उपस्थिति बीमारी व उसके उपचार के बारे में पुनः विवरण दे सकते हैं। जो कि लोगों को अधिक गहराई से विश्लेषण करने में मदद करेगा। साथ ही तकनीकी व्यक्ति को समुदाय के सोचने का आधार समझ में आयेगा और उनके अनुभव तथा विशेषता को स्थानीय जानकारी के साथ लाने का मौका मिलेगा।

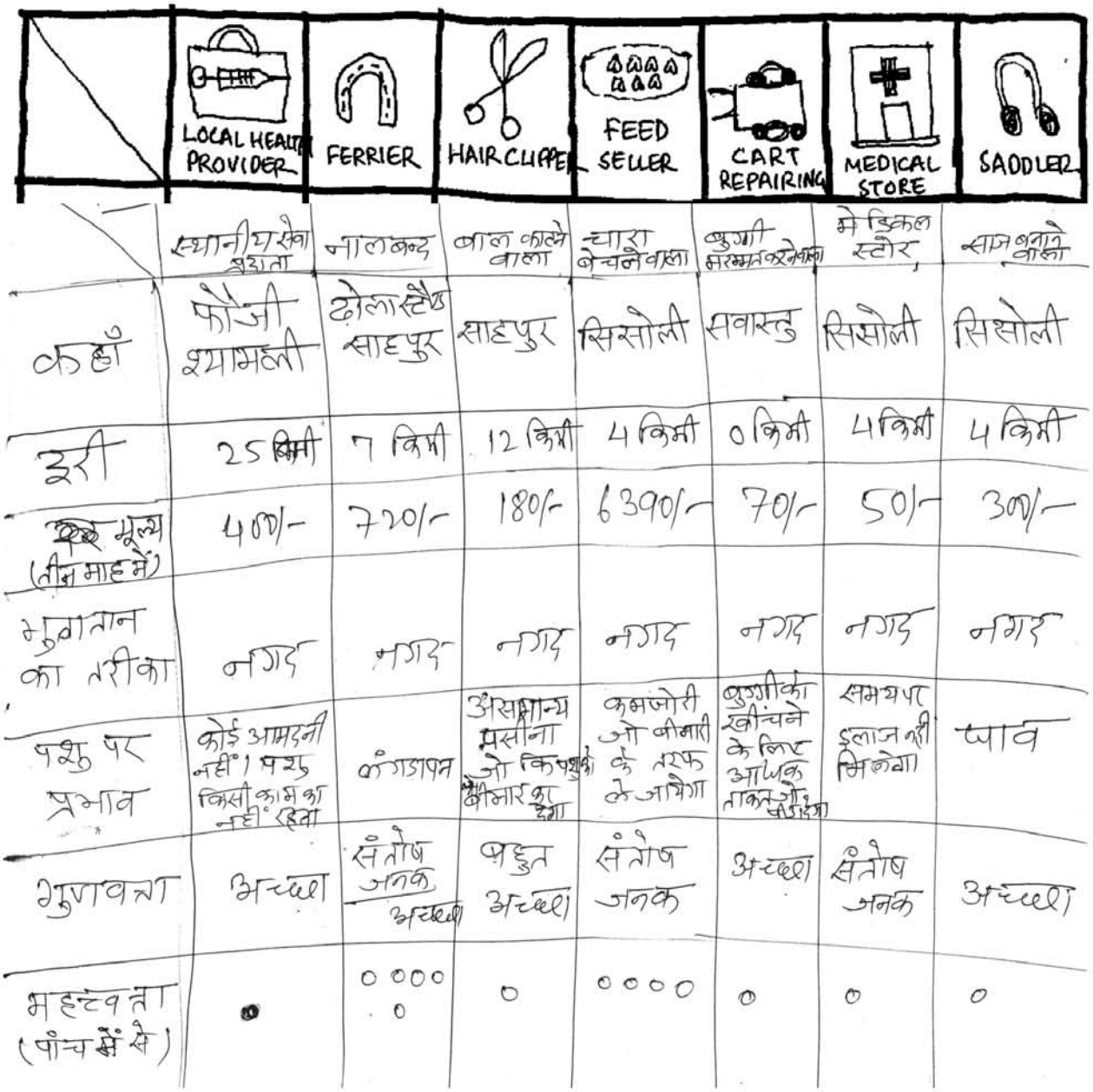

चित्र टी–15अ लागत–लाभ विश्लेषण

भारत के उ0प्र0 राज्य के मुजफ्फरनगर जिले के सावटू गांव में पशु सम्बन्धी सेवादाताओं का गांव से दूरी, कीमत, उनके पशु की कीमत (प्रभावित पशु कल्याण), यदि सेवा नहीं ले (चित्र 15अ) का लागत–लाभ विश्लेषण किया। अन्तिम दो पंक्तियाँ सेवाप्रदाता की गुणवत्ता तथा उनका काम करने वाले पशु के लिये महत्व को दर्शाता है। आयत को बनाने के बाद समूह ने सामूहिक प्रयास के द्वारा कीमत घटाने एवं सेवा की गुणवत्ता बढाने के विकल्पों पर बात की उन्होंने तय किया कि मैडिकल स्टोर पर होने वाले व्यय को घटाने के लिए गांव में प्राथमिक उपचार किट का प्रबन्ध किया जाये साथ ही सेवाओं को कम कीमत पर लेने (चित्र टी–15ब) के लिये योजना का निर्माण किया।

सेवा प्रदाता	वर्तमान मासिक खर्च	खर्च कम करने के तरीके
स्थानीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाता एल0 एच0 पी0	400.00	• हम लोग पशु सेवा केन्द्र बनायेंगे एवं सामूहिक रूप से स्वास्थ्य सेवा देने वाले को वहां बुलायेंगे।
नालबन्द	720.00	• हम लोग नाल बन्द को गांव में दो बार एवं तांगा स्टैण्ड पर एक बार बुलायेंगे। • नालबन्दी का दर तय करेंगे। • हम लोग पुराने नाल के लिये अनुबन्ध तय करेंगे। • हम लोग केवल एक नाल बन्द को बुलायेंगे।
बल काटने वाला	180.00	• नालबन्दी की तरह बाल काटने वाले को भी सामूहिक रूप से गांव में एवं तांगा स्टैण्ड पर मासिक निश्चित दिन में बुलाकर उसका दर निश्चित करेंगे।
बाल काटने वाला	6390.00	• कामू, चोकर आदि सामूहिक रूप से खरीदेंगे। • मक्का, गेंहू एवं जौ सामूहिक रूप से खरीदेंगे एवं इनका दलिया करेंगे। • गेंहू भूसे का दर गेंहू कटाई से पहले तय कर लेंगे। • हरा चारा प्रतिदिन प्रयोग करेंगे।
बुग्गी मरम्मत करने वाला	70.00	• बेहतर दर के लिए सामूहिक रूप से बात करेंगे।
मेडिकल स्टोर	50.00	• हम लोग प्राथमिक चिकित्सा किट रखना एवं इसे व्यवस्थित करना सुरू करेंगे।
साज वाला	300.00	• सामूहिक रूप से बेहतर दर के लिये बातचीत। • साज की उचित सेटिंग। • साज की समुचित ग्रीसिंग साप्ताहिक रूप से करेंगे। • समय से साज की मरम्मती।

चित्र टी 15 ब सावटू गांव में पशु सम्बन्धी सेवाओं के दर को कम करने के लिए ग्राम स्तरीय कार्ययोजना, जिला मुजफ्फरनगर, उ0प्र0, इण्डिया 2008

केस स्टडी – M

टिटनस टीकाकरण का लागत–लाभ विश्लेषण – मल्हौर आंशिक गांव

श्रोतः – विनीत सिंह, राम बक्श पाल सिंह, आर्थिक विकास संस्थान एवं जन कल्याण संस्थान, लखनऊ उ0प्र0, (इण्डिया), जून 2008।

मल्हौर आंशिक गांव में समुदाय द्वारा एक लागत–लाभ विश्लेषण अभ्यास किया गया जिसमें कार्य करने वाले पशुओं के टिटनस के टीकाकरण पर लाभ देखा गया । लाभ देखने के बाद समुदाय ने टीकाकरण की लागत कम करने की सम्भावना तलाश की। समूह ने अपने स्थानीय पशु स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से सलाह की। उन्होंने अपने पशुओं को सामूहिक टीकाकरण करने के लिये शहर से थोक में वैक्सीन खरीदने की योजना बनायी। सभी से पैसा इकट्ठा किया, जिसमें शहर जाने का किराया भी शामिल किया था। समूह ने एल0एच0पी0 से बूस्टर लगाने तक टीकाकरण की फीस भी कम करायी। समुदाय ने गणना की कि इस तरह से उन्होंने एक अच्छी धनराशि की बचत की है एवं पशुओं को टिटनस से होने वाले दर्द एवं पीड़ा से बचाया । नीचे का विश्लेषण समुदाय के लागत–लाभ के वित्तीय गणनाओं को बताता है–

लागत–लाभ विश्लेषण

कमलेश का खर्च(जिसका खच्चर टिटनस से मर गया)	घनश्याम का खर्च (जिन्होंनें अपने पशु का टीकाकरण कराया)
1. खच्चर का खरीद मूल्य – 14500.00 2. इलाज का खर्च – 700.00 (दवाई एवं चिकित्सक) 3. 03 दिन के काम बन्द होने से नुकसान– 1500.00	एक पशु के टीकाकरण का खर्च – 16.00 (टीका, सिरिन्ज एवं चिकित्सक) 32 पशुओं को टीका लगाने का खर्च 16**X**32 – 512.00
कुल नुकसान – 16700.00 (एक पशु का) 16700.00X32=534400.00 (नुकसान 32 पशुओं के लिए)	टीका का कुल खर्च – 512.00 (32 पशुओं का)

टी–16 पशु कल्याण सम्बन्धित सॉप और सीढ़ी का खेल

यह क्या है ?

हमारे सामुदायिक सहजकर्ताओं ने यह पाया है कि कामकाजी पशुओं के कल्याण को बढ़ाने के लिये लागत–लाभ विश्लेषण (टी 15) अभ्यास समूह को प्रेरित करने के सन्दर्भ में कारगर टूल है, समुदाय इसे रोचकता के साथ भिन्न–भिन्न तरीके से करते हैं। इनमें से कुछ समुदाय द्वारा पारम्पिरक, सॉप और सीढ़ी के खेल को अपनाया गया है।

उद्देश्य –

यह खेल पशु कल्याण के सम्बन्ध में प्रतिभागियों को ज्यादा से ज्यादा व्यस्त रखता है व रूचि को बढ़ाता है, इसके साथ ही साथ पशु व्यवस्थापन हेतु उनके सामूहिक ज्ञान को बढ़ाता है तथा खराब पशु कल्याण को अच्छा करने हेतु प्रेरित करता है। बच्चे व वयस्क दोनों इस खेल को करते समय अति उत्साहित होकर आनन्द उठाते हैं।

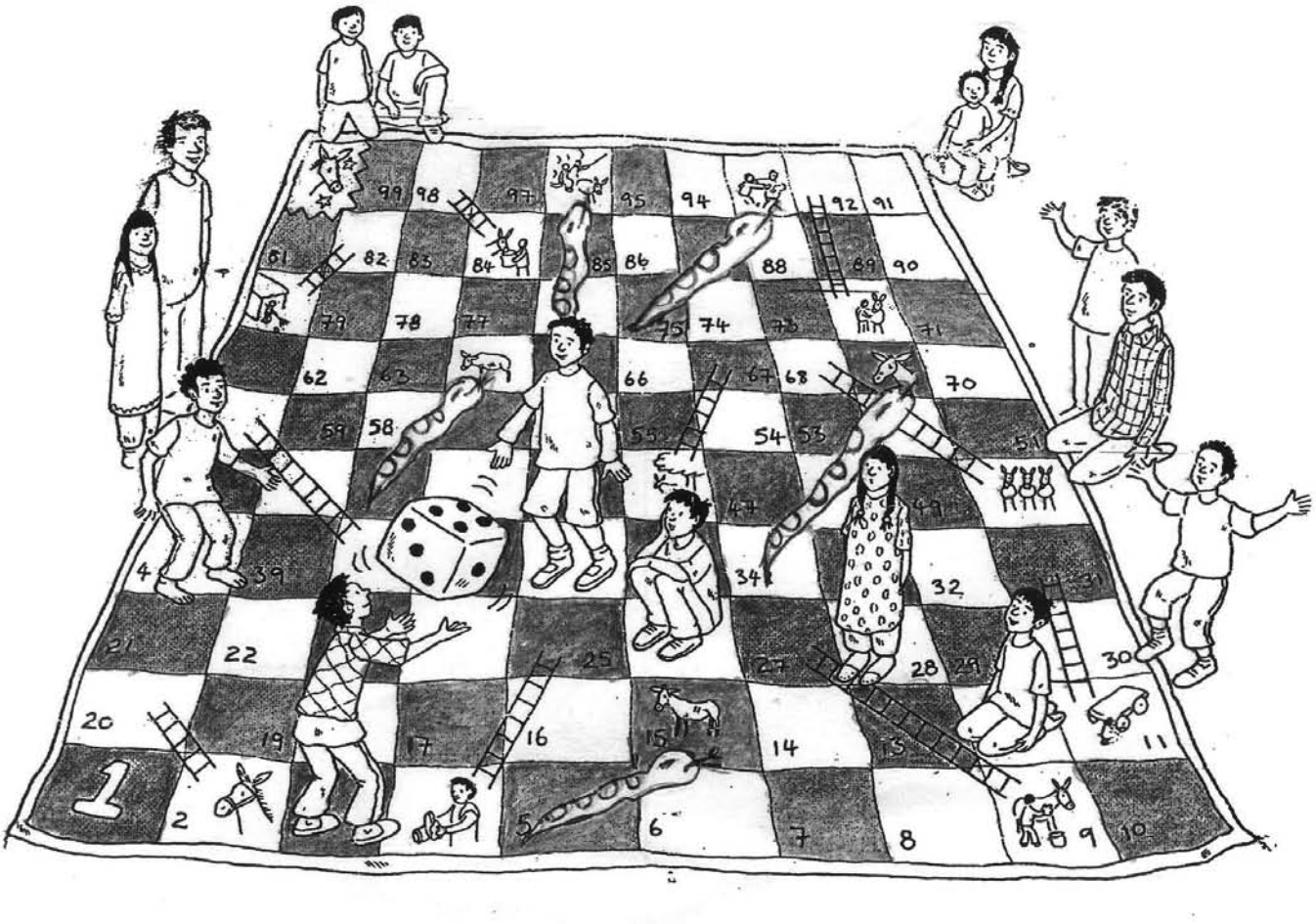

चित्र टी16 ए – प्रारम्भिक सॉप और सीढ़ी का खेल खिलाड़ी पर्याप्त रूप से घूमते हुए ।

इसे ऑप कैसे करेंगे

इस खेल हेतु पूर्ण तैयारी एक कामन बोर्ड (सॉप और सीढ़ी का खेल) का प्रयोग सभी के खेलने हेतु होता है, या तो छोटे आकार का बोर्ड जो बाजार में उपलब्ध रहता है, इसे रख लें। या इससे बड़ा बनाने के लिए कपड़े या पेपर से भी बड़ा बोर्ड बना लें। यह गेम 50 से 100 वर्ग फिट के एक मैट्रिक्स में होता है, जिस पर सॉप और सीढ़ी का चिन्ह रंगा होता है और विभिन्न वर्गो से जुड़ा होता है। (चित्र 16 अ और बी देखें)

इस खेल को पशु कल्याण लागत–लाभ विश्लेषण के रूप में बदलने हेतु शुरू करने से पहले दो तरह की महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र करनी पड़ती है

1. पशु के रख–रखाव सम्बन्धित पूर्व के तरीके (जो सकारात्मक और अच्छें हों)
2. पशु के रख–रखाव से सम्बन्धित पूर्व के तरीके (जो नकारात्मक / खराब हों)

इन तरीकों/अभ्यास को पहले से कार्ड पर संकेतों/चिन्हों या फोटो रखकर दर्शा लें ।

इसे आप कैसे करेंगें	
प्रथम चरण	एक–एक कार्ड को वर्ग के आकार वाले खाने में प्रत्येक सॉप के उपरी हिस्से तथा निचले हिस्से पर रखें इसी प्रकार एक कार्ड को सभी सीढ़ी के उपरी तथा निचले हिस्से पर रखें। सॉप प्रायः लागत को दर्शाता है तथा सीढ़ी लाभ के साथ जुडा हुआ है। यह लागत और लाभ (दोनों रूप में आर्थिक व पशु कल्याण दीखना चाहिए) उदाहरण के तौर पर खराब खुर का रख–रखाव लगड़ापन को दर्शाता है (दर्द और खराब पशु कल्याण) जैसे कि तीन दिन के कार्य का नुकसान प्रतिदिन 300/– रू0 के हिसाब से या 30 के इजिण्टीयन पौण्ड/दिन, वैकल्पिक रूप से कारण और प्रभाव को सॉप और सीढ़ी के विपरीत दिशा में/दूसरे तरफ रख सकते हैं। उदाहरण–सॉप के सिर पर रखा कार्ड लंगड़ापन/लगड़ा जानवर तथा पूँछ पर रखा कार्ड खुर का खराब रख–रखाव को दर्शाता है। (नालबन्दी की खराब गुणवता या बिना सेट किया हुआ खुर)
द्वितीय चरण	सामान्तया 6 से 8 लोग इस खेल को एक साथ डायस पर खेलते हैं प्रत्येक प्रतिभागी के द्वारा भिन्न–भिन्न उद्देश्य के रोल के रूप में (जैसे कि बोतल का ढक्कन, पत्ती या पत्थर) प्रथम खाने पर रखा जाता है। सभी प्रतिभागी घुमावदार रूप से डायस पर खेलने के लिए चांस/मौका पाते है।
तृतीय चरण	जब एक खिलाड़ी वर्ग में फोटो/कार्ड पर चढ़ता है तो कार्ड घुमता है और खिलाड़ी आपस में चर्चा करते है यदि खिलाड़ी वर्ग में जहॉ सॉप का सिर दिखाई देता है वहॉ पहुँचता है तो गिरने वाला (काउंटर को अवश्य ही नीचे की तरफ सॉप की पूँछ पर आना चाहिए। जब खिलाड़ी सीढ़ी के नीचे पहुँचता है तो उनको वे सीढ़ी के उपरी हिस्से पर पहुँच सकते है।) सॉप की पूँछ से हटने से पहले खिलाड़ी स्थिति को अवश्य बताएँ/दिखायें/लिखें और वे अनुभव करें कि कार्ड पर जो लिखा है उसके बराबर कौन सी चीज है। समूह को प्रोत्साहित करें कि लागत से लाभ की तरफ जाने हेतु किस तरह के कार्य की जरूरत होगी।

सुगमकर्ता हेतु टिप्पणी नोट :– पशुकल्याण सम्बन्धित सॉप और सीढ़ी का खेल

- हम इसमें/इस खेल में कई विविधता/भिन्नता का प्रयोग करते है, जैसे कि बढ़िया व खराब रख–रखाव अभ्यास से सम्बन्धित प्रश्नों को एक–एक बोर्ड पर रखते हैं।
- बोर्ड को इतना बड़ा बनाया जा सकता है कि सभी खिलाड़ी/खेलने वाले व्यक्ति इसके चारों तरफ घूमकर खेल सकें।
- प्रायः हम इस खेल की पूर्ण सफलता हेतु बच्चों के साथ करते हैं।

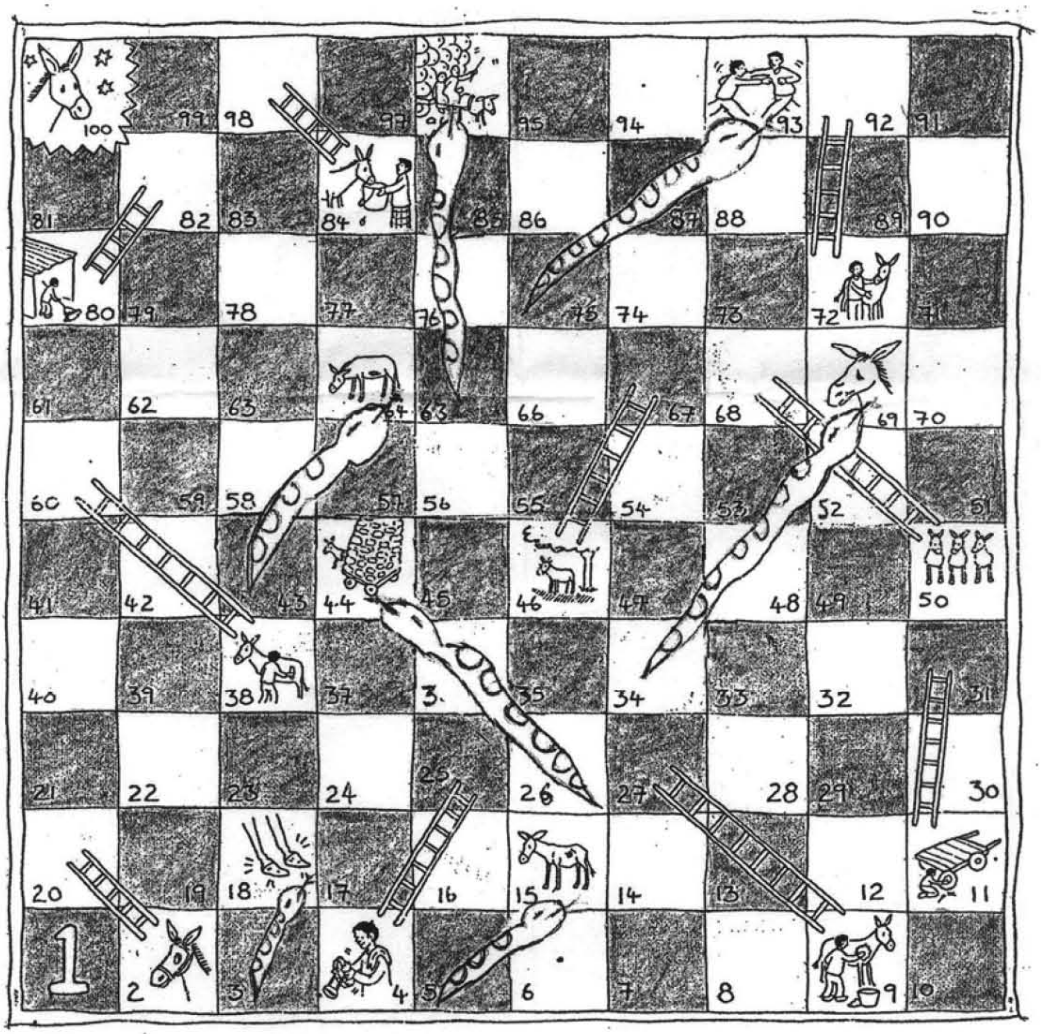

चित्र टी 16 बी – पशु कल्याण संवेदनशीलता आधारित सॉप और सीढ़ी का खेल, यह एक बड़े कपड़े पर बनाया हुआ है व इसे उदाहरण के रूप में दिया गया है, जिसे ब्रुक इजिप्त कैरो (2009, द्वारा विकसित किया गया है।

टी–17 यदि मैं घोड़ा होता

या गधा, खच्चर, बैल, ऊट, याक

यह क्या है – यह एक विशेष रूप से डिजाईन किया हुआ पी0आर0ए0 टूल है जो बीच में पशु को रखकर समुदाय को पशु कल्याण व इसको देखकर चर्चा करने का अवसर देता है। यह टूल हम जहॉ काम करते है वहॉ समुदाय में बहुत ही चर्चित/प्रसिद्ध है। यह टूल पशु कल्याण के मुद्दे को चिन्हित करने, उसकी योजना बनाने व उसकी देखभाल करने में प्रयोग आता है।

उद्देश्य

''यदि मैं घोड़ा होता'' टूल का प्रयोग समुदाय को उनके कामकाजी जानवरों के स्थान पर स्वंय को रखकर देखने के लिए करते हैं जैसे–;खच्चर, ऊंट, बैल, याक होते तो अपने मालिक से क्या अपेक्षा रखते ? यह पशु मालिकों को केवल संसाधनों व सेवाओ से अलग सोचने के लिए बाध्य करता है तथा स्वंय में व्यवहार बदलाव को कल्याण की दृष्टि से देखने हेतु अवसर देता है।

आप इसे अपने कार्य क्षेत्र मे प्रयोग कर समूह की मदद कर सकते है :–

1. काम करने वाले जानवरों की जरूरतों को चिन्हित करना जैसे– संसाधन, सेवाएं, पर्यावरण, पशु रख–रखाव की आदतें, यह समुदाय को उत्तम पशु कल्याण हेतु क्षमता देगा ।
2. पशु मालिक, सेवा, भिन्न–भिन्न सेवा प्रदाताओं के बीच की दूरी को समझने/देखने का मौका मिलता है।
3. काम करने वाले पशुओं की जब उनकी आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो रही हों पर प्रभाव, को देखने के लिए।
4. पशु में दिखने वाले चिन्ह/लक्षण को या उसके व्यवहार को चिन्हित करना, यह उन दोनों परिस्थितियों के लिए है जब पशु की सभी जरूरतें पूरी हो रही हो तब और जब जरूरतें पूरी न हो रही हो तब (पशु आधारित कल्याण के मानक) ।

   इस टूल का प्रयोग प्रायः प्रथम चरण में सहभागिता आधारित कल्याण आवष्यकता/आंकलन हेतु किया जाता है (अध्याय 4 अवस्था–3)। समूह के द्वारा पशु आधारित कल्याण के मानक को चिन्हित करना तथा ट्रांजेक्ट वाक करके अश्व कल्याण/पशु कल्याण की स्थिति को देखना। (चित्र टी 22 देखें)।

इसे आप कैसे करेंगे –

प्रथम चरण

यह अभ्यास समूह से एक प्रश्न के साथ शुरू होता है कि यदि आप एक घोड़ा होते (या गधा, खच्चर, ऊँट याक आदि) तो अपने मालिक से क्या अपेक्षाएँ रखते। इससे पशु मालिकों को अपने आपको जानवर की जगह रखकर देखने का साहस/प्रोत्साहन मिलता है। चार्ट पेपर पर/जमीन पर एक बड़ा गोल–गोल घेरा बनाये जिसके बीच में काम करने वाला जानवर हो यदि आपके पास घोड़े का माडल या ड्राइंग चार्ट हो तो इसमें से एक गोल घेरे के बीच में रखे ।

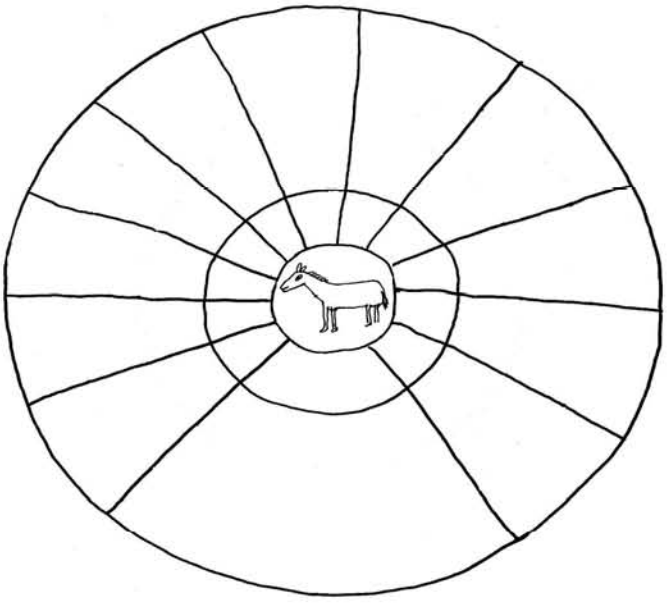

इस अभ्यास के अन्दर वाले/सबसे अन्दर वाले भाग में पशु मालिक से घोड़ा अपनी अपेक्षाओं को बताता है और जिसे लिखना होता है, घेरे के बाहर उससे सम्बन्धित सेवा की पहचान हेतु चिन्ह का प्रयोग भी पशु मालिक अपनी आसानी के लिए करते हैं।

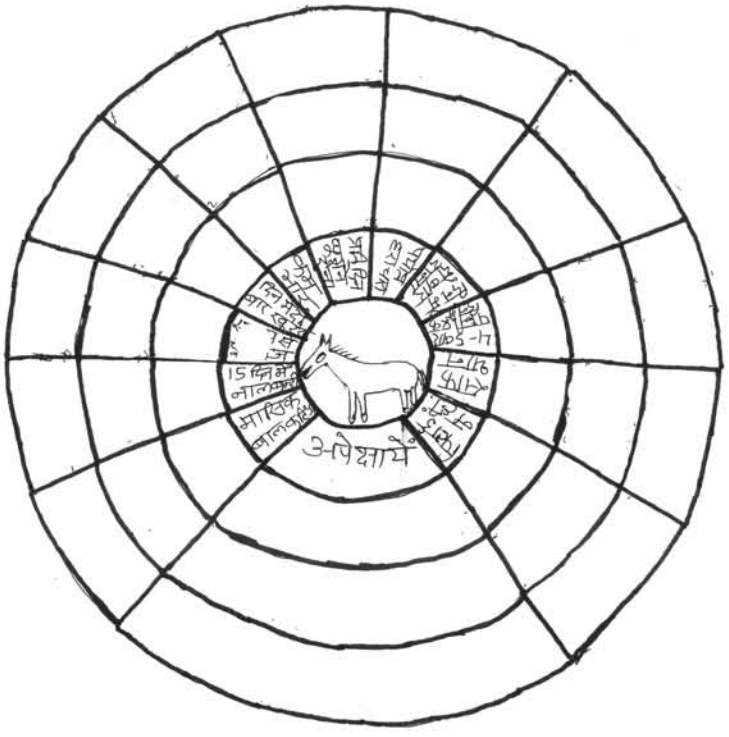

द्वितीय चरण	प्रतिभागियों से पूछें कि उनके पशुओं की अपेक्षाएँ कितनी हद तक/स्तर तक पूरी हो रही है, इसको दर्शाने हेतु अपेक्षाओं के घेरे के बाहर–बाहर एक और घेरा बनायें और प्रतिभागियों से पूछें कि वर्तमान में उनकी पशु सम्बन्धित सेवा का स्तर क्या है, इसके लिए अधिकतम मानक, मध्यम, कम, अतिकम को आधार मानकर अंक, गिट्टी, या अन्य सामग्री रख सकते हैं। (अधिकतम आवश्यकताएँ व अपेक्षाएँ पूरी हो रही है तो 10 गिट्टी रखें) 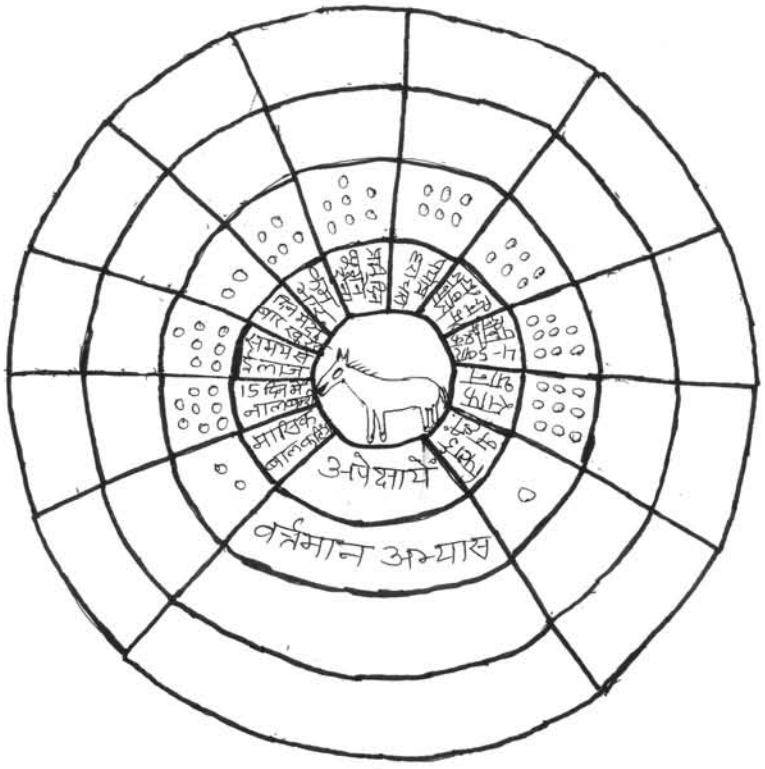 इसमें यहाँ यह देख सकते हैं कि लोग अक्सर वर्तमान में जितनी अपेक्षाएँ पूरी कर रहे है उसके आधार पर अंक/संकेतिक नम्बर का प्रयोग कर रहे है। समूह के साथ चर्चा करें कि क्या कारण है कुछ अपेक्षाओं के कम अंक है (समूह के साथ कम अंक पाने वाले बिन्दुओं पर कारण सहित चर्चा करें)
तृतीय चरण	एक बार सभी अपेक्षाओं पर नम्बर डाल देने के बाद समूह से चर्चा करें कि जब पशु की अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो रही है तो इसका पशु पर क्या प्रभाव पड़ेगा (जब मुद्दों पर 10 से कम अंक मिले हों) या यदि अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो रही है तो यह पशु पर क्या असर डालेगी ? प्रथम दो घेरे के बाहर एक तीसरा घेरा बनायें/खींचे तथा इन अपेक्षाओं के पूरा न होने के कारण पशु पर पड़ने वाले प्रभाव को कार्ड पर लिखकर या सांकेतिक रूप से लिखकर सम्बन्धित स्थान पर रखें।

	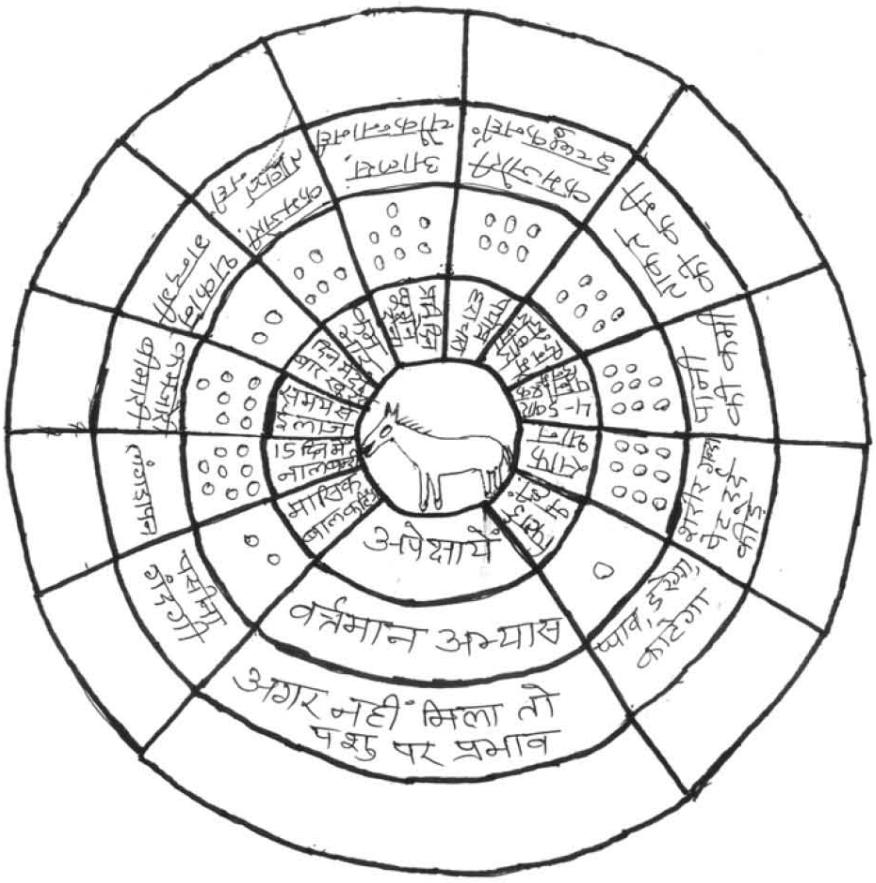
चतुर्थ चरण	यदि पशु की अपेक्षाएँ कुछ हद तक पूरी हो रही हो या पूर्ण रूप से पूरी हो रही हों तो एक चौथा घेरा तीसरे के बाहर–बाहर बनायें यह घेरा चरण तीन के प्रत्येक प्रभाव के जानवर पर कैसे देखा जा सकता है जैसे पशु के शरीर पर कोई चिन्ह (शारीरिक रूप में) या पशु के व्यवहार में (चित्र टी17देखें) को दर्शाने के लिए शारीरिक/व्यवहारिक चिन्हों का प्रयोग करें। समुदाय को इन शारीरिक चिन्हों या व्यवहारिक चिन्हों को विस्तार पूर्वक देखने के लिए सहयोग करें।
पंचम चरण	समूह से पूछें कि शारीरिक व व्यवहारिक चिन्हों को कैसे लिखा और नापा जा सकता है (पशु आधारित कल्याण के मानक) यह जोड़ें कि इन्हें कहॉ और कैसे देखेंगे। इन चिन्हों को नापने के महत्व पर चर्चा करें और यह बतायें कि पशु क्या महसूस कर रहे हैं और वे अपने मालिक से क्या चाहते हैं।
षष्ठी चरण	समूह से कहें कि वे चरण चार के सभी व्यवहारिक, शारीरिक चिन्हों को संकेतो, चित्र या शब्दों के माध्यम से चार्ट पेपर पर दर्शायें या किसी रजिस्टर मे नोट करें। उनके निर्णयों में जोड़ें कि वे इसे कैसे मापेंगे समूह के साथ एक समय पर सहमति बनवायें जिससे कि ट्रांजेक्ट वाक करके सभी पशुओं का निरीक्षण तय मानकों के आधार पर किया जा सके।

सुगमकर्ता हेतु टिप्पणी – यदि मैं घोड़ा होता

- सभी प्रतिभागियों को उनका स्वंय का दृष्टिकोण/समझ को प्रस्तुत करने हेतु प्रोत्साहित करें, एक ही व्यक्ति के अभ्यास कार्य में सहयोग को नजरअंदाज करें। समूह को उनके स्वंय के विचार व पारम्परिक पशु रख–रखाव सम्बन्धी आदतों पर चर्चा हेतु पर्याप्त समय दें।
- महत्वपूर्ण रख–रखाव की आदतों और कार्य के अभ्यास को आगे चर्चा व लागू करने हेतु नोट करें।
- एक विकल्प के रूप में डाइग्राम/इस खाके के उपर पशुओं की अपेक्षाओं को सांकेतिक चिन्हों/चित्र/तस्वीर के माध्यम से दर्शा सकते हैं और अभ्यास को चालू रख सकते हैं।

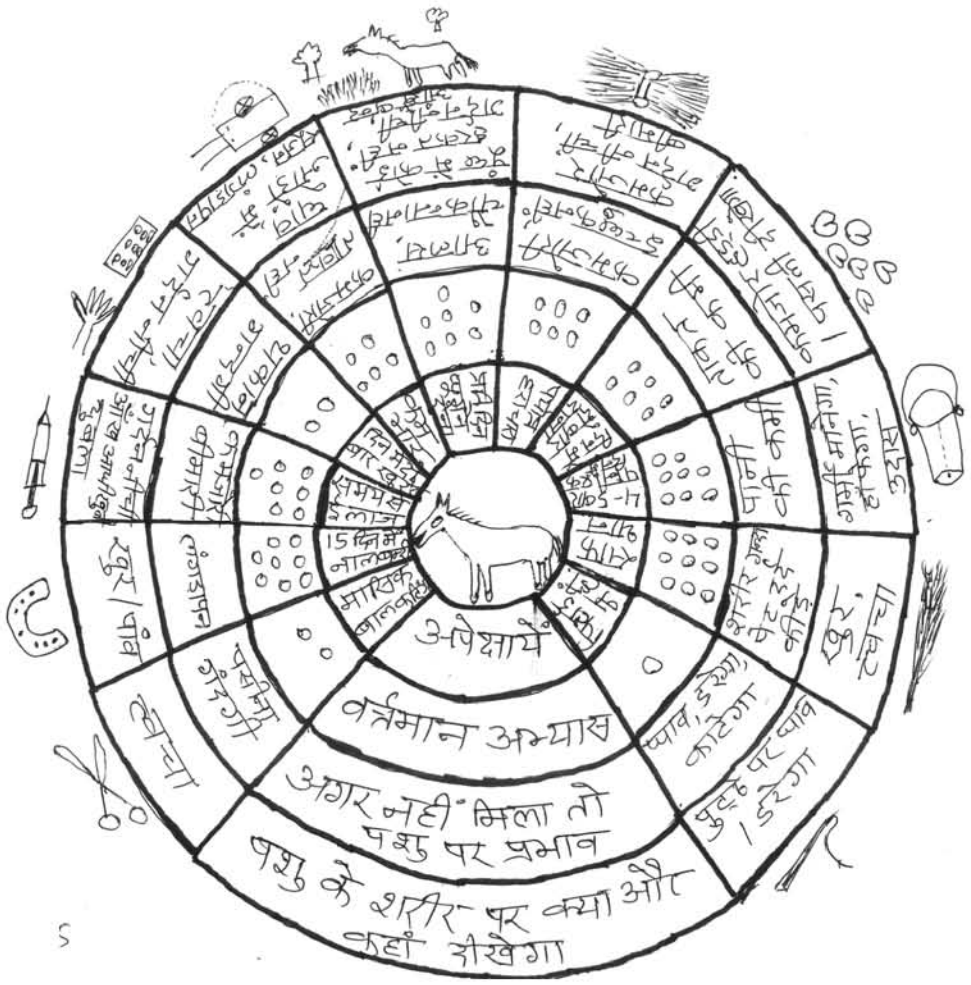

चित्र टी 17 यदि मैं घोड़ा होता का पूर्ण वृत्त चित्र है जो कि जनपद–मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

चित्र टी 17 यदि मैं घोड़ा होता का पूर्ण वृत्त चित्र है जो कि जनपद–मुजफ्फरनगर (उ0प्र0) के ग्राम बुढ़ाना के अश्व मालिकों द्वारा पूर्ण किया गया है, जिसके प्रथम चरण में सहभागी कल्याण आवश्यकता आंकलन को दर्शाया गया है (अध्याय–4 अवस्था–3)। इसमें कुल ग्यारह अपेक्षाएँ चिन्हित किये हैं जो पशु को पशु मालिक से अपेक्षएं है जैसे–पशु की पिटाई न करना, अस्तबल साफ सुथरा, 4 से 5 बार पानी पीने की भी सुविधा (एक दिन में) दाना युक्त चारा दिन में दो बार, पूरक हरा चारा, खुला में घूमने देना (चारा चरने हेतु छोड़ना) प्रत्येक पन्द्रह दिन पर नालबन्दी, माह में एक बार बाल काटना, कम वजन लादना, समय से इलाज । दूसरे चरण के घेरे में पशु मालिकों द्वारा वर्तमान में किये जा रहे अभ्यास/व्यवहार को अधिकतम 10 अंक के आधार पर दर्शाया गया है। वे पिटाई नहीं करते को सबसे कम अंक तथा अस्तबल की साफ–सफाई को सबसे ज्यादा अंक दिये हैं। चर्चा के दौरान समूह ने यह चिन्हित किया कि अपेक्षाओं का प्रभाव पशु पर नहीं मिल रहा है। लंगड़ापन, कमजोरी और घाव। अन्तोतगत्वा समूह ने यह चिन्हित किया कि पशु के शरीर पर चिन्ह तथा व्यवहारिक रूप में कोई चिन्ह अपेक्षाओं से मेल नहीं खाता/नहीं मिला इसको समूह द्वारा नोट करके पशु कल्याण ट्रांजेक्ट भ्रमण के दौरान प्रयोग किया गया

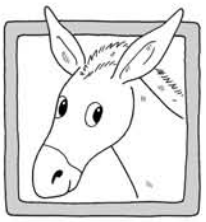

टी–18 मेरे पशु की कीमत कैसे बढ़े

टूल के विशय में :–

पशु के कल्याण हेतु प्रेरित करने के लिये कार्य करने वाले पशुओं के कल्याण को पशु की कीमत से जोड़कर तैयार किया गया यह एक नया तरीका है ।

उद्देश्य :–

मेरे पशु की कीमत कैसे बढ़े टूल (चित्र टी0 18 अ) पशु मालिक को प्रबन्धन और भोजन व्यवस्था को सुधारकर, अपने पशु की कीमत बढ़ाने के तरीकों को पहचानने में मदद करता है । इसे निम्न के लिये प्रयोग किया जा सकता है:–

- काम करने वाले पशुओं, जिनको कि अन्य पशुओं की तुलना में कम महत्वपूर्ण माना जाता है, की अनुमानित और महत्वपूर्ण कीमत का आँकलन करने हेतु
- एक स्वस्थ और खुश पशु कैसा दिखना चाहिए? इसकी जानकारी बढ़ाने हेतु
- काम करने वाले पशु के कल्याण को सुधारने हेतु, पशुमालिकों को प्रेरित करने हेतु।
- एक पशु के कल्याण स्तर में सुधार का मूल्यांकन करने के लिये पशु सम्बन्धी और संसाधन सम्बन्धी मानकों का विकास करने हेतु।
- पशुमालिकों के बीच एक प्रतिस्पर्धात्मक भावना शुरू करने हेतु जिससे वे प्ररम्भ से ही अपने पशु की कीमत को सबसे अधिक बढ़ाने की कोशिश करते हैं या पशु की स्थिति में सर्वाधिक सुधार करना चाहते है।

इसे आप कैसे प्रयोग करेंगे	
पहला चरण	एक समूह में पशुओं की वर्तमान कीमत और जिस कीमत में वह पशु खरीदा गया था ,उसके बारे में चर्चा प्रारम्भ करें। उस कीमत पर सभी समूह सदस्य की सहमति बनायें । सामान्यतया प्रत्येक पशु की कीमत पर सहमति बनाने की प्रक्रिया में बहुत बहस होती है। प्रतिभागियों से, प्रत्येक पशु मालिक का नाम और उसके पशु की वर्तमान कीमत एक चार्ट पेपर पर लिखने के लिये कहें और इस प्रकार से एक सूची तैयार करायें।
दूसरा चरण	किस पशु की कीमत सबसे अधिक है और किसकी सबसे कम है, इसका आकलन करने के लिये समूह को फैसिलिटेट करें और उन कीमतों को देने के कारणों के बारे में पूछें। प्रतिभागी – पशु की उम्र,नस्ल,आकार,पशु का व्यवहार, स्वास्थ्य और अन्य, पशु के मानकों ,पशु मालिक द्वारा प्रबन्धन या कार्य सम्बन्धी विषयों और बीमारी की रोकथाम सम्बन्धी कारणों को बता सकते हैं।इन सभी को एक चार्ट पेपर पर नोट कर लें।
तीसरा चरण	जब कारणों की सूची बन जाये , तब समूह के साथ प्रत्येक पशु को देखें (यह पशु कल्याण भ्रमण है ,टूल 22)। दूसरे चरण में सूचीबद्ध किये गये कारणों /मानकों के आधार पर प्रत्येक पशु के स्तर के आकलन हेतु समूह को प्रोत्साहित करें (देखें चित्र टी0 18 अ, चरण 2)। पुनः पशु भ्रमण के आधार पर पशु की स्थिति को देखते हुए पशु की निर्धारित कीमत पर चर्चा करें और सहमति बनायें।
चौथा चरण	प्रत्येक पशुमालिक से व्यक्तिगत रूप से पूछें कि वह भविष्य में अपने पशु की कीमत कितनी बढ़ाना चाहता है।प्रत्येक समूह के सदस्य को चिन्हित किये गये पशु के मानकों एवं प्रबन्धन सम्बन्धी कार्यों को सुधारकर ,अपने पशु की कीमत बढ़ाने हेतु एक कार्ययोजना बनाने हेतु प्रोत्साहित करें। अन्त में पूरे समूह की सहमति बन जानी चाहिये कि यदि इस कार्ययोजना को सफलतापूर्वक कियान्वित किया जाता है तो पशु की कितनी कीमत बढ़ेगी।
पांचवां चरण	प्रत्येक समूह की बैठक के दौरान व्यक्तिगत कार्ययोजना की प्रगति का मूल्यांकन करें। पशु की कल्याण की स्थिति में सुधार का मूल्यांकन करने हेतु समूह के साथ पशु भ्रमण को दोहरायें।

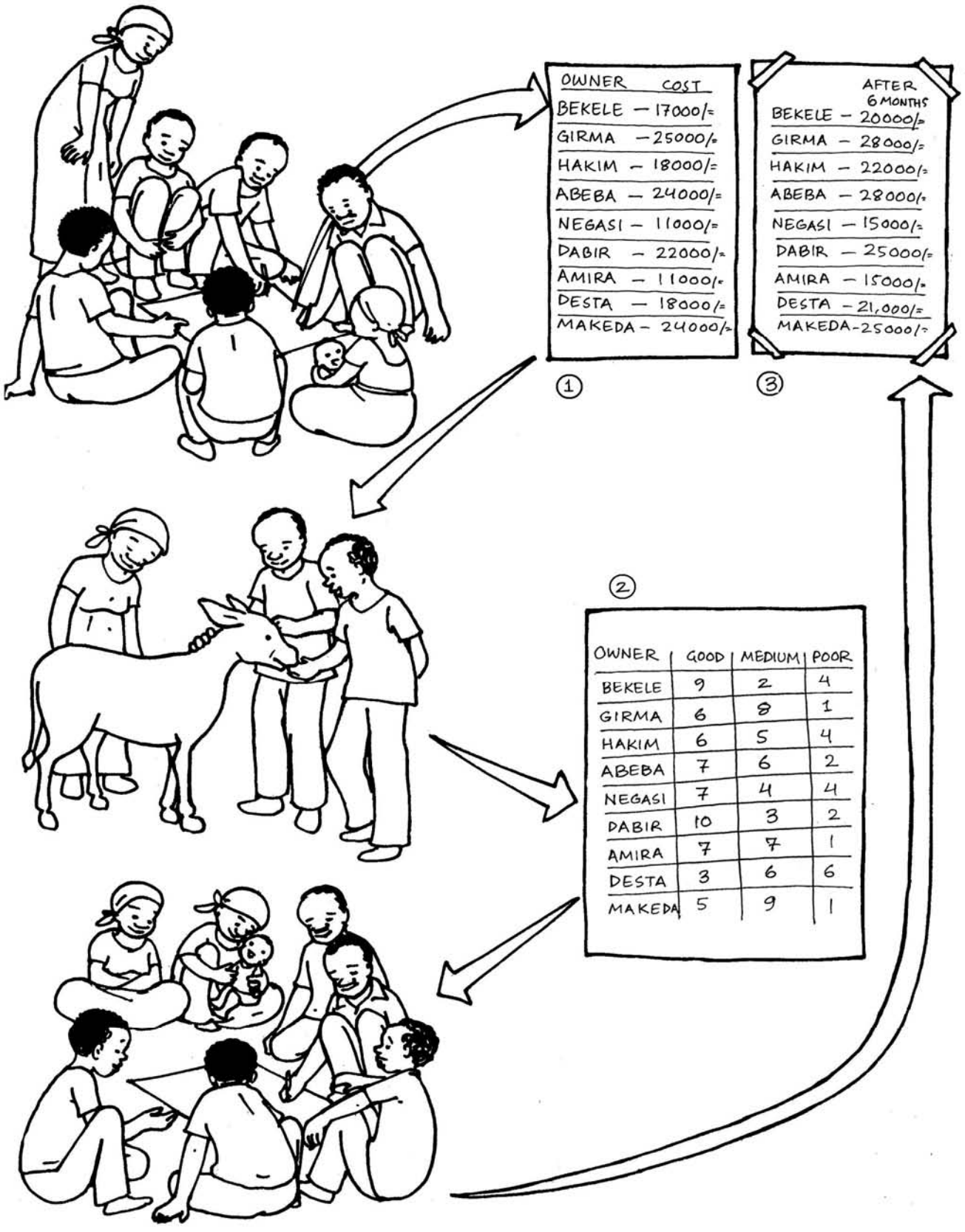

चित्र टी 18 अ पशु की कीमत बढ़ाने के अभ्यास का विभिन्न चरन

केस स्टडी N : मेरे काम करने वाले पशु की कीमत बढ़ी

स्त्रोत : देव काण्डपाल, ब्रुक भारत, जनपद सहारनपुर, अक्तूबर 2008

खुराना गांव में अश्वपालक हैं। और प्रत्येक के पास अपना एक घोड़ा है जिससे वे सवारी और सामान ढोने का काम करते हैं। समुदाय प्रेरक सियानंद द्वारा समुदाय से परिचय/मेल मिलाप के पश्चात् पशुमालिकों ने वर्ष 2007 में एक अश्व कल्याण समूह बनाया और लगातार बैठकें शुरू की। सियानंद, समूह को अपने पशुओं की स्थिति को सुधारने हेतु प्रेरित करना चाहते थे और एक मासिक बैठक के दौरान उन्होंने पशु की कीमत के बारे में चर्चा प्रारम्भ की। इसमें बहुत बहस और चर्चा हुई और अंत में प्रत्येक पशु की कीमत पर सभी की एक आम सहमति बनी।

सियानंद ने कीमतों में अन्तर और सबसे कम कीमत वाले पशु को क्यों सबसे कम और सबसे अधिक कीमत वाले पशु को क्यों सबसे अधिक मूल्य का बताया गया है, उनके कारणों का आंकलन शुरू किया। उस विश्लेषण से पशु मालिकों की समझ बनी कि किस प्रबन्धन सम्बन्धी कार्य से पशु की कीमत बढ़ती है और किससे घटती है। समूह द्वारा पशु के कार्यों जैसे – खुरैरा मालिश, स्थान सफाई,सुम सफाई, सुम की छंटाई, दाना चारा, और पिटाई की सूची बनाई गई। सियानंद ने पूछा –आप पशु में क्या देख सकते हो जिससे पता चल जाये कि पशुमालिक, पशु का सही रखरखाव कर रहा है या नहीं। समूह द्वारा पहचान करने की एक सूची तैयार की गयी जिसमें–सुम छंटे हों और चटखें न हों, साफ आंखें,चमकदार त्वचा, काठी और पेटी पर कोई जख्म न हो आदि–आदि। वे इस बात पर सहमत हुये कि इन पहचानों/मानकों की सूची को वे पशु की वर्तमान कीमत का पता करने में प्रयोग कर सकते हैं। तब वे प्रत्येक पशु को देखने के लिये गये और वास्तविक स्थिति को देखकर उस बैठक में तय की गयी कीमत से पशु की कीमत की तुलना करके, जहां संशोधन की आवश्यकता थी वहां कीमत बदल दी। प्रत्येक मानक के अनुसार पशु को अच्छा, मध्यम और खराब स्थिति के अनुसार अंक दिया गया।

एक बार आकलन पूरा होने के बाद प्रतिभागियों ने अच्छे, मध्यम और खराब मानकों को जोड़कर एक विवरण बनाया। समूह ने पाया कि बलवीर का घोड़ा, जिसकी कीमत सर्वाधिक आंकी गयी थी ,के 6 मानक अच्छे, 8 मध्यम और केवल 1 खराब था। दूसरे स्थान पर कीमत वाला घोड़ा मनोज का था जिसे 10 अच्छे, 3 मध्यम और 2 खराब मानक थे । (देखें चित्र टी018)।

इस प्रक्रिया से प्रत्येक पशुमालिक अपने पशु कल्याण को अंकों द्वारा गहनता से समझने और इसके पशु की कीमत से सम्बन्ध को समझकर विश्लेषण करके कल्याण हेतु अग्रसर हुए।

पशु मालिक का नाम	पशु की वर्तमान कीमत (भारतीय रुपयों में)	अच्छा	मध्यम	खराब
प्रेम	17,000	9	2	4
बलवीर	25,000	6	8	1
रामकुमार	18,000	6	5	4
सुभाष	24,000	7	6	2
बालेश	11,000	7	4	4
मनोज	22,000	10	3	2
पवन	11,000	7	7	1
गुरदास	18,000	3	6	6
कुलदीप	24,000	5	9	1
हरफूल	10,000	7	0	8
मेघराज	20,000	8	4	3

चित्र टी018 बी : पशु की वर्तमान कीमत के आधार पर ,कल्याण की स्थिति का विश्लेषण , ग्राम खुराना,जनपद सहारनपुर उत्तर प्रदेश, भारत, अक्टूबर 2008।

इस आधार पर प्रत्येक पशुमालिक अपने पशु की कीमत को बढ़ाने के लिये सहमत हुए और उन्होंने बढ़ायी जाने वाली कीमत को तय किया। सियानंद ने प्रत्येक पशुमालिक को उसके पशु की कीमत को बढ़ाने हेतु एक कार्ययोजना बनाने में मदद की। समूह लीडर ने सभी तय किये गये निर्णयों व कार्य बिन्दुओं को एक चार्ट पर नोट कर लिया और अगली बैठक में उस चार्ट के माध्यम से कार्यबिन्दुओं का मूल्यांकन किया गया।

छः माह बाद समूह द्वारा इस अभ्यास को पुनः दुहराया गया और उन्हीं पशु के शरीर सम्बन्धी मानकों के आधार पर प्रत्येक पशु का आकलन किया गया और पशु की कीमत निकाली।

पशुमालिकों ने पशुओं की स्थिति में सुधार देखा और सभी पशुओं की कीमत पहले से अधिक हुई। (देखें चित्र टी018सी)

पशुमालिक का नाम	पशु की कीमत (भारतीय रुपये में)	
	वर्तमान कीमत	6 महीने बाद की कीमत
प्रेम	17,000	20,000
बलकार	25,000	28,000
रामकुमार	18,000	22,000
सुभाष	24,000	28,000
वालेश	11,000	15,000
मनोज	22,000	25,000
पवन	11,000	15,000
शुरदास	18,000	21,000
कुलदीप	24,000	25,000
हरफूल	10,000	12,000
भेषराज	20,000	23,000

चित्र टी018 सी : कल्याण की स्थिति में सुधार के कारण पषु की कीमत में वृद्धि, ग्राम खुराना,जनपद सहारनपुर उत्तर प्रदेश, भारत, अक्तूबर 2008।

इस टूल का नाम **मेरे पशु की कीमत कैसे बढ़े** दिया गया और इसे अनेक पशुमालिकों के समूहों को अपने पशु के कल्याण स्तर को बढ़ाने के लिये प्रेरित करने हेतु प्रयोग किया गया। काम करने वाले पशुओं के प्रति लोगों की भावना और उसकी जरूरत सम्बन्धी जानकारी, सामूहिक दवाब के माध्यम से बढ़ती है और पशु की कीमत में वृद्धि भी इसका एक महत्वपूर्ण घटक है।

फैंसिलिटेटर नोटः– मेरे पशु की कीमत कैसे बढ़े

- हम इस अभ्यास में पशु के लिये जरूरी प्रबन्धन सम्बन्धी बदलावों और इसमें कितना समय लगेगा उसकी सूची तैयार करने हेतु समूह को प्रोत्साहित करके इसका विस्तार करते हैं।
- पशुमालिक यह भी तय कर सकते हैं कि उनके द्वारा तैयार की गयी कार्ययोजना का मूल्यांकन, समूह के अन्य सदस्यों द्वारा किया जाये। (कभी–कभी समूह के तीन या चार सदस्य सभी कार्य बिन्दुओं को देख सकते हैं)
- हमारे अनुभव के अनुसार ,प्रायः समूह इस कार्ययोजना का मूल्यांकन प्रत्येक माह की बैठक में करते हैं। वे पशु कल्याण भ्रमण (टूल 22) के दौरान भी पशु में हुए बदलावों को देखते हैं क्योंकि उनके पशु की कीमत में वृद्धि से वे अत्यधिक उत्साहित होते हैं।

टूल–19 पशु की भावना विश्लेषण

टूल के विषय में :–

पशु की भावना अभ्यास एक नया टूल है जो कि काम करने वाले पशुओं के निजी जीवन के अनुभवों को प्रकट करता है। यह टूल विश्लेषण करता है कि पशु कैसा महसूस करता है या इसके मानसिक कल्याण की स्थिति क्या है? (देखें अध्याय–2)। उदाहरण के लिये खुश, दुखी, आराम, तनाव, उदास या भय वाली स्थिति में पशु कैसा महसूस करता है और पशु के ये हाव भाव उस के व्यवहार में किस प्रकार से देखे जा सकते हैं? इस टूल को अलग से भी प्रयोग किया जा सकता है और पशु कल्याण भ्रमण (टूल–22) के साथ भी किया जा सकता है।

उद्देश्य :–पशु की भावना अभ्यास (चित्र–19) विशेष रूप से पशु कल्याण की मानसिक स्थिति को पता लगाने के लिये विकसित किया गया है, क्योंकि उपलब्ध पी0 आर0 ए0 टूल इसे शामिल नहीं करते हैं। इस क्रम/अध्याय में अन्य टूल जैसे यदि मैं घोड़ा होता (टूल–17) और रख रखाव विश्लेषण (टूल –21), पशु के कल्याण हेतु भौतिक पक्षों जैसे चारा–दाना, पानी, रहने का स्थान, बीमारी ,जख्म और उनके पशु के व्यवहार पर प्रभाव को ही देखते हैं।

हमने पाया कि पशु की भावना अभ्यास निम्न के लिये बहुत प्रभावी है–

- पशु मालिकों, पशु को काबू करने वालों और देख भाल करने वालों को इस वास्तविकता के बारे में कि पशु भावना होती है और इस के बारे में संवेदनशील रहना चाहिए।
- प्रदर्शित करने हेतु कि पशु अपनी भावनाओं को अपने व्यवहार या शारीरिक अवस्था से व्यक्त करता है जिसे लोग समझ सकें।
- पशु के हावभाव के लक्षणों की पहचान हेतु जिस से लोग अपने पशु की स्थिति का आंकलन कर सकें।
- काम करने वाले पशु की भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करने वाले सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों का विश्लेषण करने हेतु और चर्चा करने हेतु कि किस प्रकार से नकारात्मक स्थिति को सुधारा जा सकता है?
- पशु कल्याण स्तर को सुधारने के किये पशु मालिक या समूह को प्रेरित करने हेतु।

इसे आप कैसे प्रयोग करेंगे	
पहला चरण	पशु की भावना अभ्यास को छोटे या मध्यम आकार के समूह में सब से अच्छी तरह से किया जा सकता है। पशु मालिकों के साथ इस चर्चा के साथ शुरुआत करें कि पशु उनके लिये क्या कार्य या किस प्रकार के कार्य करता है? इन कार्यों के लिये वे अपने पशु को कब और कहां प्रयोग करते हैं ? इस प्रकार के कार्यों से वे कितना कमाते हैं?
दूसरा चरण	लेगों से पूछें कि वे अपने पशु को स्वस्थ और खुश रखने के लिये क्या करते हैं ? पशु के विभिन्न हावभाव, शारीरिक भाषा और व्यवहार पर एक सहमति बनायें जिसे कि वे अपने पशु के महसूस करने के विषय में समझते है। हमारे समुदाय द्वारा एक उदाहरण दिया गया है कि काम करने वाले खच्चर अपने कानों को चलाते रहते हैं, आंखों को चलाते रहते हैं और अपने सिर और गर्दन की स्थिति को बदलते रहते हैं, यदि वे खुश या दुखी दिखयी देते हैं। यह देखने के लिये कि वे खुश हैं या दुखी, प्रतिभागियों को पशु के व्यवहार के अधिक से अधिक पहचानों/लक्षणों पर चर्चा करने हेतु प्रोत्साहित करें।
तीसरा चरण	पशु व्यवहार के इन लक्षणों को खुश पशु , दुखी पशु और न खुश न दुखी अर्थात् प्राकृतिक व्यवहार की श्रेणियों में बांटकर एक आयत/मैट्रिक्स में लिख लें। (देखें चित्र टी0–19) इस उदाहरण में एक खुश दिखायी देने वाला खच्चर अपने सिर और गर्दन को, शरीर के स्तर से ऊपर रखता है, कानों को आगे रखता है और ऑखों को चलाता रहता है। यदि सिर और कान मध्यम स्थिति में हों तो वह सामान्य व्यवहार प्रदर्शित करता है और यदि सिर और

	गर्दन पीठ के स्तर से नीचे हों, ऑखें लगभग बन्द हों और कान पीछे हों तो पशु दुखी या उदास है।
चौथा चरण	इस अभ्यास को समूह की बैठक के दौरान पशु की भावनाओं के बारे में समझ बनाने के लिये किया जा सकता है या पशु भ्रमण (टी0–22) के साथ भी संलग्न करके किया जा सकता है। यदि आप पशु भ्रमण के साथ इसे करते हो तो पहले ऊपर के तीनों चरणों को पूरा करें । इसके बाद एक मैट्रिक्स में ऊपर की ओर पशु के व्यवहार करने के लक्षणों को लिखें तथा नीचे की ओर पशु मालिकों के नाम लिखें। अब आप या तो अंक दे सकते हो या ट्रैफिक लाइट के रंगों से प्रदर्शित कर सकते हो। खुश के लिये हरा मध्यम या सामान्य के लिये पीला और दुखी के लिये लाल। प्रत्येक पशु को देखने के लिये समूह के साथ जायें और उस के व्यवहार का आंकलन करें। प्रत्येक पशु की शारीरिक भाषा/व्यवहार के बारे में सभी लोगों के बीच सहमति बनाने हेतु प्रत्येक पशु की भावनाओं के बारे में विस्तृत चर्चा करें।
पंचवां चरण	पशु भ्रमण पूरा होने के पश्चात पुनः एक साथ बैठें और चर्चा करें कि किन–किन कारणों /कारकों से पशु का व्यवहार प्रभावित होता है, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों और इसके पीछे कारणों को निकालें । समूह चर्चा से निकाले गये बिंदुओं का विवरण तैयार करें और प्रत्येक पशु मालिक और समूह के द्वारा अपने पशु को खुश रखने के लिये किये जाने वाले कार्यों की कार्य योजना तैयार करें। पुनः पशु के व्यवहार को परखने के लिये इस अभ्यास को दुहराने हेतु एक तिथि तय कर लें।

फैसिलिटेटर नोट–पशु भावना अभ्यास

- अलग–अलग तरीके के काम करने वाले और अलग–अलग पशु प्रजातियों के लिये व्यावहारिक हावभाव और शारीरिक भाषा अलग–2 हो सकती है। किसी एक सी ही भावना को दर्शाने वाली शारीरिक भाषा एक से अधिक प्रकार की हो सकती है। प्रतिभागियों को इस विषय पर चर्चा हेतु प्रोत्साहित करें

- यह अभ्यास आदमी के समान ही एक समझदार पशु को जो कि यह प्रदर्शित करता है कि किसी अमुक समय उसकी स्थिति क्या है, शाबासी देने/तारीफ करने में समूह को मदद करता है। यह दर्शाता है कि लोग पहचान सकते हैं कि उनका पशु कैसी स्थिति में है या कैसा महसूस कर रहा है। यह अभ्यास पशु की भावनाओं को प्रभावित करने वाले कार्य बिन्दुओं पर कार्य करने हेतु पशु की अच्छी देखभाल करने के लिये समूह को प्रेरित करता है।

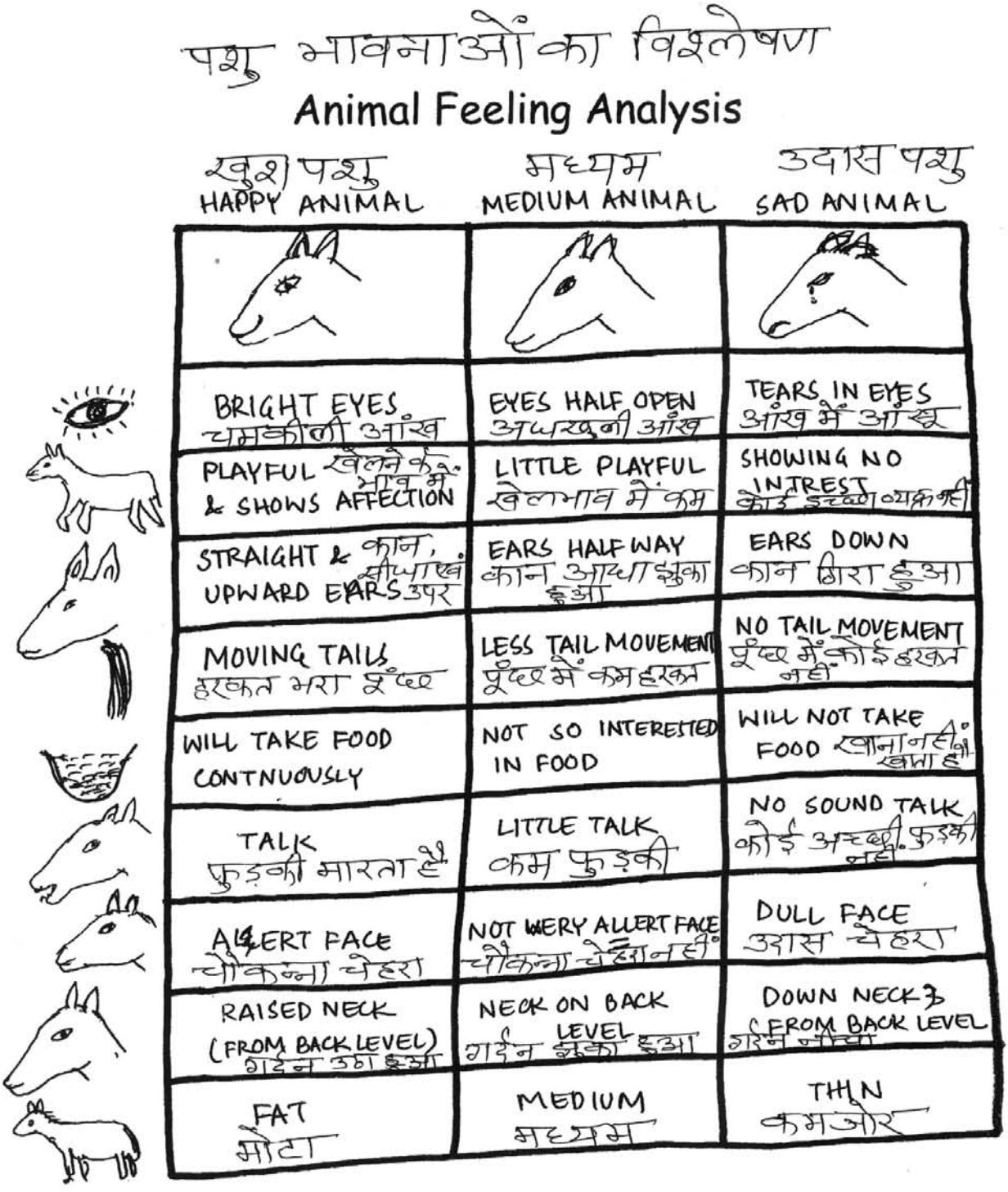

चित्र टी 19 पशु भावनाओं का विश्लेषण

जैसा कि पी0 डब्ल्यू0 एन0 ए0 के पहले चरण में बताया गया है कि (अध्याय –4, अवस्था–3)।
उत्तर प्रदेश के जनपद गाजियाबाद के खिन्दौड़ा गांव में खच्चर रखने वाले पशु मालिकों के समूह ने 9 मानक निकाले जिनको उन्होंने अपने पशु को खुश और दुखी दिखायी देने के आंकलन करने में प्रयोग किया। इन्हीं मानकों के आधार पर सामूहिक रूप से प्रत्येक पशु को अंक दिये गये जिसमें खुश पशु के लिये 3 कंकड़, मध्यम के लिये 2 और दुखी के लिये 1 कंकड़ रखा गया। आंकलित किये गये समस्त पशुओं में से केवल एक पशु का स्कोर सभी मानकों में 3 आया।
पशु मालिकों ने चर्चा की कि यह खच्चर क्यों इतना खुश है जबकि अधिकांश इतने खुश नहीं थे। समूह चर्चा के उपरान्त, समूह अन्य पशुओं को खुश रखने के लिये कुछ कार्य बिन्दु तय करने हेतु तैयार हुआ।

टूल–20 पशु का शारीरिक मानचित्रण

पशु के शरीर के अंगों का मानचित्रण, शरीर पर जख्म चित्रण, पशु सम्बन्धी मानक मानचित्रण

टूल के विषय में :– पशु के शरीर का मानचित्र, काम करने वाले पशु के शरीर के अंगों , उनके कार्यों और शरीर पर जख्म या बीमारी से प्रभावित किसी अंग को दर्शाते हुए पशु का चित्र होता है। यह पशु के शरीर या शरीर के किसी भाग की स्थिति, जैसा कि व्यक्तिगत पशुमालिक या समुदाय के समूह की राय होती है, को प्रदर्शित करता है।

उद्देश्यः– पशु के शरीर का मानचित्र, पशुमालिकों के अपने पशु के शरीर के अंगों एवं प्रत्येक अंग के कार्य के बारे में पूर्वाग्रहों को व्यक्त करने हेतु एक उपयोगी अभ्यास है। क्योंकि इन्हीं पूर्वाग्रहों/विचारों से ही यह सुनिश्चित होगा कि वे जख्म, बीमारी या अन्य पशु कल्याण में बाधक समस्याओं को कैसे हल करते हैं? इसे पशु के शरीर के अंगों के स्थानीय नामों को जानने के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है।
हमने अलग –2 उदाहरणों/अभ्यासों को शामिल किया है जिन्हें हम अक्सर समुदाय के साथ करते हैं।

पशु का शारीरिक चित्रणः– यह मूल चित्र, पशु के शरीर के अंगों और वे किस प्रकार कार्य करते हैं, को प्रदर्शित करता है। इसे इस प्रकार के प्रश्नों जैसे कि–समूह को क्या लगता है कि एक स्वस्थ व सामान्य पशु को कैसा दिखना चाहिए? को जानने हेतु प्रयोग किया जा सकता है।
हम पाते हैं कि उन स्थानों में, जहां पर काम करने वाले सभी पशुओं की एक जैसी समस्यायें होती हैं, यह टूल उपयोगी है, जैसे कि– पशु का दुबला होना, क्योंकि पशुमालिक यह मान सकते हैं कि यह आम बात है न कि यह अस्वस्थ पशु है। शारीरिक मानचित्र इस विषय पर चर्चा प्रारम्भ कर सकता है कि एक स्वस्थ पशु सामान्यतया कैसा प्रतीत होता है/दिखता है ?
पशु के शरीर पर जख्म–चित्रण (चित्र –टी0 20 बी):–यह विशेष रूप से शरीर पर जख्मों या परेशानियों और उनके कारणों को प्रदर्शित करता है।
पशु सम्बन्धी मानक चित्रण (चित्र – टी0 20 स) :–

यह अभ्यास प्रायः पशु कल्याण में समस्याओं की रोकथाम और किन्हीं बीमारियों या चोट के प्राथमिक उपचार के विषय में चर्चा आरम्भ करने के लिये प्रयोग किया जाता है। इसे अन्य अभ्यासों को प्रारम्भ करने के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है जैसे कि :–

- **पशु भ्रमण** (टूल –22) के अन्तर्गत, पशुमालिक प्रत्येक अंग का आकलन किस प्रकार करेंगे, इसका पता लगाने हेतु (पशु कल्याण सम्बन्धी मानक)।
- पहचान की गयी कुछ समस्याओं के बारे में अधिक जानकारी हेतु ,जैसे कि जख्म और दस्त आदि हेतु घोड़े की समस्यायें अभ्यास (टूल –25)।

इसे आप कैसे करते हो	
पहला चरण	प्रतिभागियों से जमीन पर या चार्ट पर घोड़े का चित्र बनाने के लिये कहें। इसमें पशु के शरीर के प्रत्येक अंग को चिन्हित करें और स्थानीय भाषा में प्रत्येक अंग का नाम लिखें। प्रत्येक अंग के कार्य के बारे में चर्चा प्रारम्भ करें। यह पशु के शरीर के अंगों का चित्रण है।
दूसरा चरण	पहले चरण के अनुसार की गयी चर्चा के आधार पर सहमति बनायें कि शरीर के अंगों पर क्या –**2** दर्शा सकते हैं? उदाहरण के लिये – यह पूछें कि प्रायः शरीर पर जख्म कहां–कहां होते हैं या किसी अमुक बीमारी में शरीर पर किस प्रकार के लक्षण दीख सकते हैं? इन लक्षणों को पशु के शरीर के चित्र पर प्रतीकों द्वारा दर्शाने के लिये प्रतिभागियो को प्रोत्साहित करें।

फैसिलिटेटर नोट :– पशु का शारीरिक चित्रण

- हमारा अनुभव है कि पशु का शारीरिक चित्रण अभ्यास कम भीड़ वाले इलाके में करना सबसे उपयुक्त रहता है जिससे कि बाहरी देखने वाले लोग, पशुमालिकों के ध्यान में बाधा न डालें।
- आप इस टूल को, पशु के शरीर के अंगों के बारे में प्रचलित मिथकों के विषय में जानकारी हेतु भी कर सकते है।
- भारत में हमने इस अभ्यास को लकड़ी के टूटे हुए घोड़े के माध्यम से किया है। हम लकड़ी के घोड़े के टुकड़ों को लेकर समुदाय के साथ चर्चा प्रारम्भ करते हैं जिसे पशुमालिक बाद मे एक साथ जोड़ देते हैं और यह पूरा घोड़े का चित्र बन जाता है। यह खेल बच्चों के साथ पशु कल्याण की चर्चा करने में भी बहुत सफल रहा है।

चित्र टी0 20 अ में जलालाबाद गांव के 10 पशुमालिकों द्वारा जमीन पर लकड़ी के टुकड़े और रंगोली से पशु का शारीरिक चित्रण दर्शाया गया है। चर्चा इस प्रश्न से आरम्भ की गयी – पशु खरीदते समय आप पशु के किस–किस अंग को देखते हो ? एक बार जब सभी सदस्यों ने अंगों के नाम बताये तब उन्हें प्रत्येक अंग में होने वाली समस्या के विषय में चर्चा करने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

पशुमालिकों ने उन सभी जगहों को दर्शाया जहां जख्म पाये जाते हैं और उन जख्मों के कारण दर्शाते हुए चित्र टी0 20 बी पशु के शरीर पर जख्म चित्रण तैयार किया। इसके बाद एक बैठक में दो चित्र पुनः बनाये गये और समूह में चर्चा हुई कि यदि पशु की स्थिति खराब होगी तो प्रत्येक शरीर के अंग में क्या दिखेगा/कैसा दिखेगा। इस अभ्यास के द्वारा पशु के कल्याण के आंकलन हेतु एक लम्बी सूची प्राप्त हुई। चित्र. 20 स और इन्हें पशु भ्रमण (टी0 22) के दौरान पशु के आंकलन करने के लिये प्रयोग किया गया।

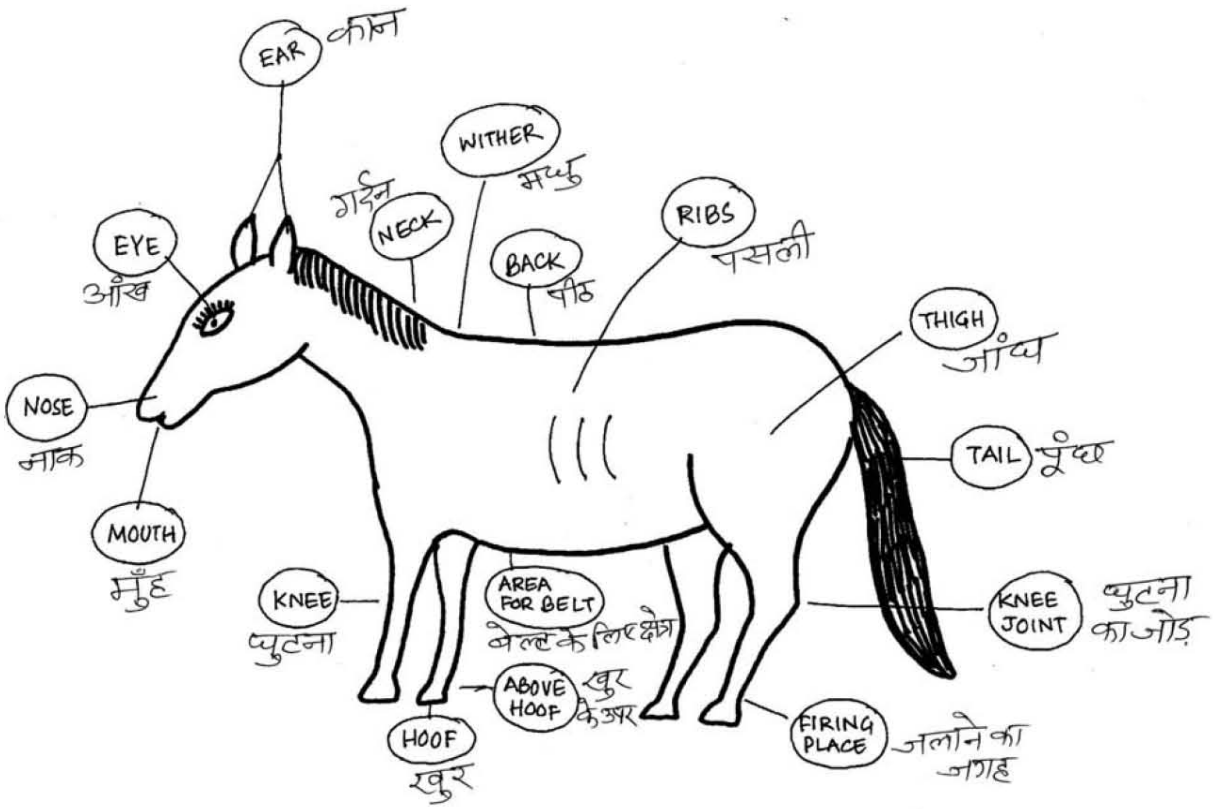

चित्र टी 20 अ पशु का शारीरिक चित्रण जिसमें शरीर के विभिन्न अंगों को दर्शाया गया है, जलालाबाद, सहारनपुर

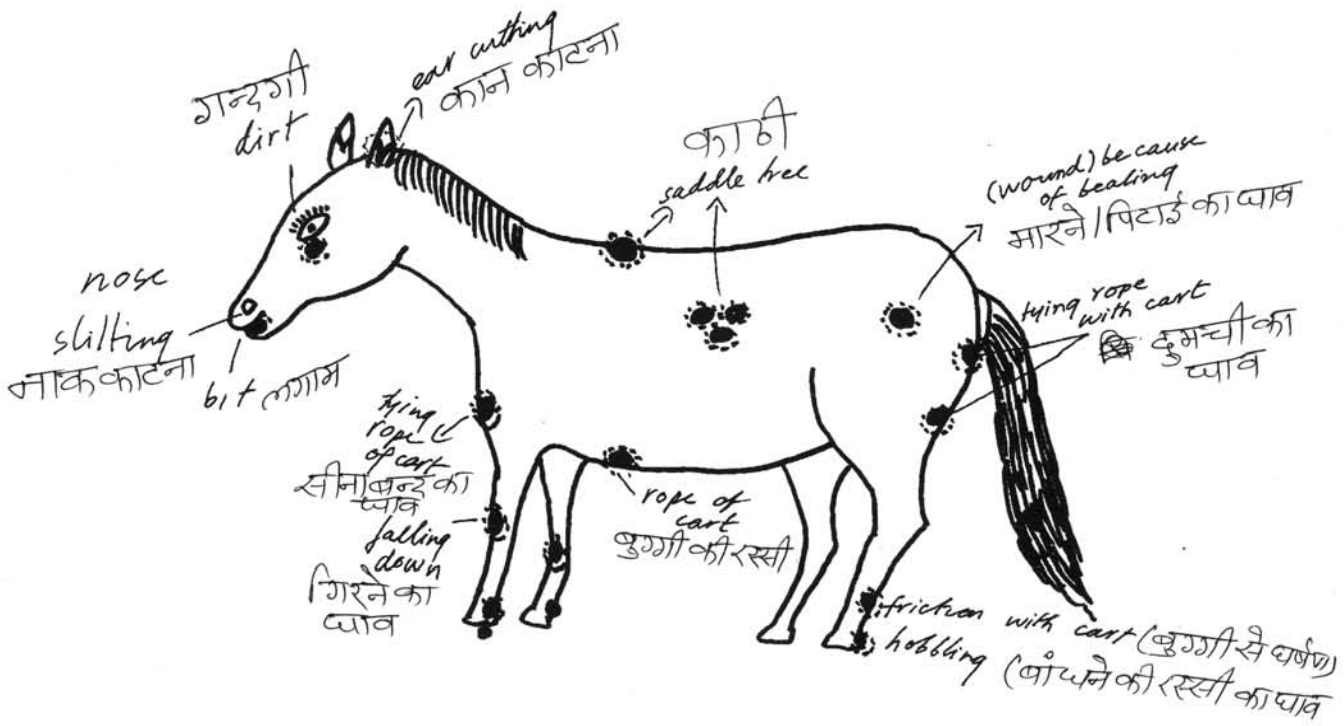

चित्र टी 20 ब पशु शरीर पर जख्म का चित्रण इसमें जख्म एवं उनके कारणों को दर्शाया गया है

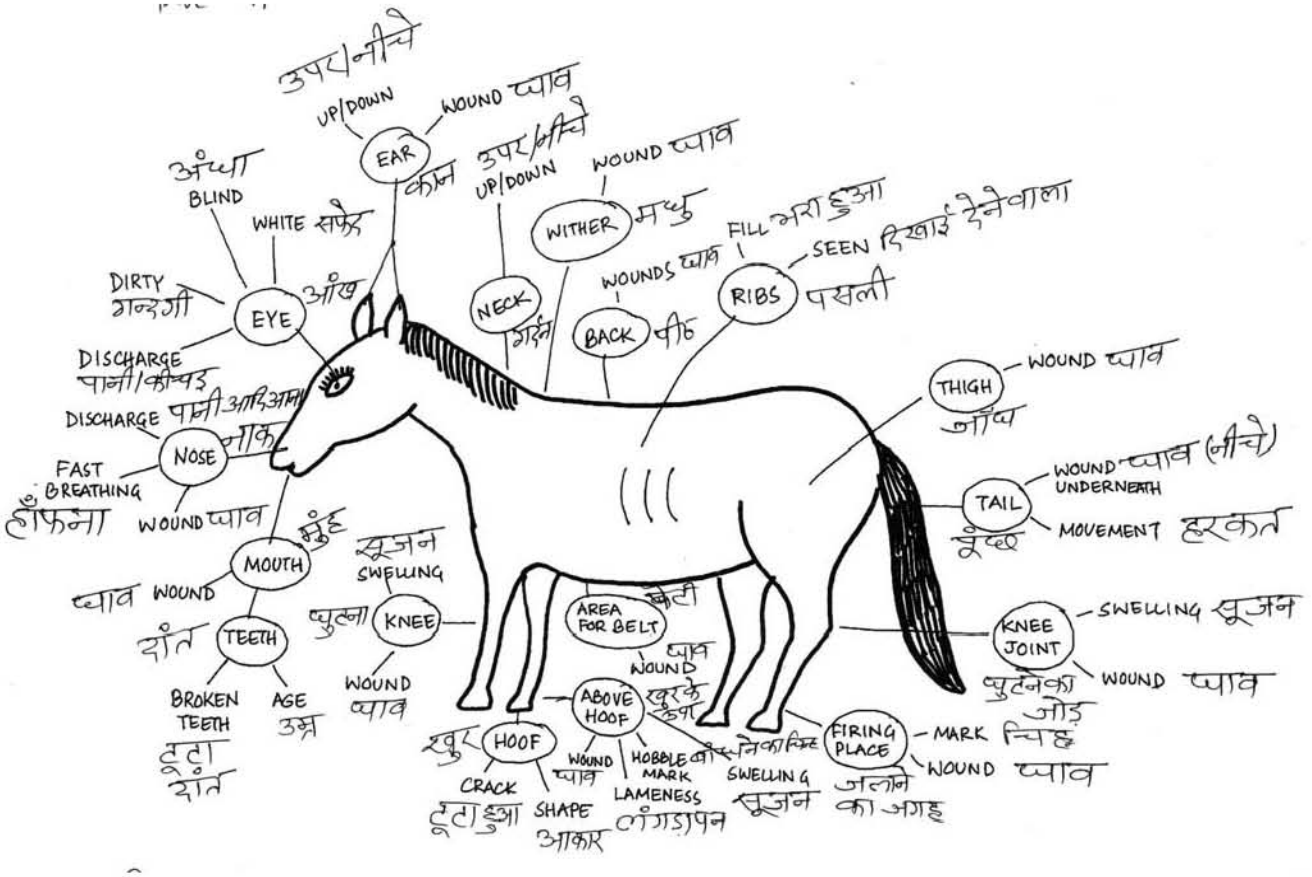

चित्र टी 20 स शारीरिक चित्रण से पशु संबंधी मानकों को दर्शाना

टी–21 पशु रखरखाव विश्लेषण

टूल के बारे में

पशु कल्याण रखरखाव विश्लेषण, पशु के प्रति वर्तमान रखरखाव सम्बन्धी कार्यों एवं गतिविधियों को प्रदर्शित करने हेतु तैयार किया गया एक टूल है जो कि काम करने वाले पशुओं की खराब स्थिति होने से बचाता है। यह कल्याण की गतिविधियों में किसी भी कमी की पहचान कराता है और इनके कारणों का पता लगाता है। यह एक अन्य टूल से (जयकरन 2007) से विशेष रूप से पशु को केन्द्र में रखकर विश्लेषण हेतु तैयार किया गया है।

टूल का उद्देश्य

पहले 2 चरण यदि मैं घोड़ा होता (टूल–17) की भांति होता है। वस्तुतः पशु के रखरखाव विश्लेषण में पशु की अपेक्षाओं को पूरा न कर पाने वाले कारणों का विश्लेषण अधिक गहराई से किया जाता है। यह समुदाय को अपने पशु के प्रति खराब स्थिति वाले कारणों को दूर करने हेतु रखरखाव और प्रबन्धन सम्बन्धी कार्यों में सुधार करने के लिये एक विस्तृत कार्ययोजना बनाने में मदद करता है। पशु रखरखाव विश्लेषण को एक गोले की आकृति से चित्र टी 21 ए या एक मैट्रिक्स की आकृति मे चित्र टी 21 बी में किया जा सकता है।

इसे आप कैसे करेगें ?	
पहला चरण	समूह से पूछें कि यदि आप एक घोड़ा होते (या गधा, खच्चर, ऊँट, बैल) तो अपने मालिक से क्या अपेक्षायें करते? यह प्रश्न लोगों को दुनिया के पशुओं की नजरों से देखने का प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित करता है। जमीन पर या चार्ट पर एक बड़ा गोला बनायें और बीच में पशु का चित्र बनायें । यदि आपके पास पशु का चित्र शीट पर उपलब्ध है तो बीच में इसे रख सकते हैं। पशु की सभी अपेक्षाओं को चित्र या संकेतों के माध्यम से गोले की बाहरी परिधि के किनारे पर दशायें (या बीच से सबसे पास वाले गोले पर दशायें ,यदि आप बीच केन्द्र से बाहर की ओर जाना चाहते हो)। और अधिक जानकारी के लिये यदि मैं घोड़ा होता (टी 17) पर एक नजर डालें।
दूसरा चरण	लोगों से पूछें कि वर्तमान में रखरखाव सम्बन्धी कार्यों के माध्यम से पशु की किन अपेक्षाओं को कितना पूरा कर पाते हैं ? पहले गोले के अन्दर एक दूसरा गोला खींचें और पूरा 10 के स्कोर को मानते हुए 10 कंकड़ या बीज आदि से कितना कर पाते हैं में 10 में से रखें । यहां हम देखते हैं कि लोग प्रायः इस हिसाब से स्कोर रखते हैं कि वे अपने पशु के लिये कितना और पूरा कर सकते हैं/प्राप्त कर सकते हैं? कम अंक वाली अपेक्षाओं के कारणों का विश्लेषण करने हेतु समूह से चर्चा करें। (अपेक्षायें जो पूरी नहीं हो रहीं हैं)
तीसरा चरण	सभी खानों में अंक रखने के बाद चर्चा प्रारम्भ करें और पशु की अपेक्षा और पशुमालिक द्वारा किये जा रहे प्रबन्धन सम्बन्धी कार्यों के बीच कमी होने पर उसके कारणों का विश्लेषण करें। इससे उन कारणों का पता लगेगा जिससे कि लोग उस संसाधन या सेवा/कार्य को क्यों नहीं दे पा रहे हैं या पशु को कल्याण को प्रभावित करने वाले कारकों या वातावरण से सुरक्षा क्यों नहीं कर पा रहे हैं। समूह को रखरखाव हेतु 3 या चार सबसे महत्वपूर्ण कारकों को पहचानने में सहायता करें उनको पहले दो गोलों के अन्दर 3 या 4 गोले बनाकर रखें।(देखें चित्र टी 21 ए) । लोग इन कारणों को चिन्हित कर सकते हैं कि • इस चर्चा से पहले उन्हें पशु की इन अपेक्षाओं की जानकारी नहीं थी। • हमें इन अपेक्षाओं को पूरा करने की जानकारी नहीं थी। • इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये हमारे पास साधन/संसाधन नहीं हैं। • इन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये हमारे पास समय नहीं हैं। • इन अपेक्षाओं को पूरा करना उनकी आदत में नहीं या इनको हमने प्राथमिकता नहीं दी। चित्र 21 ए में इसे लापरवाही नाम से लिखा गया है।
चौथा चरण	प्रत्येक अपेक्षा के लिये चरण 2 से बचे हुए कंकड़ों का प्रयोग करें । रखरखाव में कमी हेतु जिम्मेदार तीसरे चरण के अनुसार प्रत्येक कारण को अंक दें। उदाहरण के लिये यदि "यदि मैं गधा होता" की एक अपेक्षा यह है कि मुझे अच्छी गुणवत्ता का चारा दाना चाहिये। 10 मे से 4 कंकड़ वर्तमान में कर रहे वाले गोले में रखे जा सकते हैं। शेष बचे हुये कंकड़ों को इस अपेक्षा में गैप के कारणों के लिये रखा जायेगा , 1 कंकड जानकारी नही के लिये ,3 कंकड़ आदत में नहीं या लापरवाही के लिये और 2 कंकड़ संसाधन की कमी के लिये रखे जायेंगे। आप देखेंगे कि इस पर सहमति बनाने के लिये समूह के बीच अत्यधिक बहस होती है।
पांचवां चरण	जब सभी गोलों की स्कोरिंग पूरी हो जाये तब समूह से पूछें कि उनके काम करने वाले पशु के कल्याण को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारण कौन से हैं? उनके पशु के रखरखाव को पूरा करने व कल्याण को बढ़ाने के लिये सम्भव विकल्पों का आकलन करें, यह व्यक्तिगत या सामूहिक हो सकता है। जिन मुद्दों पर काम करने के लिये समूह सहमत हो उनको पशु कल्याण कारण और प्रभाव विश्लेषण (टूल टी0 26) और सामूहिक कार्ययोजना (देखें अध्याय–4, अवस्था–4) के माध्यम से क्रियान्वित करें।

फैसिलिटेटर हेतु टिप्पणी :– पशु कल्याण रखरखाव विश्लेशण

- इस अभ्यास में काफी समय लग सकता है। अतः समूह के साथ पहले से ही बात करके उचित समय निकालकर इसे करने के लिये बैठें।
- अपनी ओर से कोई उदाहरण न देते हुए सभी को अपनी–अपनी राय देने हेतु प्रोत्साहित करें। हमारे अनुभव के अनुसार इस अभ्यास को करने में रखरखाव सम्बन्धी विश्लेषण में, समुदाय के कारणों की जगह सुगमकर्ता के अपने रखरखाव के गैप संबंधी कारण के आने का ज्यादा खतरा है। इस अभ्यास को सुगमकर्ता द्वारा संचालित होने से बचाने का ध्यान रखें।

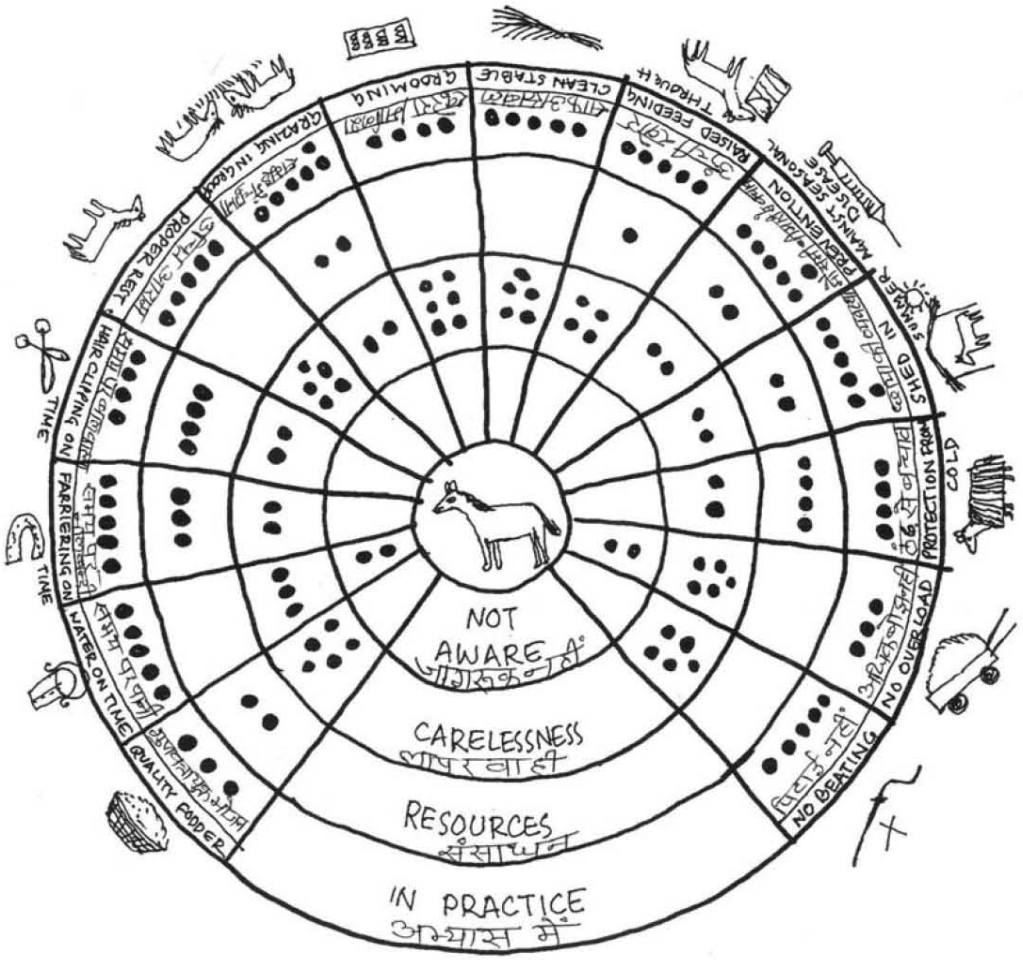

चित्र टी 21 अ पशु कल्याण संबधी अभ्यासों में गैप का विश्लेषण

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के सोना अर्जुनपुर गांव में गधा मालिकों के समूह द्वारा अपने रखरखाव के वर्तमान अभ्यासों का विश्लेषण किया गया है। उन्होंने अपने पशु की 14 अपेक्षाओं को निकाला और उनको वर्तमान में किये जा रहे अभ्यास के आधार पर अंक दिये । सबसे अधिक अंक गर्मी में छाया की उपलब्धता को और पशुओं को समूह मे चराने को दिये (10 में से 6)। अच्छा चारा और ज्यादा वजन न भरने को न्यूनतम अंक दिये (10में से 3)। क्रियान्वयन में 2 अभ्यासों के लिए जानकारी की कमी को गैप का कारण माना गया और 14 में से 8 रखरखाव के अभ्यास में साधनों को कारण माना गया जबकि लापरवाही(करने की आदत में न होना) को रखरखाव के सभी अभ्यासों में योगदान देने वाला महत्वपूर्ण कारण चिन्हित किया गया। समूह ने सहमति की कि इन अच्छे अभ्यासों को प्रतिदिन की आदत में लायेंगे और एक दूसरे की प्रगति को उनकी व्यक्तिगत योजना क्रियान्वयन के आधार पर अनुश्रवण करेंगें।

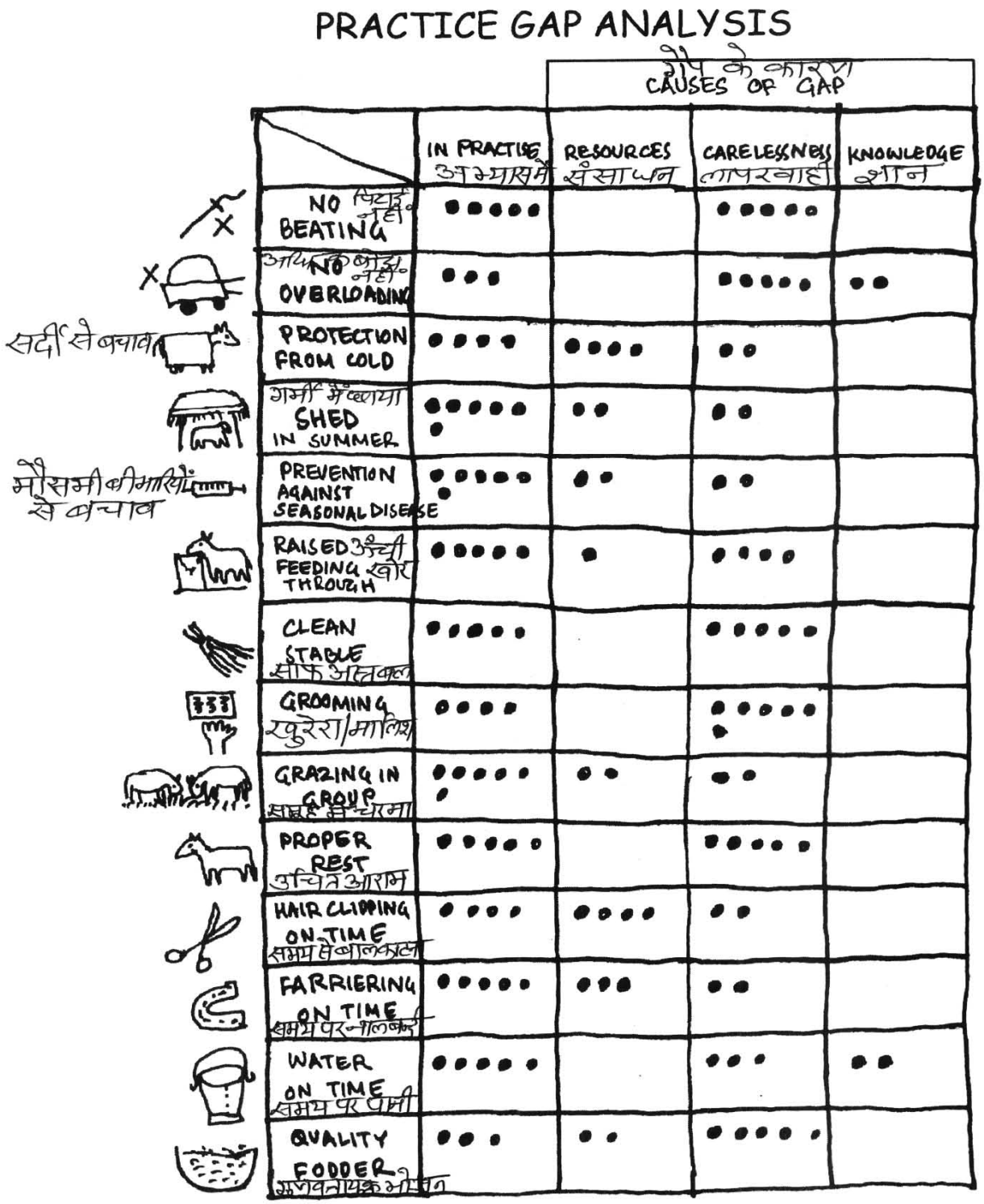

चित्र टी021 ब पशु कल्याण अभ्यास गैप विश्लेषण मैट्रिक्स

इस चित्र में पशु कल्याण के लिए रखरखाव संबधित अभ्यासों का विश्लेषण गोले की जगह आयत में किया गया है। इस अभ्यास को भी उपर लिखे विवरण के अनुसार ही किया गया है।

टी–22 पशु कल्याण भ्रमण

यह क्या है:–

पशु कल्याण भ्रमण मूलतः भ्रमण से लिया गया है (कुमार 2002) और इसका उपयोग अलग–अलग काम करने वाले पशु की कल्याण स्थिति का ऑकलन प्रत्येक पशुमालिक के घर का भ्रमण करके, पशु और उनके वातावरण को देखकर किया जाता है।इसका उपयोग समुदाय के द्वारा सघन रूप में किया जाता है। इन समुदायों ने इस मैनुअल के विकास में सहयोग दिया हैं और हमारे कार्य के लिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण अभ्यास है।

उद्देश्य :–

पशु कल्याण भ्रमण का उपयोग स्वयं पशु का सीधे निरीक्षण के द्वारा, या एक समान बहुत सारे पशुओं को देखकर जिसमें कि उनका वातावरण, संसाधन और पशुमालिकों के रखरखाव आदत आदि शामिल होता है में कल्याण ऑकलन किया जा सकता है (देखे अध्याय–1) ट्रान्जेक्ट भ्रमण का उपयोग किसी भी प्राप्त कल्याण मुद्दों को चिन्हित कर कारण – प्रभाव ऑकलन करके अलग–अलग पशुओं के लिए कार्य योजना तैयार करने के लिए किया जाता हैं। काम करने वाले पशु की संसाधन उपलब्धता की स्थिति और पशु कल्याण स्थिति की खोज करने के लिए यह एक मुख्य अभ्यास है। इसका उपयोग हमेशा कल्याण में बदलावों का अनुश्रवण करने के लिए भी किया जाता है।

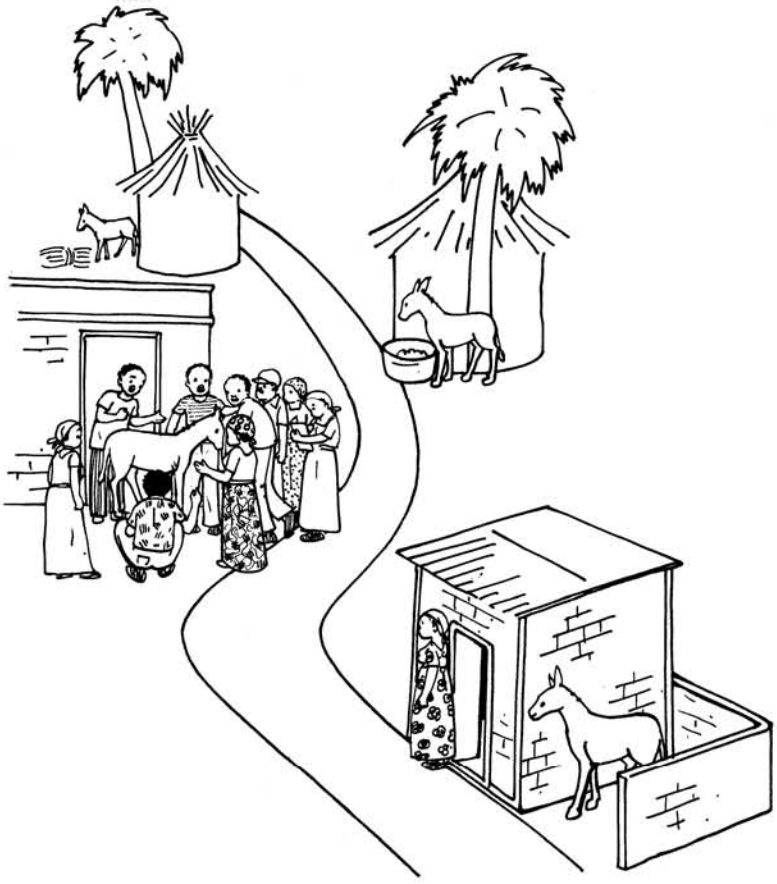

पशु कल्याण चित्रण–टी–1 समुदाय में पशु की स्थिति को समझने का पूरी तरह से बर्ड–आई देता है,जो कि पशुमालिकों द्वारा पशु की अनुपस्थिति में वर्णित किया जाता हैं। पशु कल्याण भ्रमण पशु की उपस्थिति में समूह को इसे जाँचने एवं इस पर पशु मालिक के साथ सहमति बनाते हुए पशु कल्याण के बारे में पूरी और विस्तृत जानकारी देता है। इसलिए पिछले चित्रण अभ्यास से प्राप्त सूचनाओं को सशक्त करने के साथ ट्रांगुलेट भी करता है।

आप इसे कैसे करेंगेः–	
चरण –एक	समूह में पशु कल्याण भ्रमण के उद्देश्य को अच्छी तरह से समझायें और सभी सदस्यों को कल्याण के अच्छे और खराब मानकों के निरीक्षण करने के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करें।एक या एक से अधिक नीचे दिये गये अभ्यासों का उपयोग करके पशु ,संसाधन और रखरखाव आदतों का निरीक्षण कर सकते हैंः– • पशु कल्याण चित्रण – टी 1 • यदि मैं एक घोड़ा होता – टी 17 • अपने पशु की कीमत कैसे बढायें – टी 18 • पशु शारीरिक चित्रण – टी 20 • पशु कल्याण आदत में कमी ऑकलन – टी 21 • पशु कल्याण अनुश्रवण हेतु विकसित मानक अलग–अलग या सामूहिक/समुदायिक कार्ययोजना हेतु – देंखे अध्याय 4, अवस्था–4
चरण –दो	समूह द्वारा सर्वसम्मति से निश्चय कर लेना कि • निरीक्षण में क्या–क्या देखेंगे? • निरीक्षण में प्राप्त जानकारियों को कैसे लिखेंगे एवं कौन लिखेगा? इसके उपरान्त पशु कल्याण भ्रमण शुरू करते हैं पशु कल्याण भ्रमण पशु कल्याण की स्थिति को नियमित अनुश्रवण करने में बहुत ही महत्वपूर्ण है,उसी तरह कार्य योजना के लिये,इसलिये भविष्य में समुदाय के पास अभिलेख हमेशा रहने चाहिये। प्रत्येक निरीक्षण के परिणाम के लिखने के लिये कौन सा संकेत उपयोग करेंगे उन्हें ही निश्चित करने देना चाहिये।हमारे अनुभव के उदाहरण निम्नलिखित हैंः– • यातायात बत्ती संकेतः– सबसे अच्छे पशु की स्थिति, संसाधन या रखरखाव आदत के लिये हरी बिन्दी, मध्यम के लिये पीली बिन्दी और अत्यधिक खराब को लाल बिन्दी से दर्शाते हैं। देखें चित्र टी 22 अ कभी–कभी लाल या हरा बिन्दु ही उपयोग करते हैं। • अच्छे के लिये सही और खराब के लिये गलत का निशान भी लगाते हैं। • संकेत या रंग किसी विशेष समस्या को प्रस्तुत करता है,जैसे समूह सहमत होता है।उदाहरण के लिये जब रिकार्ड करते हैं जब अस्तबल सही है या नहीं ,छाया की कमी में एक रंग की बिन्दी का उपयोग करते हैं,गन्दे फर्श के लिये दूसरे रंग का और खराब या असहज फर्श के लिये तीसरे रंग का उपयोग करते हैं। • प्रत्येक निरीक्षण के लिये नम्बरों का उपयोग कर अंक देते हैं। देखें चित्र टी 22 ब
चरण – तीन	भ्रमण का रास्ता और कौन सा पशु देखेंगे निश्चित करें।समूह कब भ्रमण करेगा का एक निश्चित समय तय करें।यह जरूरी है कि समूह जब अपने या उनके पशु और सभी पशुओं का भ्रमण करें तब प्रत्येक पशु का मालिक और उसका परिवार उपस्थित हो।
चरण – चार	भ्रमण के नियत दिन समूह को निश्चित तय रास्ते से साथ–साथ सभी पशुमालिकों के घरों का जहाँ पशु रहते हैं और उनके पास के क्षेत्र को बड़ी ध्यानपूर्वक देखना चाहिये।समूह के सभी सदस्यों के साथ निर्धारित पशु कल्याण मानकों पर गंभीरतापूर्वक चर्चा करें,ठीक उसी तरह पशुमालिकों और सामान लाने वालों के साथ घरों का भ्रमण करें और प्रत्येक को अंक दें।समूह निरीक्षण के लिये अक्सर बिन्दु बढ़ाने या घटाने को निश्चित करेगा।कोई भी पशु कल्याण का मुद्दा दूसरे पी आर ए अभ्यास से शामिल करेगा और अभ्यास को भ्रमण करते समय समूह सदस्यों के साथ चर्चा भी करेगा।
चरण – पॉच	भ्रमण से लौटने के बाद समूह अपनी रिकार्ड शीट को समराइज और ऑकलन करे – देखें चित्र टी 21 अ • अलग – अलग पशु के कल्याण समस्या के लिए दिये गये लाल,पीली और हरी बिन्दुओं को या अंकों को सीधे–सीधे जोड़ लें। इसका उपयोग समूह प्रत्येक पशुमालिक के लिये अलग–अलग कार्ययोजना बनाने के लिये कर सकता है। • कल्याण पैरामीटर के लिये पूरे गॉव या समूह को दिये गये बिन्दु या अंकों को उपर से नीचे जोड़ लेते है। इसका उपयोग गॉव में कल्याण समस्या को कम करने के लिये सामूहिक कार्ययोजना बनाने हेतु किया जाता है। पशु कल्याण के सफलता एवं समस्यायों और उनके सम्भावित कारकों पर चर्चा करते हुए एक आम सहमति पर आना है।वर्तमान स्थितियों को सुधारने के लिए उचित अवसर को पाना है।इन्ही अवसरों को हम सीधे कार्ययोजना में बदल सकते हैं अथवा कारण व उसके सम्भावित हल को घोड़े की समस्या नामक टूल का उपयोग करते हुए ऑकलन कर सकते हैं।(टी – 25)

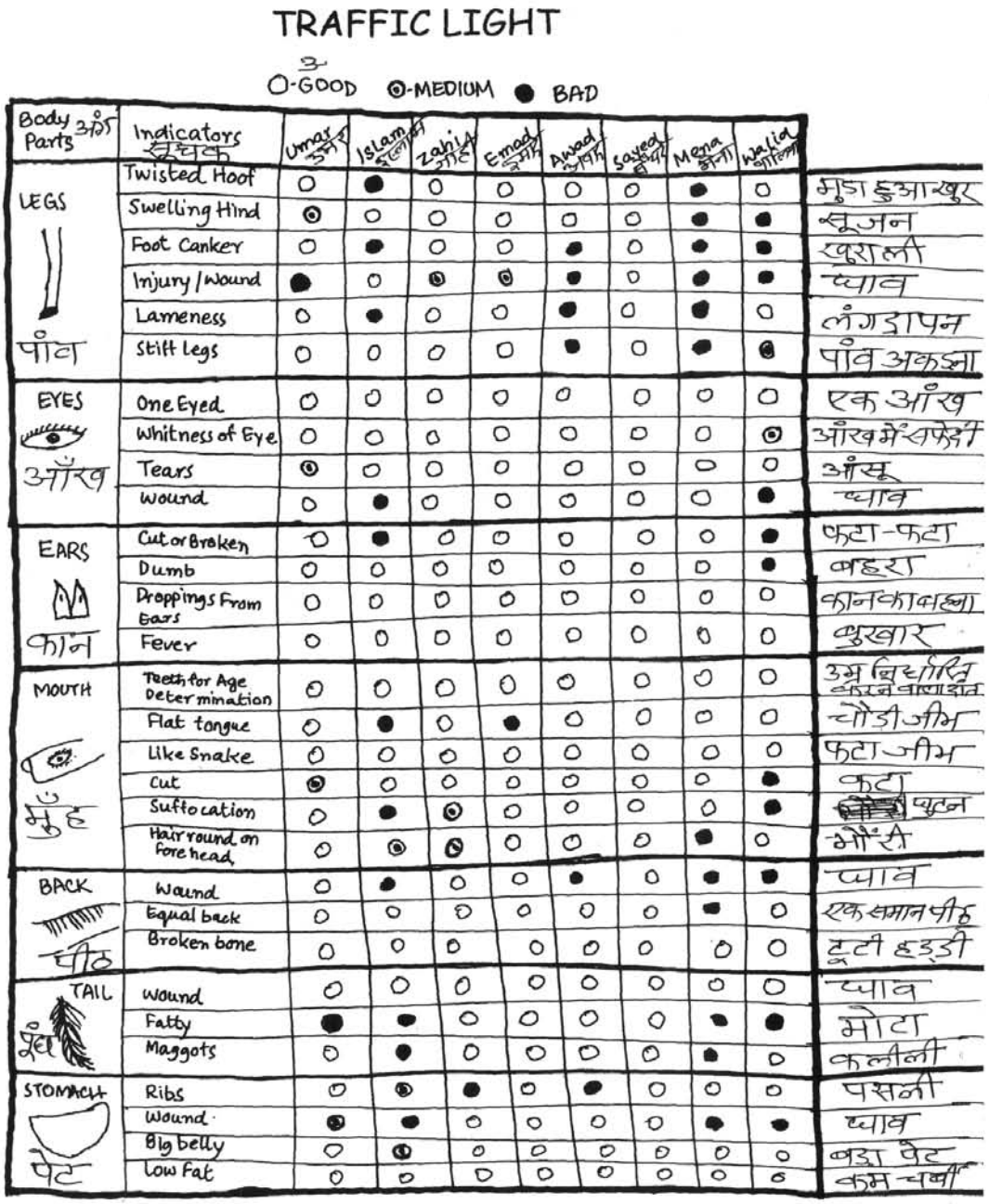

चित्र टी 22 अ पशु कल्याण भ्रमण रिकार्डिंग शीट यातायात बत्ती संकेत का उपयोग करके ,उन्नाव ,उत्तर प्रदेश , भारत (2009)

उन्नाव उत्तर प्रदेश में एक अश्व पालक समुदाय द्वारा पशु कल्याण भ्रमण 30 पशु कल्याण मानकों पर यातायात बत्ती संकेत पर किया गया, ये मानक उन्होनें पिछले अभ्यास और चर्चा के दौरान निर्णय कर तय किये थे। भ्रमण के पश्चात् पशुमालिक एक साथ बैठ गये और अपनी रिकार्डिंग शीट से प्रत्येक अलग–अलग पशु पर उपर से नीचे दिये गये बिन्दुओं का ऑकलन किया। मीना के घोड़े को उन्होंने 12 लाल (खराब) बिन्दुओं के साथ सबसे खराब स्थिति में पाया क्रमशः इस्लाम के घोड़े को 11 लाल और 2 नारंगी (मध्यम) बिन्दुओं के साथ कल्याण मुद्दों पर दूसरी सबसे खराब स्थिति में पाया। अलग–अलग पशुओं की स्थिति देखने के बाद समूह सदस्यों ने सीधे–सीधे लाइनों को जोड़ा जिससे पता चले कि उनके गॉव में सबसे ज्यादा पशु कल्याण समस्या कौन सी है। समुदाय में पैर में चोट व जख्म, चार पशुओं के लाल व दो पशुओं के नारंगी बिन्दुओं के साथ सबसे बड़ी समस्या के रूप में निकलकर आया। समूह सदस्यों ने इस अभ्यास के बाद कारण – प्रभाव ऑकलन किया (देखें अध्याय 4, अवस्था–4 और टी – 25 और टी – 26) और अलग–अलग तथा सामूहिक पशुमालिकों के लिये एक कार्ययोजना का निर्माण किया।

Status / स्थिति — पशु मालिक Owners	अश्व प्रकार Equine Type	पशुओं की स्थिति Status of Animal	Firing दागना	Wound घाव	शरीर सफाई Body cleaning	Hair clipping	आँख व मुँह की सफाई Eye/Mouth cleaning	अस्तबल की सफाई Stable cleaning	Manger cleaning	Water availibility	Hobbling	Foot Canker	कुल TOTAL
Mahendra महेन्द्र	Mule खच्चर	10	10	10	5	10	5	10	10	5	5	10	90
Puran पुरन	Mule खच्चर	5	10	5	5	10	5	10	10	8	5	10	83
Prahalad प्रहलाद	Horse घोड़ा	5	10	5	5	10	5	10	10	8	5	5	78
Kallu कल्लु	Horse घोड़ा	5	10	5	5	10	5	10	5	5	5	5	70
Bablu बबलू	Horse घोड़ा	5	10	10	8	5	5	10	10	7	5	10	85
Netar नेत्र	Mule खच्चर	0	10	0	5	10	5	10	5	0	5	5	55
Dharampal धरमपाल	Horse घोड़ा	5	10	6	10	10	10	5	5	5	5	10	81
Ravi रवि	Mule खच्चर	5	10	7	5	10	5	10	2	5	5	10	74
Pappu पप्पू	Mule खच्चर	10	10	5	5	10	5	10	10	10	5	10	90
Sher Singh शेर सिंह	Horse घोड़ा	5	10	8	0	8	5	10	10	8	5	5	74
Ranveer रनवीर	Mule खच्चर	10	10	10	10	10	10	10	18	18	5	10	103

चित्र टी 22 ब पशु कल्याण भ्रमण रिकार्डिंग शीट अंकों का उपयोग करके , भारत (मई 2008)

धनौरा ग्राम के सामुदायिक समूह ने (बुलन्दशहर,उत्तर प्रदेश)11 पशुओं का कल्याण मानकों पर अधिकतम 10 अंकों में पशु कल्याण भ्रमण किया।रनवीर का खच्चर पूरे 110 अंकों में 103 अंक पाकर सबसे अच्छी स्थिति में, और नेत्र का खच्चर 110 अंकों में न्यूनतम 55 अंक पाया था। उन्होंने भी ग्राम के सभी पशुओं की कल्याण स्थिति का ऑकलन उपर से नीचे अंकों को जोड़कर किया (इस सारणी में नहीं दिखाया गया है) सबसे कम अंक पिछाड़ी समस्या (अंक 55) क्रमशः शरीर की साफ सफाई (अंक 63), शारीरिक स्थिति (अंक 65) और ऑख और मुॅह की साफ–सफाई (अंक 65) समस्या के थे। इस अभ्यास के बाद समूह द्वारा सबसे कम अंक पाये चार पशुओं की कल्याण समस्यायों पर कारण–प्रभाव ऑकलन किया (टी 26)और पशुओं की कल्याण स्थिति को सुधारने के लिये एक सामुदायिक कार्ययोजना का निर्माण किया। (देखें अध्याय 4, अवस्था –4)।

सुगमकर्ता के लिये लेख : पशु कल्याण भ्रमण

- पशु भ्रमण समूह द्वारा वास्तविक आदत का विवरण दिखाता है,पूरे समुदाय द्वारा या अलग–अलग पशुमालिक द्वारा संसाधनों की उपलब्धता और पशु रखरखाव,वर्तमान उपयोग, पशु कल्याण स्थिति की वास्तविक आदत का विवरण दिखाता है।
- सामान्यतया हम एक दिन मिलकर सहमत बिन्दुओं पर भ्रमण करते हैं,निरीक्षण करते हैं और रिकार्ड करते हैं।पशु भ्रमण समुदाय पूर्व– डिटरमाइन्ड दूसरे दिन करते हैं।
- यदि वहॉ बडी संख्या में पशु हैं तो इस अभ्यास को दूसरे दिन भी करते हैं ताकि सारे घर और पशु उसमें शामिल हों पशु कल्याण भ्रमण को नियमित अंतराल में करना चाहिये, और परिणामों को पिछले भ्रमण से तुलना करनी चाहिये।यह समूह को पशु की संसाधन सम्बन्धी उपलब्धता में बदलाव, मालिक की रखरखाव आदतों में बदलाव, अलग–अलग पशु की कल्याण स्थिति में बदलावों का अनुश्रवण व मूल्यांकन करने के योग्य बनाता है।

टी–23 तीन पाइल कार्ड सार्टिंग

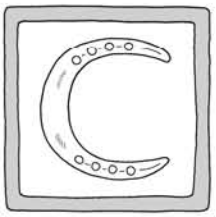

यह क्या है:–

तीन ढेरों से छॉटना अभ्यास में, एक समुदायिक समूह को कार्ड छॉटने के योग्य बनाती है और उनके अनुसार पशु के रखरखाव और काम की आदत जैसा कि वे देखते हैं पशु कल्याण की अच्छी, खराब और प्राकृतिक स्थिति पर चर्चा करते हैं। यह पहले से कार्ड छॉटने वाले टूल से लिया गया है (राइटबर्गेन–एम सी कैकेन और नारायन–पार्कर, 2006)।

उद्देश्य :–

त्रिखम्भीय अभ्यास का उपयोग प्रतिभागियों की क्षमता को बढ़ाने और उनके विचारों को किसी पशु कल्याण मुद्दे और समस्या ऑकलन के लिये शुरूआती बिन्दु और कार्यवाही के लिये किया जाता हैं। उदाहरण के लिये, आप पूॅछिये कि कौन से रखरखाव के मुद्दे अक्सर समुदाय में पाये जाते हैं, चाहे वे अच्छी या खराब हैं और खराब कल्याण आदतों के कारणों को कम करने के लिये क्या किया जा सकता है। ऐसे मुद्दे जैसे जानवर से कम उम्र में काम लेना,दागना या नम्बर छापना और अधिक वजन लादना आदि इस टूल में रखे जायेंगें।जहॉ रखरखाव आदतें न तो अच्छी दिख रही हैं न खराब दिख रही हैं,समूह इस पर चर्चा करेगा कि ऐसा क्यूॅ है। हम भी इसका उपयोग पशु की बीमारियों के बारें में उनके विचारों का ऑकलन करने और लक्षण, कारण और बचाव का ऑकलन करने में करते हैं।

आप इसे कैसे करेंगें	
चरण –एक	इस अभ्यास के लिये आपको पहले से तैयारी की आवश्यकता है आपको कार्डों का एक सेट पशु कल्याण और रखरखाव आदतों में अच्छी, खराब या बीच में (प्राकृतिक) मुद्दों को समझा सकते हैं बना लेना है।यह समुदाय द्वारा पिछले किये गये अभ्यास जैसे यदि में एक घोड़ा होता (टी 17), पशु शारीरिक चित्रण (टी 20), या पशु कल्याण आदत कमी ऑकलन (टी 21) से निकली समस्यायों पर आधारित है। समान नकारात्मक आदतों जैसे पशु को पीटना, अधिक वजन लादना,पानी न दिखाना,सही चारा न देना जख्म में लापरवाही करना को कार्डों पर चित्र के माध्यम से दिखा सकते हैं।
चरण –दो	समूह के सभी प्रतिभागियों को जो कि सात से अधिक न हों और प्रत्येक समूह को एक गोले में खड़ा करें। कार्ड का एक सेट प्रत्येक समूह को दे दें और दो या तीन वालन्टियर को गोले के बीच में बैठा दें और साथ–साथ कार्ड छॉटें। उनसे इन कार्डों को तीन लाइनों में रखने को कहें जिनमें पहली लाइन अच्छे कल्याण और रखरखाव आदतों, दूसरी लाइन खराब कल्याण और रखरखाव आदतों और तीसरी लाइन मध्य में या प्राकृतिक कल्याण और रखरखाव आदतों (या आदतें जहॉ वे अनिश्चितता की स्थिति में या असहमत हैं) को दर्शाती है।
चरण –तीन	कार्डों को छॉटने के बाद, वालन्टियरों से उनको व्यवस्थित करने के लिये कहें इसलिये कि प्रत्येक कार्ड पूरे समूह को दिखाता है।प्रतिभागियों के बीच में चुनौतियों को चुनने में और सभी पहलुओं पर ऑकलन करने और उनके निर्णय लेने में उनका उत्साहवर्धन करें।
चरण –चार	समूह से पूॅछे कि कौन सा पशु कल्याण मुद्दा या रखरखाव आदतें उनके अपने गॉव में विद्यमान है, मुख्यतः एक जिसे वे खराब चिन्हित करते हैं।यह चर्चा प्रतिभागियों को कल्याण समस्या को प्राथमिकता के आधार पर चिन्हित करने और उनको हल करने या कार्यवाही करने के योग्य बनाता है।

सुगमकर्ता के लिए टिप्पणी : तीन पाइल कार्ड सार्टिंग

यह महत्वपूर्ण है कि आप इस योग्य हों कि समूह के अपने विचारों को निकालने और उनकी स्थानीय भाषा में रखरखाव आदतों, बीमारियों, दर्द और पशु की समस्यायों को दर्शा सकते हों।

- ग्राम में वर्तमान स्थितियों को दर्शाने वाले फोटोग्राफ के द्वारा खेल भी खिला सकते हैं।यह अग्रिम तैयारी के लिए है।
- प्रतिभागियों से दूसरे प्रकार की पशु कल्याण मुद्दों से सम्बन्धित कार्डों को छॉटने के लिए पूॅछें क्योंकि वे अनुभवी हैं। जैसे कि
  (1) मुद्दा जो सीधे पशु से सम्बन्धित है
  (2) मुद्दा जो सेवाप्रदाताओं और दूसरे स्टेकहोल्डरों से सम्बन्धित है और
  (3) मुद्दा जो पशुमालिक, उपयोगकर्ता और सामान लादने वालों से सम्बन्धित है।

टी–24 पशु कल्याण कहानी एक कमी के साथ

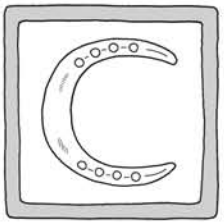

यह क्या है :–

इस टूल का उपयोग, पहले और बाद, की कहानी की चर्चा करते हुए उत्तेजित कर खराब पशु कल्याण स्थिति को बदलने के लिए पशुमालिकों को उस स्थिति में जहॉ पशु कल्याण स्थिति अच्छी है तक ले जाना है।

उद्देश्य :– पशु कल्याण कहानी एक कमी के साथ का उपयोग चित्रों के जोड़ों के साथ किया जाता है,एक चित्र काम करने वाले पशु की पहले की स्थिति से सम्बन्धित होती है और दूसरा चित्र उस स्थिति को दर्शाता है जहॉ पशु कल्याण की स्थिति अच्छी है।उदाहरण के लिए, पहला चित्र काम करते समय पशु को पीटना दर्शाता है और दूसरी फोटो ठीक उसी तरह के काम करते हुए पशु को केवल आवाज के द्वारा चलाते हुए दिखाती है।प्रतिभागी दोनो फोटो देखकर चर्चा करते हैं और कहानी की कमी को पूरा करने में उन चरणों को चिन्हित करते हैं जो कि अच्छे चित्र को दर्शाने वाली कहानी को प्राप्त करने के लिए होती है।

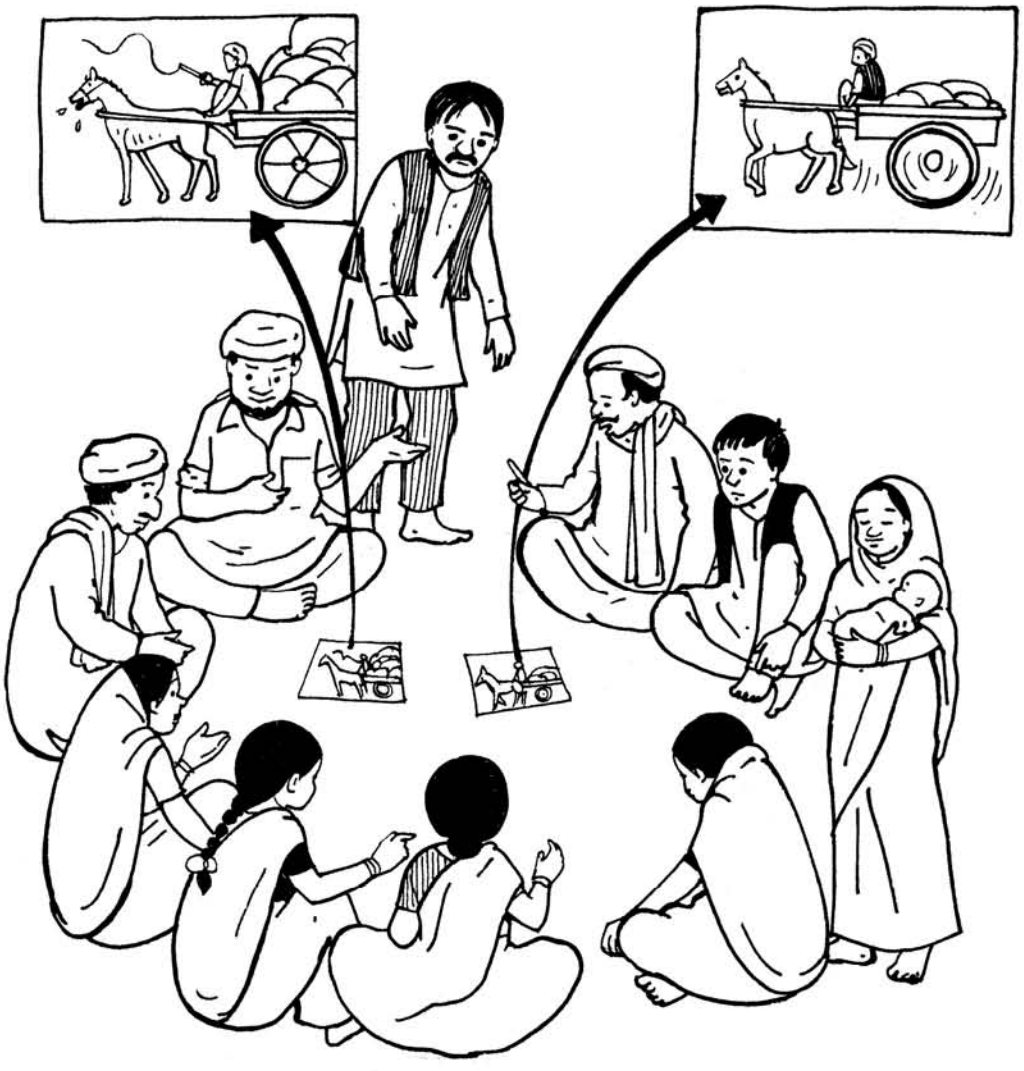

आप इसे कैसे करेंगें	
चरण – एक	इस अभ्यास के लिए पहले से आपको चित्र तैयार कर लेना चाहिए। समुदाय में वहाँ पर रहने वाले पशु की रखरखाव स्थितियों या आदतों का रेखाचित्र या फोटो का उपयोग करना चाहिये।
चरण – दो	प्रतिभागियों को दो अलग–अलग छोटे समूहों में बॉट दें और दोनों समूहों को एक समान चित्रों पहले और बाद का सेट दे दें। पहले के चित्रों को देखकर चिंतन करने से पहले प्रत्येक समूह से पूँछे, कि ऐसा एक चित्र जो काम करने वाले पशु का जख्म सहित हो और चर्चा करें कि ऐसी स्थिति कैसे हुई।बाद में प्रत्येक समूह को बाद की अच्छी स्थिति की फोटो देकर पूँछे ऐसा पशु कि जिसमें जख्म नहीं या कुछ जख्म है। तब दोनों समूहों से पूँछें कि पहले से बाद की स्थिति में जाने के लिए वे कौन से चरणों के बारे में सोचते हैं (दूसरे शब्दों में वे कहानी की कमी को पूरा करेंगे), ऐसा करने में उनके रास्ते में क्या बाधा आ सकती है, और ऐसा करने के लिए उनको कौन से संसाधनों की आवश्यकता है।
चरण – तीन	अलग–अलग समूहों को एक साथ मिला लें और प्रत्येक समूह से कहानी के बारे में पूछें जो कि उन्होनें सोचा है, समूह को कल्याण स्थिति को सुधारने में उनकी सलाह और लाभ के बारें में सोचने में उत्साहित करें और स्थिति को सुधारने में आ रही बाधाओं पर चर्चा करें।

सुगमकर्ता के लिए लेख : पशु कल्याण कहानी एक कमी के साथ

- आपका फैसिलिटेशन पहले और बाद के माहौल पर चर्चा करना है जो कि पशु कल्याण को साफ–साफ दिखाता है।
- प्रतिभागियों को दो छोटे समूहों में बॉटते समय आये अधिक से अधिक सुझावों और व्याख्यानों को एकत्रित करें। (उदाहरण के लिए पुरूषों और स्त्रियों, बूढ़े और जवानों, या अन्य श्रेणी) और प्रत्येक को समान चित्रों का सेट देना है।चित्रों के ऑकलन के बाद, केन्द्रीय समूह अपनी रिपोर्ट पर चर्चा करने और अपने विचारों को कम्पेयर करने के लिए साथ–साथ आ सकते हैं।

टी–25 घोड़ों की समस्या

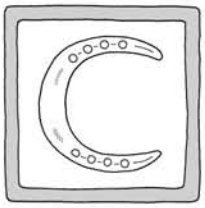

घोड़ा या गधा, खच्चर, बैल, ऊँट या याक

यह क्या है:–

"घोड़ों की समस्या" एक टूल है जिसे हमने कारण और प्रभाव आकृति से लिया है (टी 26) पशु कल्याण समस्या का ऑकलन कारण की जड़ के क्रम में ले जाना हैं।इसका मूल वर्जन सोमेश कुमार के द्वारा सामुदायिक सहभागिता विधि में वर्णित है (देखें आगे पढें और संदर्भ सूची)

उद्देश्य :–

घोड़े की समस्या अभ्यास (चित्र टी 25) समूह को एक पशु के शरीर के हिस्सों को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों को चिन्हित करने के योग्य बनाता है और प्रत्येक पशु के कल्याण मुद्दों और उसके सम्भावित कारणों के बीच सम्बन्धों की पहचान करने योग्य बनाता है। पहला चरण पशु कल्याण शारीरिक चित्रण की तरह है (टी 20)।

आप इसे कैसे करेंगे	
चरण – एक	प्रतिभागियों से एक चार्ट पेपर के टुकडे पर या जमीन पर एक बड़े पशु की आकृति बनाने के लिए कहें ,जो उनकी शरीर के प्रत्येक हिस्से से सम्बन्धित कल्याण मुद्दों को चिन्हित करने में और पशु के चित्र पर उनको खीचने में मदद करता है।एक चित्र का उदाहरण नीचे दिया गया है (चित्र टी 25) समूह ऑखों में पानी, पेटी बन्द और पिछले पैर, छाती, पेट और पूँछ के नीचे में जख्म को चिन्हित करता है।
चरण – दो	चरण एक में चिन्हित किसी एक कल्याण मुद्दे का चयन करें। प्रतिभागियों को समस्या के कारणों पर चर्चा करने के लिए उत्साहित करें और पशु के शरीर के उचित हिस्से के पास कारणों को लिखें।कल्याण मुद्दे का गहराई से ऑकलन करने के लिए बार–बार प्रश्न पूंछे क्यों? उदाहरण के लिए :– पशु को जख्म क्यों होता है? –काठी में चमड़े की बेल्ट के कारण होता है। चमडे की बेल्ट के कारण जख्म कयों होता है? –इसको साफ न करने व तेल न लगाने के कारण होता है। बेल्ट को साफ व तेल क्यों नहीं लगाते हैं? – क्योंकि हमारे पास समय नहीं है। आपके पास समय क्यों नहीं है? और भी आगे जब तक कि समूह कल्याण समस्या के सबसे गहरे जड़ में नहीं पहुँचता है और आगे कहीं जाता है। जब एक कल्याण समस्या पूरी हो जाती है,उनको दूसरी समस्या पर ले जायें और जब तक प्रश्नों को दुहराते रहें जब तक कि कारणों की जड़ को रेखाकिंत न करें या शरीर की दूसरी समस्या को फिर से न लिखें।
चरण – तीन	जैसे ही चर्चा प्रगति में हो और सब कारण चिन्हित हों जायें, ऑकलन करें कि विभिन्न कारणों के बीच कोई कड़ी या सम्बन्ध तो नहीं है और उसको लाइन या तीर का उपयोग करके दिखायें (देखें चित्र टी 25)
चरण – चार	समूह को अधिक महत्वपूर्ण कारणों को चिन्हित करने के योग्य बनायें और उनका प्राथमिकीकरण करने के लिए मैट्रिक्स रैंकिंग अभ्यास का उपयोग करें (टी 9)
चरण – पॉच	चर्चा करें कि समूह प्रत्येक प्राथमिक कल्याण मुद्दे सुलझाने के लिए क्या कार्यवाही कर सकता है।यदि वे कारणों को दूर करने के योग्य हों ,उनके पशु में यह कारण कम हो गया यह कैसे नाप सकते हैं। उनको एक सामुदायिक कार्ययोजना बनाने के लिए उत्साहित करें। (देखें अध्याय – 4, अवस्था – 4)

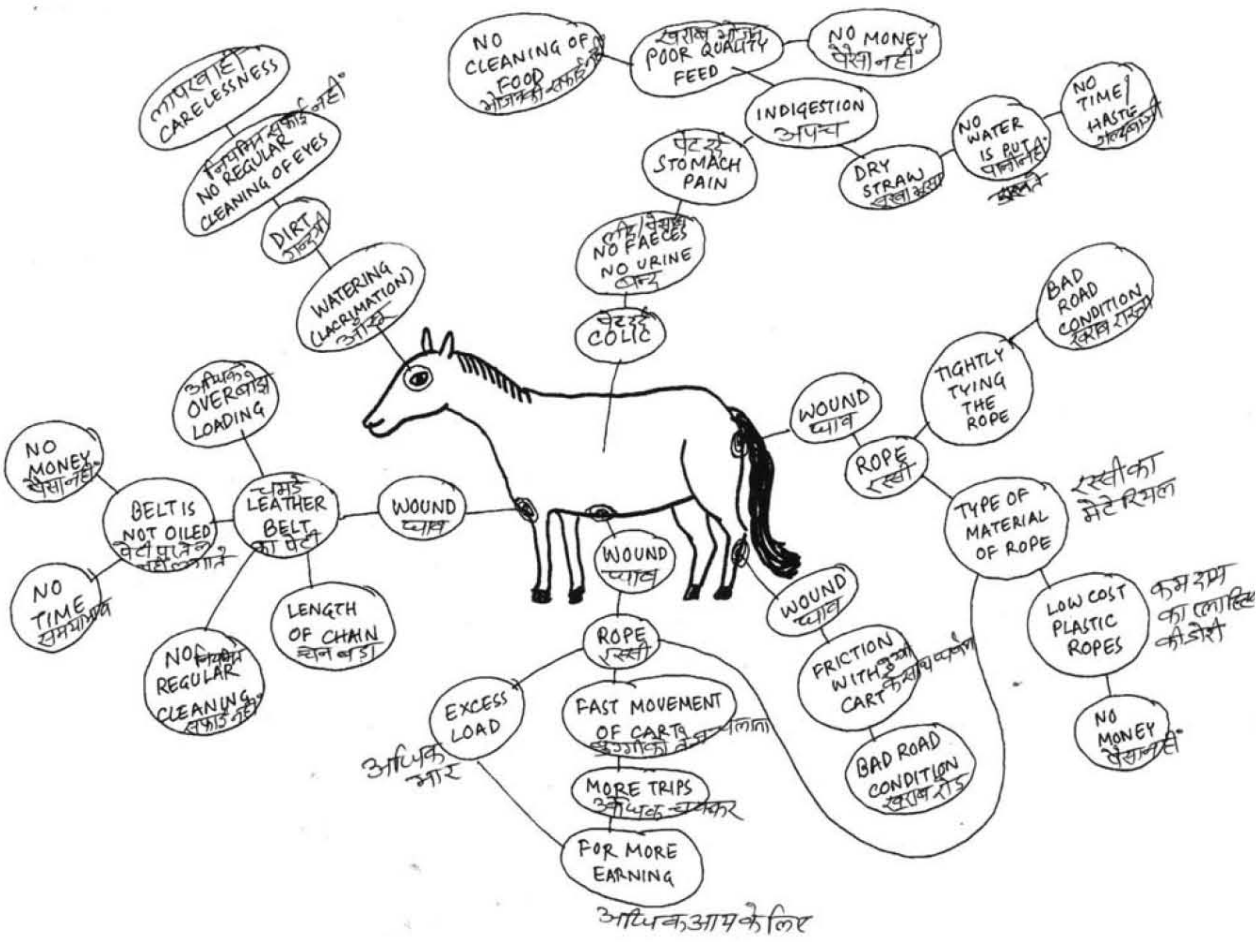

चित्र टी – 25 घोडो की समस्या की आकृति, खरखोदा गॉव, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत (2007)

यह आकृति उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जिले के खरखोदा गॉव के पशुमालिकों के समूह द्वारा बनाई गई है। पहले, समूह पशु के शरीर के प्रत्येक हिस्से को प्रभावित करने वाली समस्यायों पर चर्चा करता है, तब वे समस्यायों के कारणों की जड़ का ऑकलन करते हैं। समूह पाता है कि शरीर के विभिन्न हिस्सों में जख्म के विभिन्न कारण हैं,लेकिन शरीर के कई हिस्सों में जख्म के कई समान कारण हैं, जैसे कि खराब सड़क की स्थिति और रस्सी का कस कर बॉधना।पीठ पर जख्म और छाती पर जख्म एक दूसरे से सम्बन्धित पाये जाते हैं।समूह ने अभ्यास के दौरान कारणों की जड़ों को चिन्हित करते हुए एक सामूहिक कार्ययोजना बनाई।

सुगमकर्ता के लिये संकेत : घोड़ो की समस्या

- भारत में हम इस अभ्यास के लिए शुरूआत में टुकडों की पहेली, (ब्रोकेन हार्स) का उपयोग करते हैं।हम शुरूआत में पशु के शरीर के लकड़ी के टुकड़ों का उपयोग शरीर के हिस्सों के बारे में चर्चा करने के लिए करते हैं।जिसमें कि पशु मालिक एक–दूसरे के साथ मिलकर पशु का चित्र पूरा करते है।
- इस अभ्यास को करने में बहुत ही धैर्य की आवश्यकता होती है और उसी क्रम में प्रश्न पूँछते हुए चर्चा में कारणों के घटकों को गहराई से बाहर निकालने के योग्य बनाती है।
- हमें कभी–कभी लगता है कि पशुमालिक घोड़े की समस्या टूल में वापस लौट रहे हैं (टी 25) (या दूसरा कारण की जड़ ऑकलन टूल जैसे कि पशु कल्याण कारण और प्रभाव ऑकलन टी 26) जब वे एक कार्ययोजना का क्रियान्वयन करते हैं यह कल्याण को सुधारने में अपेक्षाकृत सफलता नहीं प्राप्त करती है। यह समूह के अपने ऑकलन पर पीछे लौटाता है और जबकि वे कोई महत्वपूर्ण कारण के जड़ को छोड़ देते हैं। (देखें अध्याय – 4 , अवस्था – 5)

टी–26 पशु कल्याण कारण और प्रभाव ऑकलन

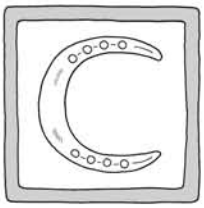

यह क्या है :–

कारण और प्रभाव ऑकलन पशु कल्याण के मुद्दों के मुख्य कारण और प्रभाव के बीच में सम्बन्ध का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।इस आकृति को कभी–कभी समस्या वृक्ष भी कहा जाता है। जिसमें कारणों को वृक्ष के जड़ की तरफ और प्रभाव को वृक्ष की शाखा की तरफ रखा जाता है।हमने इस अभ्यास को इसके मूल रूप में स्वीकार किया है (कुमार 2002) जो किसी भी एक समुदाय और अलग–अलग या संस्थान के बीच सम्बन्धों को दर्शाता है।

उद्देश्य :–

पशु कल्याण कारण और प्रभाव ऑकलन (चित्र टी 26) का उपयेाग पशु कल्याण के मुद्दों या समस्यायों के जटिल घटकों को कारण चिन्हित करने के लिए और इन घटकों के बीच सम्बन्धों को, ठीक उसी तरह पशु पर और इनके मालिकों, उपयोगकर्ता और सामान लादने वालों पर इनके प्रभावों को बताता है।

काम करने वाले पशुओं के संदर्भ में हम अक्सर इस टूल का उपयोग कल्याण समस्यायों के कारणों को चिन्हित करने के लिए जैसे कि जख्म, अधिक वजन लादना और पिछाडी और पशु और इसके मालिकों तथा उपयोगकर्ता पर इन कल्याण मुद्दों के प्रभावों पर चर्चा के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, काम करने वाले पशु के शरीर के विशेष हिस्से पर जख्म के कारणों की चर्चा के लिए कारण घटकों को दिखाते हैं जैसे कि बुग्गी की आकृति या साज को, वृक्ष का आकार बनाकर के काठी की साफ–सफाई या संरचना पर चर्चा करते हैं। पशु पर इनके प्रभावों को दर्द ,वजन कम होना और काम करने की क्षमता का कम होना के साथ इनके प्रभावों को दिखा सकते हैं। पशु पर जख्म होने के प्रभाव को मालिक की आमदनी कम होने (काम कम होने से और दवाओं पर खर्चा अधिक होने से) या समुदाय की गरीबी की स्थिति के साथ जोड़ सकते हैं।

आप इसे कैसे करेंगे	
चरण – एक	समूह को पशु समस्यायों या मुद्दों की सूची बनाने को कहें जो कि उन्होंने किसी दूसरे अभ्यास का उपयोग करके चिन्हित किये हैं जैसे कि पशु शारीरिक चित्रण (टी 20), पशु कल्याण आदत कमी ऑकलन (टी 21), पशु कल्याण भ्रमण (टी 22)। यदि एक बैठक में बहुत अधिक समस्यायों को वे ऑकलित करते हैं तो जोड़ावार रैंकिग करके उनका प्राथमिकीकरण करें (टी 8) या मैट्रिक्स स्कोरिंग करें (टी 9) एक पशु कल्याण कारण और प्रभाव पर चर्चा के दौरान अत्यधिक महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर उनकी सहमति लेते हुए करें।
चरण – दो	एक कागज पर या जमीन पर एक गोला खीचनें के लिए कहें और बीच में कल्याण समस्यायों को रखें । इस विशेष समस्या के लिए कौन सा बड़ा कारक जिम्मेदार है समूह से पूछें। बड़े कारण के घटक को चिन्हित करें और संकेत, चित्र या शब्दों का प्रयोग करते हुए उसे गोले के बाहरी हिस्से की तरफ दिखायें। उसे समस्या के साथ तीर से जोड़ें।
चरण – तीन	एक विशेष कारण के घटक को ले लें और प्रतिभागियों से पूँछें यह क्यों घटित हुआ । समूह इस बड़े कारण के लिए कौन सा उप–कारण है के बारे में चर्चा शुरू करेगा।इन उप कारणों को बड़ें कारण के बाहरी हिस्से की तरफ दिखायें, बडे कारण के साथ उनको तीर से जोड़ें (देखें चित्र टी 26) प्रत्येक उप कारण के लिए फिर से प्रश्न पूँछें और यह क्यों घटित हुआ? प्रश्न पूँछते रहें और वृक्ष की जड़ों की तरह शाखाओं से उप–कारणों के साथ जोडें, जब तक कि समूह उस स्थिति में नहीं पहुँच जाता कि उसको और आगे कोई उत्तर न मिल सके।
चरण – चार	जब सारे कारणों के घटकों पर चर्चा हो जाये और ऑकलित हो जायें, तब प्रतिभागियों से पशु और उसके मालिक पर कल्याण समस्यायों से पड़ने वाले प्रभावों के बारे में पूँछें। दो गोले खीचें और उसे चिन्हित समस्यायों से जोड़ें (देखें चित्र टी 26)। पशु और मालिक पर पढने वाले प्रभावों को गोले के चारो ओर रखें, और गहराई से इस पर चर्चा करें।
चरण – पॉच	चर्चा के दौरान या जोड़ावार रैंकिग का उपयोग करके (टी 8) या मैट्रिक्स स्कोरिंग से (टी 9) पशु समस्या पर जिस अत्यधिक महत्वपूर्ण विशेष कारक का योगदान है निकाल लें। समूह को इन विशेष कारणों को दूर करने के लिए और उनके द्वारा चुनी गई कल्याण समस्या को सुधारने के लिए एक सामुदायिक कार्ययोजना विकसित करने के लिए उत्साहित करें ।

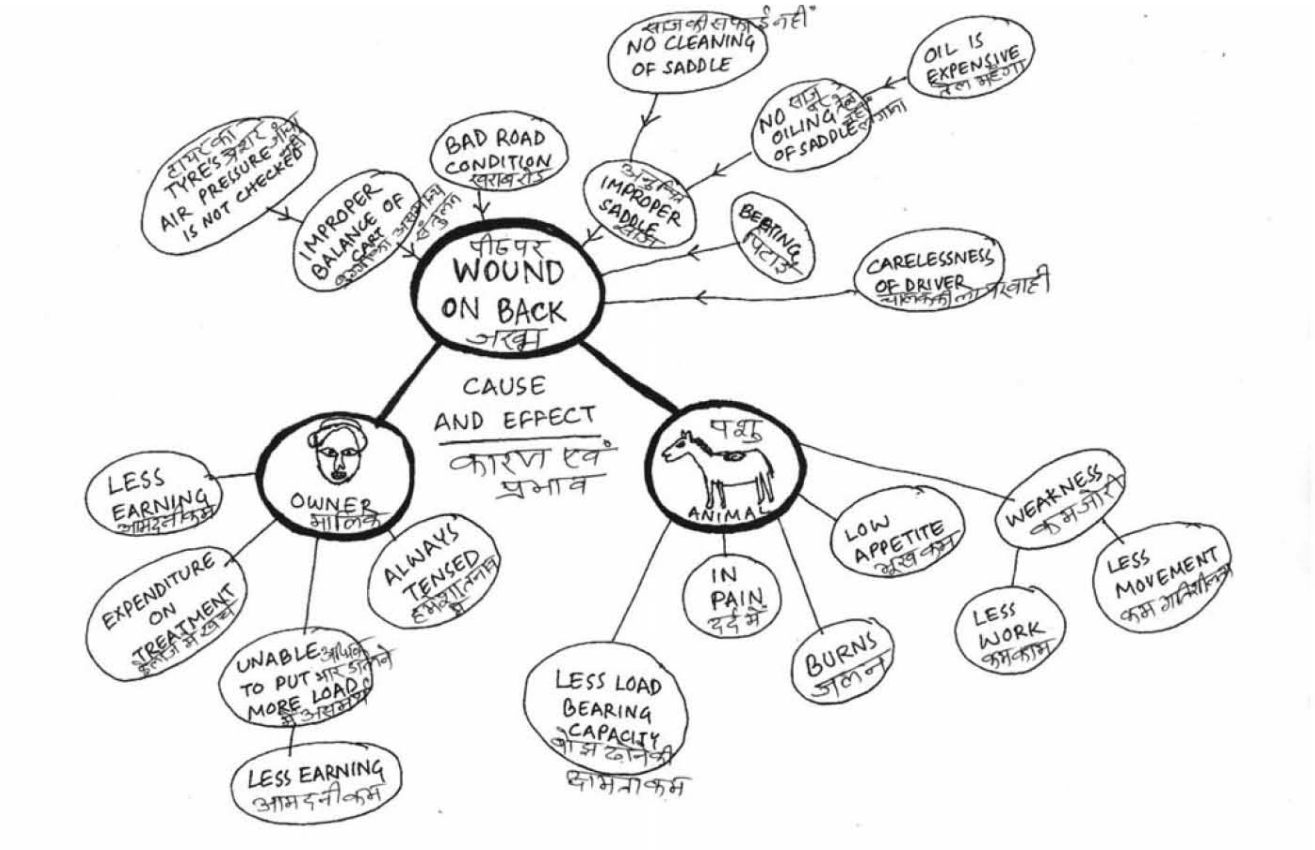

चित्र टी – 26 पीठ पर जख्म के लिए पशु कल्याण कारण और प्रभाव रेखाचित्र ,गाजियाबाद , उत्तर प्रदेश , भारत (2007)

यह रेखाचित्र उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के एक भट्टे में घोड़ा मालिकों के समूह द्वारा एक पशु कल्याण कारण और प्रभाव ऑकलन का परिणाम है। वे लोग विशेष रूप से अपने पशु की पीठ पर जख्म को कम करने के बारे में चिन्तित थे । शुरूआत में उन्होंने पॉच महत्वपूर्ण कारण चिन्हित किये थे : बुग्गी का खराब संतुलन, रास्तों की खराब स्थिति, एक खराब साज, पीटना और लापरवाही से चलाना। इन कारणों की जड़ों तक पहॅचने के लिए और ऑकलन किया गया। घोड़े पर पीठ के जख्म का प्रभाव कमजोरी, कम भूख, दर्द, कम वजन का ले जाना इत्यादि हुआ। मालिक पर प्रभाव कम आमदनी का होना, इलाज पर अधिक खर्च होना और हमेशा तनाव महसूस करना पाया गया। समूह कारणों की जड़ों पर क्रियान्यवयन करने के लिए तैयार हुआ जो कि उनकी पहुॅच में था जैसे कि बुग्गी के टायर का हवा चेक करना, अधिक सावधानी से बुग्गी चलाना, अपने साज की नियमित सफाई करना। उनके ऑकलन के आधार पर, समुदाय ने कल्याण समस्या को सुधारने के लिए उचित कार्यवाही का निश्चय किया और अलग–अलग और सामूहिक क्रियान्यवयन के लिए एक सामुदायिक कार्ययोजना का निर्माण किया।यह टूल कल्याण मुद्दों पर कार्यवाही करने के लिए उनको प्रेरित करने में और संवेदनशील बनाने में भी मदद करता है। जो कि शुरूआत में पशु के लिए महत्वपूर्ण है पर नहीं पहचान पाते हैं।

सुगमकर्ता के लिए लेख : पशु कल्याण कारण और प्रभाव ऑकलन

- यह अभ्यास कुछ समय ले सकता है अतः इसे पहले ही समूह के साथ चर्चा कर लेना चाहिए जिससे कि उचित समय पर कार्य करने के लिए आपसी समझ बन सके।
- अपने स्वयं के उदाहरण का प्रयोग न करें तथा सभी को अपने विचार रखने के लिए प्रोत्साहित करें। प्रतिभागियों को अपने अनुभवों की चर्चा के लिए पर्याप्त समय दें।
- चर्चा से सबसे गहरा विशिष्ट कारण को निकलवाने के लिए इस अभ्यास में धैर्य की बहुत जरूरत है

टी–27 पशु आहार का विश्लेषण

यह क्या है –

पशु आहार प्रक्रिया विश्लेषण टूल का प्रयोग आहार प्रक्रिया को गहराई से समझने के लिए किया जाता है। विश्लेषण में समुदाय की समझ व एक विशेषज्ञ की सहायता ली जाती है जैसे कि पशु चिकित्सक या पशु आहार विशेषज्ञ की।

उद्देश्य :–

हमने अनुभव किया है कि बहुत से कार्य करने वाले पशु कमजोर हैं और समुदाय ने इसका मुख्य कारक आहार ही पहचाना है। यद्यपि कारण विश्लेषण में दर्शाया गया है कि अच्छा गुणवत्तायुक्त आहार, अधिक मूल्य का पशु आहार एवं चारा भी एक कारण है। पशु आहार विश्लेषण (चित्र टी 27अ) से सहभागियों को क्षेत्र में उपलब्ध दाना व चारा की सहायता से कम कीमत पर उपलब्ध संतुलित आहार बनाने में सहयोग मिलता है।

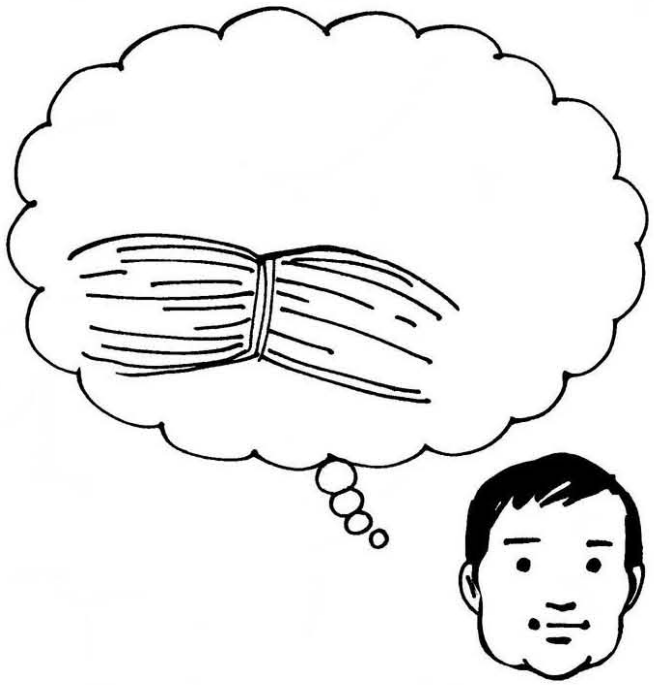

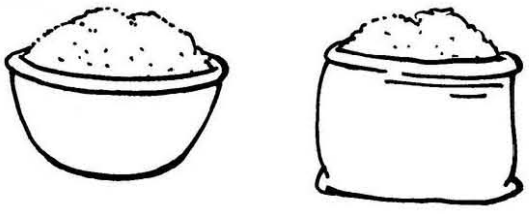

आप कैसे कर सकते है :– इस अभ्यास में समूह को संबोधित करने के लिए चरण–2 में पशु चिकित्सक या पशु आहार विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है जिसे पहले से ही व्यवस्थित कर लेना चाहिए।	
चरण 1	**चल रहे आहार अभ्यास की पहचान :–** चल रहे आहार अभ्यास की पहचान करने के लिए मौसमीकरण अभ्यास (टी 6) को आधार बनाया जा सकता है। समूह सदस्यों से कार्य करने वाले पशुओं को दिए जाने वाले आहार के प्रकार पूछना है (क्षेत्रीय नाम का प्रयोग करें) महीने में दिए जाने वाले आहार की मात्रा जानने के लिए पत्थर या बीजों का प्रयोग करें। तत्पश्चात एक नई लाइन में प्रत्येक दिन के आहार की मूल्य जानें। वैकल्पिक आहार की व्यवस्था की आहार मूल्य अलग लाइन में डालें जैसे कि चित्र 27अ।
चरण 2	**प्रत्येक आहार की न्यूट्रीशनल वैल्यू की पहचान :–** जैसा कि चित्र 27अ पर दिखाया गया है, एक वृत्त चित्र बनायें, समूह से उनके पशु आहार का उद्देश्य पूछकर पहचान करें, प्रश्न पूछें जैसे कि यह पशु आहार पशु शरीर पर क्या प्रभाव डालेगा, उत्तर जैसे कि कार्य करने के लिए ताकत, आहार पचाने में सहायक या पेट भरने के लिए, चित्र में लिखें। इस चरण पर कार्य करते समय पशु चिकित्सक या पशु आहार विशेषज्ञ को बुलाएं ताकि क्षेत्र में मिलने वाले तत्वों के साथ संतुलित आहार बनाया जा सके।
चरण 3	**कार्य करने वाले पशु की आहार आवश्यकता पहचाननाः–** समूह से ज्ञात करना है कि क्या वे अपने कार्य करने वाले सभी पशुओं को समान आहार देता है या सभी आहार देता है या सभी पशु को बराबर आहार की आवश्यकता है। क्या उनके पशुओं को दिए जाने वाले आहार प्रत्येक मौसम में एक सा है या कार्य के मौसम में अधिक आहार चाहिए। पशु चिकित्साविद के सहयोग से एक तालिका बनायें, जिसमें पशु का वजन, लदाई भार के हिसाब से आहार की आवश्यकता निकालें।
चरण 4	**वैकल्पिक संतुलित आहार बनाना :–** प्रत्येक पशु के लिए आहार, आवश्यकता के आधार पर, पोषक तत्व, एवं आहार के मूल्य के आधार पर समूह को मिला जुला आहार जो कि पशु मालिक वहन कर सकता हो, वैकल्पिक पशु आहार की व्यवस्था करनी चाहिए।
चरण 5	**एकल कार्य योजना बनानाः–** समूह से प्रत्येक पशु के लिए मिलाजुला आहार बनाने के लिए पूछें, पशु मालिक वरीयता के आधार पर कुछ माह नया संतुलित आहार बनाकर प्रयोग करें।
चरण 6	**नये आहार का अनुश्रवण करना :–** समूह सदस्यों से नये आहार की सफलता के मानक निर्धारित करने के लिए पूछें जैसे कि पशु की पसलियाँ दिखना कम होना, गर्दन की मोटाई बढना व सुस्त न हो। पशु मालिक से मासिक बैठक में ज्ञात करें कि नये पशु आहार का असर क्या रहा और प्रत्येक पशु की आहार मात्रा निर्धारित करें।

सुगमकर्ता हेतु टिप्पणी :– पशु आहार अभ्यास का विश्लेषण

- यह अभ्यास समय ले सकता है, इसलिए समूह से पूर्व में बातचीत करके समय निर्धारित कर लें। कभी–2 हम इसे दो भाग में विभाजित कर लेते है। ताकि सभी आहार व तत्व व अभ्यास को शामिल कर सकें।
- समूह को सभी पशु आहार याद दिलाने में सहायता करनी चाहिए जो कि वह वर्ष में प्रयोग करते हैं। हम देखते हैं कि शुरू में वह केवल वर्तमान में प्रयोग करने वाले आहार शामिल करते हैं।
- सुनिश्चित करें कि पशु चिकित्सक या आहार विशेषज्ञ संवेदनशील हों, व क्षेत्रीय आहार तत्वों की जानकारी रखता हो जो अधिक खर्चीलें न हो तथा सुगमता से प्राप्त हो सकते हों।

1

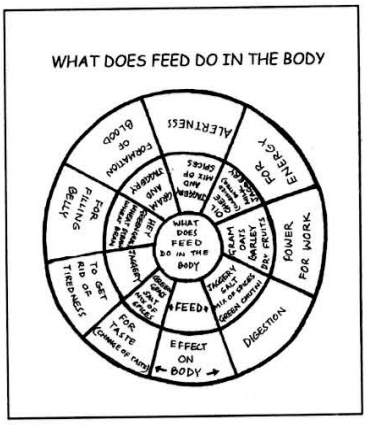

FEED WE ARE GIVING TO OUR ANIMAL

WHAT (FEED)	AMOUNT	TOTAL EXPENSE (RUPEES)
WHEAT STRAN	4 KG	20
CHURRIE (SORGHUM SUDANESE OR MAIZE OR MIX OF BOTH	2 KG	24
WHEAT BRAN	2 KG	22
GREEN GRASS	20 KG	20
MIX OF SPICES		15
TOTAL COST		101

TECHNICAL PRESENTATION BY VET

2

INGREDIENT अवयव	SUPPLY ENERGY		MAINTAIN BODY		FILLING STOMACH	
	HIGH	LOW	HIGH	LOW	HIGH	LOW
WHEAT STRAW भूसा		✓		✓	✓	
PADDY STRAW पैरा		✓		✓	✓	
RICE BRAN कान्यू	✓			✓	✓	
BARLEY जौ	✓		✓			✓
OAT ओई	✓		✓			✓
GRAM चना	✓		✓			✓
MOLASSES बाजरा	✓			✓		✓
CLARIFIED BUTTER घी	✓			✓		✓
MUSTERED OIL तेल	✓			✓		✓
MILK दूध		✓	✓			✓
BREAD रोटी		✓		✓		✓

3

ACTION PLAN

INGREDIENT	AMOUNT	COST IN RUPEES
WHEAT STRAW	3 KG	15
WHEAT BRAN	2 KG	22
GRAM	1 KG	25
JAGGERY	0.5 KG	11
GREEN GRASS	15 KG	15
OIL / SALT	100gm	07
TOTAL	21.600Kg	95

चित्र 27 अ आहार विश्लेषण के चरण

केस स्टडी O :– ग्रामीण प्रतिनिधियों के साथ पशु आहार अभ्यास पर कार्यशाला
स्त्रोत :– कुल बहादुर फगामी (कमल) व नवनीत कुमार, बुलंदशहर उत्तर प्रदेश भारत जनवरी 2009.

14जनवरी 2009, अश्व कल्याण समूहों के 26 प्रतिभागियों ने एक कार्यशाला में जनपद बुलंदशहर में प्रतिभाग किया। आहार विश्लेषण करने के लिए कार्यशाला का आयोजन था। ताकि घोड़े, खच्चर व गधों के लिए सस्ता व संतुलित आहार बनाया जा सके। सत्र का आरम्भ पशु को स्वस्थ व सुखी रहने के लिए क्या सुनिश्चित होना चाहिए से हुआ। समूह सदस्यों ने आहार, पानी, छाया, आवास, व कार्य के बीच आराम की सूची बनाई।

पशु को सबसे अधिक क्या चीज प्रभावित करती है, यह प्रश्न रखा गया।

- दाना व चारा
- आवास
- पानी

फिर उनसे पूछा कि सबसे अधिक खर्चीला क्या है :–

- पानी मुफ्त में उपलब्ध है।
- आवास के लिए एक बार का व्यय है।
- दाना व चारा में रोज का व्यय है, इसलिए यह अधिक खर्चीला है।

चौथा प्रश्न था कि हम अपने पशुओं को क्यों खिलाते है, और खाना क्यों महत्वपूर्ण है। जिसका परिणाम हुआ कि एक सूची बनी कि शरीर में आहार क्या करता है ताकत देता है, शरीर को संतुलित रखता एवं पेट भरता है। प्रतिभागियों को समूह में बाँटा गया और कहा गया जो आहार वह देते हैं उसे उक्त तीन श्रेणियों में रखें। इस चरण में एक पशु चिकित्सक भी उपस्थित थे जिसने कि पोषक आहार पर तकनीकी जानकारी दी।

समूह ने पशु चिकित्सक के प्रस्तुतीकरण से अपनी सूची की तुलना की व कुछ चर्चा की। चिकित्सक की सहायता से प्रतिभागियों ने ठोस आहार एवं चारे की मात्रा का आंकलन पशु के शरीर वजन व विभिन्न कार्य प्रकार एवं मौसम के अनुसार किया। सत्र के अंत में समूह ने आहार के तरीकों के विभिन्न तरीके व नई जानकारी के आधार पर मिश्रित दाने का निर्माण किया। यह मिश्रित दाना पूर्व में दिए जा रहे आहार से सस्ता व संतुलित है। (चित्र टी 27)

FEED भोजनके अवयव INGREDIENTS	उद्देश्य PURPOSE	मात्रा (किग्रा) QUANTITY (KG)	दर (किग्रा) COST (KG) (RUPEES) ₹	TOTAL कुल दाम COST (RUPEES) ₹
GRAM चना	Protein प्रोटीन	0.50	30	15
CHANACHUNI चनाका चोकर	Protein प्रोटीन	0.75	13	10
BARLEY जौ	Energy ऊर्जा	0.50	7	3.5
OAT जेई	Energy ऊर्जा	1.50	20	30
WHEAT BRAN	ऊर्जा + पेट भरना Energy + Bulk	1.00	10	10
CURD दही	Energy ऊर्जा	0.25	20	5
VEGETABLE OIL वनस्पति तेल	Energy ऊर्जा	0.50	60	3
SALT नमक	पाचन + स्वाद Digestion + Taste	0.50	3	1.5
TOTAL कुल		5.50		78

चित्र टी 27 ब : पशु मालिकों द्वारा कार्य कारी पशुओं के
लिए निर्धारित गई संतुलित आहार की मात्रा ब्रुक भारत (जनवरी 2009)

ज्यादातर पशु मालिक काफी उत्साहित थे, परन्तु काफी मालिक अपने पुशओं पर नया अभ्यास करने में अन्य पशु मालिकों को भी शामिल करना चाहते थे। अंत में यह तय हुआ कि सभी पशु मालिक दो सप्ताह तक नया आहार मिश्रण अपने पशुओं को खिलायेंगें। यदि यह सफल हुआ तो वे इसे मीटिंग करके सभी समूह सदस्यों को बतायेगें।

कार्याशाला संयोजक का दो सप्ताह पश्चात् विचार बहुत संवेदनशील था 20 समूहो ने नए आहार को लागू किया व पशु पर बदलाव देखा। बहुत से लोग इस कार्य को देखने गए। अधिकांश समूह नेतओं ने अपने समूह के सदस्यों को नए आहार पर संवेदनशील करके आग्रह किया कि पशु चिकित्सक से सहयोग लेकर अपने पशु को नया संतुलित आहार दें।

टी–28 ग्रामीण पशु स्वास्थय योजना

यह क्या है

ग्रामीण पशु स्वास्थय योजना कई तकनीकी को मिलाकर बनाते है, इस तकनीक से पशु की विशेष स्वास्थ्य समस्या का आंकलन करते है।

उद्देश्य

ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना एक लचकदार प्रक्रिया है जिसमें अनेक तकनीकों का प्रयोग करते हैं जिससे पशु स्वास्थ्य समस्याओं की गहरी समझ बनती है, जिसमें बीमारी के कारण, समस्याएं, लक्षण व बीमारी संबंधी व्यय, पूर्ति दर व बचाव के तरीके सम्मिलित है। यह सामुदायिक कार्य योजना को दर्शाती है। जिससें साधारण बीमारी व घाव कम हो सकें। यदि गांव किसी बीमारी की चपेट में है तो विशेष स्वास्थ्य योजना बनाकर गांव में प्रवेश कर कल्याणकारी क्रिया की जा सकती है।

आप इसे कैसे करेंगे :–

प्रक्रिया बाक्स 10 में तकनीकी दर्शायी गयी है जो कि ग्रामीण स्वास्थ्य योजना बनाने में प्रयोग करते हैं। हम इन तरीकों को क्रम से प्रयोग करते हैं। क्योंकि इसे किसी भी क्रम में स्वयं के निर्णयानुसार लागू कर सकते हैं व समुदाय की आवश्यकता देख सकते हैं। आप देखेगें कि किस तकनीक को कैसे हम पशु कल्याण में प्रयोग करें। यह केवल ग्रामीण स्वास्थ्य योजना तकनीक के फायदे का परिचय है।

प्रक्रिया बाक्स 10 ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना बनाने की तकनीक

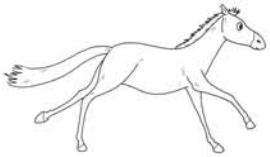

टी–7 ऐतिहासिक समय रेखा (टी–7)

ऐतिहासिक घटनाऐं देखते हैं जोकि पशुओं की बीमारी से सम्बन्धित हों या पशु स्वास्थ्य को प्रभावित करती हों।

बदलाव प्रकृति विश्लेषण

पशु सं0, आहार देना, कार्य की प्रकृति बीमारी की पुनरावृत्ति, मृत्यु दर, इलाज अभ्यास, पशु स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, इलाज की दर, बुग्गी की बनावट आदि में बदलाव का अभ्यास।

पशु बीमारी मापना (टी 1)

घरों को चिन्हित करना, प्रत्येक घर में कार्य करने वाले पशुओं की गणना, वर्तमान स्वास्थ्य दशा, बीमारियों का पिछला इतिहास, (उदाहरणार्थ पिछले दो वर्ष) पशु चिकित्सा व्यवस्था व दवा दुकान को मापना।

पशु कल्याण ट्रांजिट वाक (टी 22)

समूह बीमारी व स्वास्थ्य समस्याओं तथा उनके कारण तथा सम्भावित संक्रमण या फैलने के श्रोत पर चर्चा करेगे। प्रतिभागी प्रत्येक पशु को भ्रमण करके बीमारी के लक्षण पहचानेगी, व वातावरण में इसके कारण का पता लगायेगी। तथा उस पर त्वरित व दूरगामी कार्य योजना बनाने की आवश्यकता पर चर्चा होगी।

मौसमी विश्लेषण (टी 6)

विशेष मौसम में बीमारी की सम्भावना या महीनेवार बीमारी का विश्लेषण।

मैट्रिक्स रैंकिंग (टी 9)

बीमारी या चोट को वरीयता में रखकर इसकी प्रवृत्ति का अध्ययन।

मैट्रिक्स स्कोरिंग (टी 9)

पशुओं की बीमारी या चोट के लक्षण, कारण पशुओं में प्रभाव, मृत्यु दर, ठीक होना, कार्य क्षमता में कमी या खर्च बढ़ने को स्कोर करना।

समस्या वृक्ष (टी 25) या पशु कल्याण कारण एवं प्रभाव का विश्लेषण

बीमारी के या स्वास्थ्य समस्याओं के कारण–प्रभाव को मैट्रिकस रैंकिंग या मैट्रिक स्कोरिंग पर विश्लेषण।

वर्तमान पशु इलाज अभ्यास का विश्लेषण –

जब हमारा पशु बीमार पड़ता है तो हम क्या करते हैं। नीचे दिए गए तालिका का प्रयोग करें (या प्रतिभागियों के द्वारा अलग बनाए) यह चर्चा करें किसने किस बीमारी का इलाज किया, वापसी का समय, बीमारी सम्बन्धी व्यय, केस की सं0 व सफल इलाज की दर।

बीमारी	किसने इलाज किया	ठीक होने में कितने दिन लगे	कुल व्यय	पिछले 15 दिनो में कितने इलाज किए	सफलता दर
ट्रिपनोसिमियोसिस					
टिटनस					
लंगड़ापन					
घाव					
पेट दर्द					

चित्र टी 28 : ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना : वर्तमान पशु इलाज अभ्यास की मैट्रिक्स

केस स्टडी – P ग्रामीण पशु स्वास्थ्य योजना

स्त्रोत : मुराद अली, बुक इण्डिया, जयसिंह पुर, मेरठ, इण्डिया, सितम्बर 2009

मेरठ जिले का एक पशु कल्याण सुविधादाता मुकेश कुमार ने सितम्बर 2008 में ग्राम खण्डावली का भ्रमण किया। एक पशु मालिक ने एक पशु के बीमार होने की शिकायत की। उसने अन्य पशु मालिकों से सलाह ली, परन्तु उन्होंने अनभिज्ञता प्रकट की कि पशु किस बीमारी से ग्रस्त है। मुकेश ने पशु चिकित्सक को बुलाया तो (इक्वायन इन्फ्लूएंजा) सांस की बीमारी बताया। सभी पशु मालिकों ने एहसास किया कि इस बीमारी से अन्य पशु भी प्रभावित हो सकते हैं, तो उन्होंने बीमारी पर चर्चा करने के लिए सबको इकट्ठा किया।

बैठक में पशु मालिकों ने एक नक्शा बनाया जिस पर निशान लगाकर दर्शाया कि पहला पशु इन्फ्लूएंजा से कब पीड़ित हुआ व बीमारी का फैलाव कैसे हुआ। जैसे कि सब्जी बाजार में सीधे सम्बन्ध में आने पर, सामुदायिक चर पर पानी पीने से, ग्रसित पशुओं के साथ चरने पर। पशु मालिकों ने पशु बीमारी की तीक्ष्णता के आधार पर बीमारी के लक्षणों का मैट्रिक्स स्कोरिंग किया। जैसे कि पशु उदास है, बुखार है, नाक से श्राव आ रहा है।

गांव में कुछ पशु थे जिनमें इन्फ्लूएंजा के लक्षण नहीं दिखायी दे रहे थे। चर्चा में पता चला कि जिस पशु पर बीमारी के लक्षण नहीं थे, वह अन्य पशुओं से अलग कार्य करते व चराई करते थे। पशुओं को बचाव के लिए एक सूची बनायी गई जिसमें प्रत्येक पशु मालिक को अपनी बाल्टी, अस्तबल की सफाई व बीमार पशु को अन्य पशुओं से चराई के समय अलग रखने का सुझाव दिया गया। कई मालिकों ने प्रत्येक दूसरे दिन बचाव के कार्य की निगरानी करने को तय किया। सभी पशु मालिकों ने सप्ताह में एक बार इन्फ्लूएंजा के लक्षण पहचानने के लिए समिति बनाई।

बाद मे दोबारा खण्डावली गांव में जाने पर, पशु मालिकों ने मुकेश से कहा कि यह बीमारी वास्तव में संक्रमण वाली बीमारी है और पशु मालिकों को बचाव के लिए उनके साथ कार्य करने, बीमारी का इलाज में सुधार करने को साथ देने को कहा, ताकि पैसा बचे। दिन में सभी पशु मालिक भट्टे पर व्यस्त रहते हैं इसलिए मुकेश ने रात में मिलने को तय किया। पहली बैठक बीमारी सम्बन्धी ऐतिहासिक समय रेखा से शुरू हुई, पॉच वर्ष का बीमारी का इतिहास देखा गया। बीमारी को बार–बार आने के लिए स्कोर किया गया (पशु से जो पॉच वर्ष में मरे) और बारम्बारता (पॉच वर्ष में यह बीमारी कितनी बार हुई) प्राथमिकता के आधार पर छह बीमारी की सूची बनी–सर्रा, टिटनस, लंगड़ापन, घाव, सांस की बीमारी व पेट दर्द।

समूह सदस्यों ने बीमारी के लक्षण, बचाव व कारण पर चर्चा की और महसूस किया कि प्रबन्धन के अच्छे तरीकों से बीमारी का बचाव कर सकते हैं। उन्होंने गांव के डाक्टर को बुलाया और अपनी इलाज की तकनीकों को व बचाव के उपायों को उनके सामने रखा व गौताना, मेडिकल स्टोर व सरकारी अस्पताल पर बातचीत की। चर्चा को गहराई से देखा गया तो आया कि कौन क्या करता है, सुधार का समय, व्यय राशि व इलाज से सफलता की दर क्या है।

विस्तृत स्थिति आंकलन के आधार पर सामुदायिक कार्य योजना बनी जिसमें तीन तरह के कार्य, लघु कालीन, मध्यम कालीन एवं दीर्घ कालीन (चित्र 28 स) की कार्ययोजना बनी। इसका इस्तेमाल उन्होंने घाव से बचाव, पेट दर्द बीमारी की शीघ्र पहचान, टीकाकरण व इलाज की व्यवस्था के लिए किया।

	बीमारी	कार्यवाही	अनुश्रवण
लघु कालीन मुद्दा	घाव, लंगड़ापन, पेटदर्द, इन्फ्लूएंजा	लगातार पशु भ्रमण कल्याण एवं बीमारी की पहचान के मानक	पशु भ्रमण रिकार्डिग चार्ट का विश्लेषण प्रत्येक मासिक बैठक में • इलाज का दस्तावेजीकरण व महीने मे विश्लेषण। • तुरन्त कार्य योजना बनाना व मासिक बैठक में समीक्षा।
मध्यम कालीन मुद्दा	टेटनस, रैवीस व ट्रिपेनो सियोसिस से बचाव	सामुदायिक टीकाकरण वैक्सीन योजना – सामुदायिक सफाई जैसे कि मक्खी से बचाव व चूने का छिड़काव।	टीकाकरण रिकार्ड प्रत्येक तीन महीने में समूह मीटिंग मे देखें – पशु भ्रमण के कार्य देखे।
दीर्घ कालीन मुद्दा	गौताना द्वारा दागना, लोकल डा0 द्वारा इलाज का ज्यादा पैसा लेना। सरकारी चिकित्सक की व्यवस्था	गौताना का सशक्तीकरण, लोकल डा0 से उचित पैसा लेने के लिए संवेदनशीलता पैदा करना।	पशु भ्रमण से दागने के केस का अवलोकन करेंगे।

सन्दर्भ एवं अन्य आवश्यक पाठ्य

सन्दर्भों एवं आगे की पढाई की यह सूची सामुदायिक सहभागी प्रक्रियाओं, समुदाय तक पहुंचने के तरीके, पशु कल्याण एवं कार्यकारी पशुओं से सम्बंधित सामग्री भी अपने आप में समेटे हुए है।

प्रस्तावना

- *लाइवस्टोक इमर्जेन्सी माइडलाइन एवं स्टैण्डर्ड (एल0ई0जी0एस0) (2009) प्रक्टिकल एक्शन प्रकाशन, रगबी, यू0के0 www. livestock_emergency.net/downloads. html (online)*

पृष्ठभूमि

- *मैन, डी0सी0वजे, केन्ट, जे0पी0 वेमेलस्फेलदर, एफ, आफनर, इ0 एवं टायटेन्स, एफ0ए0एम0 (2003) "एप्लीकेशन्स ऑफ फार्म वेलफेयर एसेसमेन्ट", एनीमल वेलफेयर 12, 523–528*

अध्याय–2

- *फाइव फ्रीडम (1979) फार्म एनीमल वेलफेयर काउसिल, यू0के0 www. fawe.org.uk/freedoms.html (online)*
- *फ्रेजर, डी0, वीरी, डी0एम0, पेजर, ई0ए0, एवं मिलिगन, बी0एन0 (1997) "ए0 साईंटिफिक कन्सेप्शन ऑफ एनीमल वेलफेयर देट रिफलेक्ट्स इघीकल कन्सर्न, एनीमल वेलफेयर, 6, 187–205*
- *वेब्सटर, ए0जे0एफ0, मैन, डी0सी0जे0, एवं हे, एच0आर0 (2004) वेलफेयर एसेसमेन्ट: इन्डीसेज फ्रोम क्लिनिकल आबसरवेशन", एनीमल वेलफेयर 13, 93–98*

अध्याय–3

- कैटली, ए0 ब्लैकवे, एस0, एवं लीलेण्ड, टी0 (2002) "कम्युनिटी–बेस्ड एनीमल हेल्थकेयर: ए–प्रक्टिकल गाइड टू इम्प्रूविंग प्राइमरी वेटेरिनरी सर्विसेज, बुक पावर/आइ0टी0डी0जी प्रकाशन, रगबी, यू0के0
- कुमार, एस0 (2002) मेंथड्स ऑफ कम्युनिटी पार्टिसिपेशन: ए कम्लीट गाइड फोर प्रक्टिशनर इन्टरमीडिएट टेक्नोलॉजी पब्लिकेशन्स लि0 रगबी, यू0के0
- प्रेटी, जे0एन0 (1975) रिजेनेरेटिंग एग्रीकल्चर, पालिसीज एण्ड प्राकिटसेज फोर सस्टेनेबिलिटी एण्ड सेल्फ रिलायन्स, एक्शन एड, बंगलोर, इण्डिया
- प्रिचर्ड, जे0सी0, लिण्डवर्ग, ए0सी0 , मैन, डी0सी0जे0 एवं हे, एच0आर0 (2005) "एसेसमेन्ट आफ द वेलफेयर आफ वर्किंग हार्सेज, म्यूल्स एण्ड डंकीज, यूजिंग हेल्थ एण्ड विहेवियर पारामीटर्स प्रिवेन्टिव वेटेरीनरी मेडिसिन 69, 265–283
- वैन डिज्क, एल0 एवं प्रिचर्ड, जे0सी0 (2010) डिजरमिनेटस ऑफ वर्किंग एनीमल वेलफेयर एडपटेड फ्रोम डाहलग्रेन जी, एवं हाइटहेड, एम0 (1991) "पॉलिसीज एण्डं स्ट्रेटेजीज टू प्रोमोट सोशल इक्वीटी इन हेल्थ' इन्स्टीटयूट ऑफ फ्यूचर स्टडीज, स्टाकहोम, स्वीडेन

अध्याय–4

- भाटिया ए0 सेन सी0के0 पाण्डेय, जी0, एवं आत्मजीस, जे0 (इड्स) (1998) कैपेसिटी–बिल्डिंग इन पार्टिसिपेटरी अपलेण्ड वाटरसेड प्लानिंग, मानिटरिंग एण्ड इवेलुएशन, ए रिसोर्स किट, आई सी आई एम ओ डी, काठमाण्डु, नेपाल पी0पी0 55–59 http://books.icimod.org/index.php/search/subject/14145 [online]
- केपलिंग–अलाकिजा, एस0, लोप्स, सी0, बेनवाउली, ए0 एवं डियालो, डी0 (1997) ए0 प्राक्टिकल इवोल्युशन हैण्डबुक–हू आर द क्वेसचन मेकर्स? ओ ई एस पी हैण्ड बुक सीरीज, आफिस आफ इवेलुएशन एवं स्ट्रेजिक प्लानिंग, यूनाइटेड नेशन्स, डेवलेपमेन्ट प्रोग्राम, न्यू यार्क, यू0एस0ए0

- डेवीज आर0 एवं डार्ट, जे0 (2005) द मोस्ट सिगनीफिकेन्ट चेन्ज टेकनीक ए गाइड टू यूज www. mande.co.uk/docs/msc guide.htm (online)
- सोसायटी ऑफ फ्रेन्डस पीस कमिटी (दिनांकित नहीं) द टू क्युल्स, ए फेबल फोर द नेशन्सः को ऑपरेशन इंजवेअर देन कन्फिलक्ट, वासिंगटन, यू0एस0ए0.
- इलिओट,सी0 (1999) लोकेटिंग द इनर्जी फोर चेन्जा, एन इन्ट्रोडक्शन टू अप्रिसिएटिव इन्क्वायरी, आई0आई0एस0डी0 www. lisd.008//publications/pub.aspex pid=287. html (online)

अध्याय–5

- बर्क (1999) कम्युनिकेशन एण्ड डेवलपमेन्टः ए प्रक्टिकल गाइड, सोशल डेवेलमेन्ट, लन्दन, यू0के0 www. documents/publications/c-d.pdf. (online)

विकास के लिए नौटंकी (थियेटर)

- टियरफण्ड (2004) कम्यूनिटी ड्रामा–थियेटर फार डेवेलमेन्ट, फुट स्टेप्स नं0 58 http://tilz.tearfund.org/publications/footstaps+58 [online]
- द रॉयल ट्रापिकल इन्स्टीटयूट लिस्टस ए नम्बर ऑफ रिफेरेन्सेज आन थियेटर एण्ड डेवलमेन्ट http//insightshare.org/resources/pr_handbook (online)
- टफ्ते टी0, एण्ड मेफालोपुलस, पी0 (2009) पार्टिसिपेटरी कम्युनिकेशनः ए प्रक्टिकल गाइड, वर्ल्ड बैंक पेपर 170 http:// orecommon. net/wp ontent/uploads/2009/10 paricipatory-communicatitons pdf.(online)

सहभागी चलचित्र

- लंच, एन एण्ड लंच, सी0 (2006) इनसाइट्स एन टू पार्टिसियेटरी विडियोः ए हैण्डबुक फोर द फिल्ड, इनसाइट, आक्सफोर्ड, यू0के0 http://insightshare.org/resources/pv-handbook[online]

कम्युनिटी रेडियो

- बर्कर के (2008) कम्युनिटी रेडियो स्टार्ट–अप इन्फोर्मोशन गाइड, फार्म रेडियो इन्टरनेशनल www. farmradio.org/english/partners/resources/community-ratio.start-up-guide-e.pdf. [online]
- ऑचेन्ग, एफ, एण्ड कौमलूथो, पी0 (2006) एक्सटेंशन एप्रोचेज एण्ड रेडियो मैसेजिंग फोर इम्प्रूविंग द वेलफेयर ऑफ वर्किंग इक्वाइन्सः ए मेन्युल फोर इम्पलीमेन्टंग ए रेडियो प्रोग्राम टू इम्प्रूव इक्वाइन वेलफेयर, www.kendat.org/eLibrary/link.php? id=46[online]
- तबिंग एल0 (2002) हाऊ टू डू कम्यूनिटी रेडियो यूनेस्को (UNESCO) एशिया–पेसीफिक ब्यूरो फोर कम्युनिकेशन एण्ड इन्फोरमेशन, नई दिल्ली, इण्डिया http://unesdoc. unesco.org/images/0013/0013421/134208e.pdf. [online]

टूलकिट

- जयकरण, आर (2007) होलिस्टिक वर्ल्डवाइड व्यू एनालिसिसः अण्टरस्टैण्डिंग कम्युनिटीज, रियलिटीज, पी0एल0ए0 नोट्स, नं0 56, इन्टरनेशनल इन्स्टीटयूट फोर इन्वायरमेन्ट एण्ड डेवलपमेन्ट लन्दन, यू0के0
- कुमार, एस0 (2002) मेथड्स फोर कम्युनिटी पार्टिसिपेशनः ए कम्पलीट गाइड फोर प्रक्टिशनर्स, इन्टरमीडिएट टेक्नोलॉजी पब्लिकेशनस लि0, रंगबी, यू0के0
- रेटबर्गन–मैक क्रेकेन जे0 एण्ड नारायण पार्कर, डी0 (1996) पार्टिसपेशन एण्ड सोशल एसेसमेन्टः टूल्स एण्ड तकनीक्स वर्ल्ड बैंक रिसोर्स बुक pp.316-320
- थॉमस लेटर, बी0 पोल्सटीको, आर0ली0 इसार, ए0., टेलर, ओ0एण्ड मुचुओ, ई0 (1995) ए मेन्युल फोर सोशीओ–इकोनोमिक जेनडर एनालिसिसः रिस्पोप्डिंग टू द डेवलपमेन्ट चैलेन्जेज, क्लार्क यूनिवर्सिटी मासाचुसेट्स, यू0एस0ए

विश्व के सबसे गरीब भाग में कार्य कर रहे गधे, घोड़े एवं खच्चरों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए यूनाइटेड किंगडम स्थित ''ब्रुक'' पशु कल्याण चेरिटी को समर्पित एक अग्रणी संस्था है। पूरे संसार में लाखों कार्यकारी अश्व प्रजाति ऐसे हैं जो गरीब परिवारों के आजीविका का मुख्य स्त्रोत हैं एवं ये परिवार पूरी तरह से अपने जीवन यापन के लिए इन पशुओं पर ही निर्भर है।

पूरे विश्व में ब्रुक अपने सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर गतिशील पशु चिकित्सा सेवा टीम एवं सामुदायिक पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता जो कार्यकारी पशुओं का इलाज करते हैं एवं उनके मालिकों को सलाह देते हैं को मदद करती है। हमारे सामुदायिक कार्यकर्ता एवं विशेषज्ञ स्थायी तरीके से पशु मालिकों, स्थानीय चिकित्सकों, नालबंदों, साज बनाने वालों, चारा बेचने वालों, बुग्गी बनाने वालों आदि के क्षमता एवं कौशल में वृद्धि कर उन्हें उनके पशुओं की आवश्यकताओं की देखभाल के लिए तैयार करते हैं। वर्तमान में हम एशिया अफ्रीका, सैन्ट्रल अमेरिका एवं मध्य पूर्व के 10 देशों में काम कर रहे हैं। हमारे पास 800 से अधिक ऐसे कार्यकर्ता हैं जो सीधे क्षेत्र में काम कर रहे हैं।

सन् 2009 में हमने 730000 कार्यकारी घोड़े एवं गधों पर काम किया है जो 37 लाख गरीब परिवारों का भरण–पोषण कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य 20 लाख पशुओं का प्रतिवर्ष कल्याण में बढ़ोत्तरी करना है। यह सिलसिला 2016 तक चलेगा।

ब्रुक के बारे में और अधिक जानकारी के लिए हमारे वेबसाइट www.thebrooke.org को अवश्य देखें।

बोझ की साझेदारी

कार्यकारी पशुओं के कल्याण को सामूहिक गतिविधियों से बढ़ावा देने के लिए एक मार्गदर्शिका

कार्यकारी पशुओं के कल्याण को बढ़ावा देना सिर्फ पशुओं के लिए महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उनके मालिकों के आजीविका के लिए भी अति महत्वपूर्ण है "बोझ की साझेदारी" पशु रखने वाले समुदाय में सामूहिक गतिविधियों को उत्प्रेरित कर बोझा ढोने वाले पशुओं के स्वास्थ्य एवं पशु प्रबंधन को विकसित एवं सुनिश्चित करती है, इस प्रकिया में सामुदायिक सहजीकरण के तरीके एवं सामूहिक गतिविधियों को अश्व कल्याण हेतु आधार बनाया गया है।

सन् 2005 से ब्रुक कार्यकारी पशुओं के कल्याण में सतत् वृद्धि हेतु पशु कल्याण विज्ञान एवं अन्तर्राष्ट्रीय विकास क्षेत्र में हो रहे सबसे अच्छे अभ्यासों को समग्रित रूप से प्रयोग करते हुए पशु कल्याण हेतु पशु मालिकों एवं उनके परिवार व समाज को जिम्मेदार बना रहा है।

बोझ की साझेदारी पिछले चार साल के अपने परिणामों जिसमें इन प्रकियाओं के विकास एवं क्षेत्र आधारित सहभागी टूल्स / तकनीकों की रूपरेखा जो कि खासतौर पर पशु कल्याण हेतु विकसित किए गए हैं के साथ–साथ जीवन्त चित्रांकण, टैक्स्ट बॉक्सेज आदि को विकास के सिद्धान्त एवं पशु विज्ञान को समायोजित करते हुए सरल भाषा में प्रस्तुत करती है। इस मार्ग दर्शिका में आए टूल्स एवं तकनीकों को गधे, घोड़े एवं खच्चरों के मालिकों के साथ विकसित एवं परीक्षित किया गया है एवं ये टूल्स / तकनीक विकासशील देशों के पशु समुदाय द्वारा प्रतिदिन के जिन्दगी में प्रयोग में लाया जाता है। ये टूल्स / तकनीक बोझा ढोने वाले बैल, ऊंट एवं अन्य पशुओं के लिए भी समान रूप से उपयोगी है।

'बोझ की साझेदारी' ऐसे किसी भी व्यक्ति द्वारा पढ़ा या प्रयोग में लाया जा सकता है जिनका सीधा सम्बंध कार्यकारी पशुओं एवं उनके मालिकों से है। इन वर्ग में पशु चिकित्सक, सामुदायिक पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सरकारी प्रसार अधिकारी, ग्रामीण विकास सम्बंधी एन0जी0ओ0 के कार्यकर्ता आदि आते हैं।

लीसा वैन डिञ्क पूर्व में ब्रुक के सामुदायिक कार्यक्रमों की मुखिया थी। वह पशु स्वास्थ्य एवं सामुदायिक विकास विशेषज्ञा है जिन्हें विकाशील देशों में भोजन–रक्षण (Food security), पशु पालन एवं सतत् आजीविका कार्यक्रमों का एक लम्बा अनुभव है।

डा0 जॉय पिचर्ड ब्रुक में वरिष्ठ पशु कल्याण एवं अनुसंधान सलाहकार हैं। ये एक अनुभवी पशु सत्यक्रिया विशेषज्ञा के साथ साथ अर्न्तराष्ट्रीय परिपेक्ष में पशु स्वास्थ्य, पशुओं के कल्याण एवं उत्पादकता विषय की जानी–मानी विशेषज्ञा हैं।

एस0के0 प्रधान ब्रुक इण्डिया में समुदाय विकास प्रबन्धक हैं। श्री प्रधान पशु विज्ञान एवं कृषि विज्ञान के वैज्ञानिक हैं जिन्हें ग्रामीण क्षेत्र में सहभागी विकास के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त है। उन्होंने ब्रुक मिस्त्र, ब्रुक पाकिस्तान, ब्रुक इथीओपिया एवं ब्रुक केन्या के लए कार्य किया है।

किमबरली वेल्स ब्रुक में अश्व प्रजातियों के व्यवहार एवं कल्याण सलाहकार हैं। यहां वो ब्रुक के सभी देशों में प्रशिक्षण एवं तकनीकी मदद देने का काम करती है जिससे ब्रुक कार्यक्रमों को बल मिलता है।

"प्रायोगिक एवं आसानी से समझ में आने वाले मार्गदर्शिका में लेखकों ने पशु कल्याण के विकसित समझ एवं समुदाय आधारित सहभागी पद्धतियों को सुन्दरता से पिरोया है।"

डेविड डैड्रिल, वेटेनरी सलाहकार, वेटवर्क, यूनाइटेड किंगडम के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के सदस्य

अपने तरह का यह एक अभूतपूर्व कार्य है, जो एशिया, अफ्रीका एवं लेटिन अमेरिका के करोड़ों गरीब लोगों, जो अपने आमदनी के लिए पूर्णतः या अंशतः कार्यकारी पशुओं पर निर्भर करते हैं के आजीविका एवं सुख समृद्धि को सीधे तौर पर बढ़ाने में काफी योगदान देगा। सहभागी टूलों में दृश्य अवयवों का अधिकाधिक प्रयोग, स्थानीय परिस्थितियों को बेहतर रूप से समझने में मदद के साथ–साथ इस मार्गदर्शिका को प्रयोग हेतु दोस्ताना, उचित एवं आकर्षक बनाता है।

डा0 कमलकर, चयेयरमेन, सी0एल0टी0एस0 फाउन्डेशन, कलकत्ता, भारत

"बोझ की साझेदारी" पशु कल्याण में संलग्न व्यक्तियों ही नहीं बल्कि अन्य सामाजिक विकास कार्यक्रम में संलग्न व्यक्तियों के लिए भी आवश्यक रूप से पढ़ने एवं प्रयोग करने योग्य है।

मि0 टॉम थामस, मुख्य कार्यकारी , प्राक्सिस, इन्स्टीटयूट फोर पारटिसिपेटरी प्रक्टिसेज, इण्डिया

ISBN 978-185339-719-6